is expected to return this morning and will be submitting its report shortly.

In the letter received from the Chief Miniser of Uttar Pradesh this morning, he has once again assured that all necessary will be taken by the State Government for the protection of the structure. He has also indicated several further steps being taken by the State Government for the protection of the structure in porsuance of my discussion with him a couple of days ago. These include increasing the number and coverage of CC TV cameras, strengthening of the barricading in front of the entrance to the Ram Janma Bhoomi and making it permanent, deployment of police on the roofs of nearby houses, and presence of senior police officers on the site.

As I mentioned earlier, we had made an offer to the Government of Uttar Pradesh of 5 additional coys of Central para-military forces for being deployed at Ayodhya. The Chief Minister of Uttar Pradesh has, however, indicated in his letter that recently the force in Ayodhya has been augmented by development tf 3 coys of U.P. PAC and 175 police personnel. In the light of this, the State Government does not find it necessary to accept any additional para-military forces for purposes of deployment in Ayodhya.

In view of the pending proceeding on the Supreme Court, I have tried to use all persuasive reasoning with the Chief Minister of Uttar Pradesh to have the construction at RJR-RM complex suspended pending final decision on these petitions. The Government will pursue these accept any additional para-military forces on the situation.

SHORT DURATION DISCUSSION ON THE STATEMENT REG. DEVELOPMENTS AT AYODHYA

उपसभापति : सुन्दर सिंह भंडारी जी ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी (राजस्थान) : उपसभापति महोदया गृह मंत्री महोदय ने. . .

उपसभापति : आपकी पार्टी का समय 19मिनट है । 19मिनट में आप एक बोलें या दो बोलें यह आपकी मर्जी है ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : उपसभापति महोदया, गृह मंत्री महोदय ने फैज़ाबाद और अयोध्या में जो परिस्थितियां हैं राम जन्म भूमि स्थान पर मन्दिर निर्माण के प्रश्न को ले कर, जहां वे स्वयं गये थे वहां जो कुछ हो रहा है उसको देख कर आए हैं, उसके बारे में एक वक्तव्य दिया है, मैं समझता हूं कि अगर इस वक्तव्य में स्पष्ट रूप से सदन का भी उल्लेख किया होता कि जो ढांचा है वह सुरक्षित है उसे किसी प्रकार का नुक्सान नहीं हुआ और जो निर्माण का काम चल रहा है, जिसका चित्र अखबारों में छपा है उससे ऐसा साफ लगता है कि ढांचा एक तरफ खड़ा है और निर्माणकर्ता एक प्रकार से ढांचे की तरफ पीठ किए हुए दूसरी तरफ कार सेवा का काम कर रहे हैं, अर्थात् न तो निर्माण कार्य उस ढांचे की दिशा में हो रहा है न उधर की तरफ बढ़ने का कोई अंदेशा है ।

कल लखनऊ में हाईकोर्ट ने इस बात का भी निर्णय दिया है कि जो कुछ खुदाई हुई है जिसके बारे में यह आशंका व्यक्त की गयी थी कि इस खुदाई से वह ढांचा कमजोर पड़ जाएगा, उस संबंध में न्यायालय का यह स्पष्ट मत रहा है कि उससे उस ढांचे को कोई खतरा नहीं है और इसलिए उन्होंने इस काम में जो अभी वहां चल रहा है उसमें किसी प्रकार की रोक लगाना वाजिब नहीं समझा । मैं यह स्वीकार करता हूं कि सुप्रीम कोर्ट में भी इस संबंध में मुकदमा दायर है और एक दिन के बाद उस पर सुनवाई होने वाली है । उत्तर प्रदेश सरकार का यह दावा है कि उन्होंने न्यायालय के आदेशों का उल्लंघन नहीं किया है । अब यह तय करना कि उल्लंघन हुआ है या नहीं, मेरा इस सदन को नम्र निवेदन है कि यह राजनैतिक मुद्दा नहीं है, यह कानूनी मुद्दा है और अगर अदालत को इस बात का फैसला लेना है कि जो कुछ वहां कर रहे हैं उससे न्यायालय के आदेशों का उल्लंघन नहीं हुआ तो मैं इस माननीय सदन को यह निवेदन करना चाहूंगा कि फिर हमें उस दायरे में न्यायालय की राय को मान्य करना चाहिए और अपना विवाद उस संबंध है जो भी खड़ा करना चाहते है उसके लिए फिर गुंजाइश पैदा नहीं होती. . .

(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : आप मानेंगे उस राय को. . . (व्यवधान)

श्री सुन्दर सिंह भंडारी अभी धैर्य रखिए उतावला होने की जरूरत नहीं है।

(व्यवधान)

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN (Tamilnadu): Madam, what is the clarification being sought by the hon. Member? (*Interruptions*)

विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त) : सदर साहिबा, यह तय नहीं हुआ था कि इस किस्म का सिलसिला होगा। [ ] खामोशी से बात सुनें।

[ ] نیتا وردھی دل شری سکندر بخت: صدر صاحبہ۔ یہ طے نہیں ہوا تھا کہ اس قسم کا سلسلہ ہوگا۔ خاموشی سے بات سنیئے۔

उपसभापति : मैं वही कह रही हूं। आपकी ही बात कहने से पहले आप मुझ पर नाराज हो रहे हैं Mr. Ramchandran, we had decided that it is going to be in the form of a short duration discussion and not clarifications. और दूसरी बात यह है कि पार्टी का अपना टाईम नियुक्त है। आपको समय मिलेगा। आप अपने समय पर जरूर बोलिए और उनकी बात शांति के साथ सुनिए। जब आप बोलेंगे तो मैं उनसे भी यह आग्रह करूंगी कि वे शांति से सुनें।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : यह समय मेरे में न गिना जाए। मैं आपसे न्याय की अपेक्षा करता हूं।

उपसभापति : नहीं गिना जाएगा। आप फिक्र मत कीजिए।

श्री शांति त्यागी (उत्तर प्रदेश): आपने आडवाणी जी का वक्तव्य पढ़ लिया है. . . (व्यवधान)

[ ] Transliteration in Arabic Script.

उपसभापति : आप बोल लीजिएगा जवाब दे दीजिएगा।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : इतना पढ़ना होता तो यहां क्यों आता. . . (व्यवधान) : इस पढ़ाई के लिए आप ज्यादा जोर मत लगाइये। न मैं आपको पढ़ाने वाला हूं न आप मुझे पढ़ा सकते हैं। यह खातिर जमा रखिए। यह पढ़ाने की जगह नहीं अपनी बात कहने की जगह है।

उपसभापति : शांति के साथ सुन्दर सिंह भंडारी जी की बात को सुनें।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : मैडम, हमारे सदन की यह मर्यादा रही है कि जब कोई नया मेम्बर मेडन स्पीच देता है तो हम कभी उस पर रोक टोक नहीं करते। कम से कम इस हवाले से मैं कहता हूं कि उन पर रोक टोक न की जाए, पूरी तरह सुना जाए।

شری محمد افضل عرف م۔ افضل اتر پردیش میڈم ہمارے سدن کی یہ مریادا رہی ہے کہ جب کوئی نیا ممبر میڈن اسپیچ دیتا ہے تو ہم کبھی اس پر روک ٹوک نہیں کرتے کم سے کم اس حوالے سے میں کہتا ہوں کہ ان پر روک ٹوک نہ کی جائے۔ پوری طرح سنا جائے۔

श्री सिकन्दर बख्त : ये दिक्कत पैदा कर रहे हैं। अजीब तमाशा है. . . (व्यवधान) लीडर साहब, आप अपने वक्त पर वापस नहीं जा सकेंगे। रोकिए उन्हें। खड़े हैं। (व्यवधान)

شری سکندر بخت: یہ دقت پیدا کر رہے ہیں عجیب تماشہ ہے۔۔۔۔ مداخلت۔ لیڈر صاحب آپ اپنے وقت پر واپس نہیں جا سکیں گے۔ روکئے انہیں کھڑے ہیں۔

मौलाना आबदुल्ला खान आजमी : (उत्तर प्रदेश) : मैडम, आप यह तय करा दीजिए कि कोई किसी को नहीं टोकेगा जब कि... **(व्यवधान)**

مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: میڈم آپ یہ طے کرا دیجئے کہ کوئی کسی کو نہیں ٹوکے گا جبکہ..."مداخلت"...

श्री शांति त्यागी : महोदय, मैं यह... **(व्यवधान)**

उपसभापति : शांति त्यागी जी, अभी नहीं।... **(व्यवधान)**

एक माननीय सदस्य : अजब तमाशा है। ... **(व्यवधान)**

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : उपसभापति जी,... **(व्यवधान)**

उपसभापति : एक सैकंड। मैं दुबारा अपने मेम्बरों से आग्रह करूंगी कि यह मसला बहुत गंभीर है। कल हाउस में हम लोगों ने क्वश्चन आवर नहीं किया, एजेंडा किया। इससे पहले भी... **(व्यवधान)**

एक माननीय सबस्य : वह अभी भी खड़े हुए है।

उपसभापति : खड़े है तो वह भी जरा बैठ जाए। आपका नाम ही शांति है।

एक माननीय सदस्य : त्यागी है।

उपसभापति : मैं यह आग्रह करूंगी कि इस मसले की गंभीरता को सामने रखते हुए अगर एक दूसरे की बात सुनें, तो हो सकता है कि कुछ बात समझ में भी आए, कोई हल भी निकले। कृपया इनकी बात भी सुनिये, और आप सबों से आग्रह है कि सब एक-दूसरे की बात ध्यान से सुनें।

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहिबा, उसके अलावा मैं यह भी अर्ज करूंगा कि... **(व्यवधान)**

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ، اس کے علاوہ میں یہ بھی عرض کروں گا کہ... مداخلت

उपसभापति : आपसे भी यह अर्ज है कि... **(व्यवधान)**

श्री सिकन्दर बख्त : मेरी गुजारिश आप सुन लें। उसके अलावा भी मैं यह अर्ज करूंगा कि होम मिनिस्टर साहब को एक पर्टिकुलर समय के बाद इस हाउस से चले जाना है और इस डिसकशन को अगर उस समय के अंदर खत्म होना है, तो उसको रेगुलेटिड रखना पड़ेगा।

شری سکندر بخت: میری گزارش آپ سن لیں۔ اس کے علاوہ بھی میں یہ عرض کروں گا کہ ہوم منسٹر صاحب کو ایک بجے کے بعد اس ہاؤس سے چلے جانا ہے اور اس ڈسکشن کو اگر اس سمے کے اندر ختم ہونا ہے۔ تو اس کو ریگولیٹڈ رکھنا پڑے گا۔

उपसभापति : मैं वहीं कर रही हूं, और क्या कर रही हूं यहां बैठ कर।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : उपसभापतिजी, यह जन्म स्थान पर मंदिर का सवाल अब कुछ अरसे से चल रहा है। पहले, कुछ सालों के पहले, जब कांग्रेस की सरकार उत्तर प्रदेश में थी, तब भी रामकथा पार्क के लिए 42.09 एकड़ एक्वायर किया गया था—रामकथा पार्क बनाने के लिए और उस संबंध में एक्विजीशन पर न कोई आपत्ति हुई, न किसी तरह का विवाद खड़ा हुआ।

अब उत्तर प्रदेश की सरकार ने अक्तूबर, 1991 में 2.77 एकड़ और एक्वायर किया। इस बात की उन्होंने खास सावधानी बरती कि जो विवादास्पद ढांचा खड़ा हुआ है, उससे सारा एक्विजीशन अलग

[ ] Transliteration in Arabic Script.

[श्री सुन्दर सिंह भंडारी]

रख कर किया गया । हमको अच्छी तरह से याद है कि इस मंदिर का शिलान्यास का कार्यक्रम हो चूका है और शिलान्यास के कार्यक्रम के समय केंद्र की कांग्रेस सरकार ने उस स्थान पर शिलान्यास करने की इजाजत दी थी । बाद में इस पर विवाद खड़े हुए । हो सकता है कि वह विवाद रहे हों । लेकिन उत्तर प्रदेश की सरकार द्वारा 2.77 एकड़ एक्वायर कर लेने के बाद और अदालत के द्वारा एक्विजीशन अपहोल्ड होने के बाद वह विवाद समाप्त हो गये ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश): वह तो पेंडिंग है ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : नवम्बर 15 को सुप्रीम कोर्ट ने एक्विजीशन को अपहोल्ड किया और इसलिए वह केवल . . . (व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : वह इंटेरिम आर्डर है ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : एक्विजीशन के बारे में कोई अंतरिम नहीं है । उसके ऊपर पर्मानेन्ट स्ट्रक्चर खड़ा करना चाहिए कि नहीं, उस पर केवल रेस्ट्रिक्शन है और आज यही विवाद का विषय बना है जबकि जो कंस्ट्रक्शन वर्क उत्तर प्रदेश की सरकार उस एक्वायर्ड जमीन पर करवा रही है, वह पर्मानेन्ट कंस्ट्रक्शन की परिभाषा में आता है या नहीं आता है ।

अब यह तय करने का अधिकार माननीय सदस्य अपने हाथ में स्वीकार न करें, तो यह ज्यादा अच्छा होगा, उनके भी राजनीतिक जीवन की गरिमा बढ़ेगी अगर इसका फैसला वह अदालत पर छोड़ दें और अदालत को तय करने दें कि अभी तो काम हो रहा है, वह पर्मानेन्ट स्ट्रक्चर की परिभाषा में आता है कि नहीं आता है ।

उत्तर प्रदेश की सरकार ने नेशनल इंटेग्रेशन कौंसिल में भी यह आश्वासन दिया था कि वह—

All efforts will be made to find an amicable solution of the issue.

और एक दूसरा आश्वास दिया गया था—

"Pending a final solution, the Government of Uttar Pradesh will hold itself fully responsible for the protection of the Ram Janambhoomi-Babri Masjid structure. और मैं यह कह सकता हूं कि इन दोनों बातों के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार प्रयत्नशील रही है और अभी तक भी उन्होंने इस विवादास्पद ढांचे की सुरक्षा रखने का भरसक प्रयत्न किया है । कल गृह मंत्री जी वहां जाकर खुद देख कर आए । उन्होंने उसकी सुरक्षा के लिए कुछ और सुझाव उत्तर प्रदेश सरकार को दिए हैं और उत्तर प्रदेश सरकार ने उसके संदर्भ में, उसकी सुरक्षा के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं भी कर दी है, मैं ऐसा मानता हूं जहां तक विवादास्पद ढांचे का सवाल है उसके संबंध में हमें निश्चिन्त होने की जरूरत है । उत्तर प्रदेश सरकार इसके लिए वचनबद्ध है कि वह उस ढांचे को कोई नुकसान नहीं पहुंचने देगी । एक्वायर्ड जमीन अब तक उत्तर प्रदेश सरकार की है । सही तरीके से उत्तर प्रदेश सरकार ने वह जमीन अपने अख्तियार में ली है और उसके लिए जिन लोगों को कंपेंसेशन देने की जरूरत थी, क्योंकि उस एक्वायर्ड जमीन में 0.36 एकड़ प्राइवेट प्रापर्टी है, 2.41 एकड़ नजूल लैंड है, जिस पर कुछ छोटे-मोटे कंस्ट्रक्शन थे । इस सब के लिए 7.05 एकड़ कंपेंसेशन वहां पर हुआ वह जमा करा चुके हैं और 1.69 एक्थ्यूली जिनकी जमीन एक्वायर हुई या एक्वीजीशन के कारण जिनको हर्जाना देने की जरूरत थी वह हर्जाना भी वह दे चुके हैं । शिलान्यास की जगह अब डिस्प्यूटेड नहीं है क्योंकि सरकार के एक्विजीशन के दायरे में वह आ गई है । इसलिए वहां पर जो कुछ काम चल रहा है वह किसी विवादास्पद भूमि पर नहीं है ।

महोदया, एक बात मैं यहां पर कहना चाहूंगा । साल भर पहले तक सारे देश में एक आवाज थी कि मंदिर बनाने का कौन विरोधी है, मंदिर बनाने

के लिए किसको आपत्ति है । मंदिर बने, कोशिश यही की जाए कि विवादास्पद ढांचा सुरक्षित रहे । अब जब सारे देश को, सभी दलों को यह बात तसल्ली से मालूम हो गई है कि विवादास्पद ढांचा सुरक्षित है तो अब आवाजें उठने लगी है निर्माण के काम पर । एकदम से करवट बदल दी गई है । अभी तक केवल ढांचे के बारे में आपत्तियां थीं, अब तो वहां अगर कंस्ट्रक्शन वर्क भी हो, अन-डिस्प्यूटेड एरिया पर हो, पर अयोध्या का नाम आना चाहिए तो फिर अयोध्या में कहीं सड़क बने,कहीं दीवार बने, किसी भी प्रकार का तामीर का काम हो तो एकदम से वावैला खड़ा होता है । यह देखिए वायदा-खिलाफी हो रही है । जो वचन दिया गया था उसको नहीं माना जा रहा है ।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI S. B. CHAVAN): I am very happy that you are proceeding on the right lines. Since you are saying so many things, the only point on which I would like to be satisfied is whether the construction, ultimately, is not going to cover the disputed structure. hTat is the point on which you have to make your position clear.

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : अल्टीमेटली जब होगा तब आप वहां रहेंगे या मैं रहूंगा, इसका कोई खातिर-जमा उत्तर नहीं दे सकता । .....(**व्यवधान**) उत्तर प्रदेश सरकार, भारतीय जनता पार्टी दोनों इस जमीन को जन्म-स्थान मानते हैं और इस जमीन पर मंदिर बनाने के लिए वचनबद्ध है । इसमें कहीं विवाद नहीं है, कहीं लुकी-छिपा नहीं है । .....(**व्यवधान**)

उपसभापति : बैठिए-बैठिए । ..... मौलाना साहब बैठिए । .... (**व्यवधान**)

मौलाना अबदुल्ला खान आजमी : .... आप इसको भी जन्म-स्थान मानते हैं, आप पार्लियामेंट को भी जन्म-स्थान मान लीजिए । ..... **व्यवधान**

उपसभापति : आजमी साहब, बैठिए । ...(**व्यवधान**)...आजमी साहब, प्लीज़ बैठ जाइये । प्लीज़, बैठ जाइये ... .आई वोट परमिट । .... (**व्यवधान**)

बैठिए, आजमी साहब आप बैठिए ।

Nothing will go... (*Interruptions*). I will not permit I am not permitting it. I am not allowing it. (*Interruptions*). I am not allowing it; I am not (*Interruptions*).

आप पीछे जाइए ।

Please go back. Please go back. Please go back. (*Interruptions*).

आप जरा खामोश रहिए .... (**व्यवधान**) .. अच्छा आप जाइए तो ।

Please. Please. Please. Please. ... (*Interruptions*). Please go back. ... (*Interruptions*). Please go back. Please go back.

एक मिनट, आप जाइए ।

I will handle it. ... (*Interruptions*).

आप बैठिए ।

Please go. Please go back. Please go back. Please go back.... (*Interruptions*).

जरा चुप हो जाइए ।

I will handle it... (*Interruptions*)... will manage it. Please sit down. ... (*Interruptions*). I will take note of it. I have taken note of it. Please take your seat. Please take your seat.

आप भी बैठिए । आप जरा खामोश रहिए ।

Let me handle it. I am still in the Chair. Please. Please sit down. ... (*Interruptions*).

एक मिनट, एक मिनट ।

Please take your seat... (*Interruptions*).

बैठिए, आप का टाईम निकल रहा है ।

Will the Members listen to me? Please. Mr. Kaldate. please. (*Interruptions*). Will you please sit down?... (*Interruptions*)

बैठिए, बैठ जाइए । आप भी बैठ जाइए आजमी साहब ।

[उपसभापति]

Please sit down. ... (*Interruptions*).

I will not permit. ... (*Interruptions*).

मौलाना अबेदुल्ला खान आजमी :किसी की बपौती नहीं है हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान किसी के बाप का जागीर नहीं है, हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है ... **(व्यवधान)**...

उपसभापति : बैठिए-बैठिए, प्लीज भंडारी जी, आप भी जरा बैठ जाइए। आप बैठ जाइए...ठहरिए, देखिए, एक मिनट, आप भी शांति से सुनिए । मैंने पहले ही आग्रह किया है कि मसला गंभीर है, एजीटेशन है अंदर भी और बाहर भी । इसलिए अगर शांति के साथ सुनेंगे तो ठीक है और हर मेम्बर को अपनी राय देने का हक है उसके टाइम पर, आप अगर...**(व्यवधान)**... एक मिनट ठहरिए, अफजल साहब, आप हाथ न उठाएं, एक सैकेंड, आपको भी हक है अपनी राय देने का, जब आप का समय आए तो अपनी राय दीजिएगा । आप एक मिनट ठहरिए, जब मैं खड़ी हूं तो आप खड़े न होइए।

When I am standing, you cannot. .... (*Interruptions*). Please, this is not the way I will not permit this kind of functioning of this House, please. Will you please keep quiet for a minute, please? I request Members to have patience.

भंडारी जी, आप जरा बैठिए । जो हमारे नए मेम्बर आए हैं, मैं उनको भी यह बताऊंगी कि हमारे हाउस की एक गरिमा है । हमारे हाउस में अगर किसी ने कोई ऐसी बात कही जो किसी को बुरी लगी, कभी भी हम अपनी स्तर से नीचे नहीं उतरते हैं । अगर आपको लगा कि भंडारी जी की किसी बात पर किसी दूसरे ने कुछ कहा तो मैं यहां बैठी हूं ...**(व्यवधान)**... आप जरा खामोश रहिए, मेहरबानी कर सुन लीजिए । मैं खुद उनको समझा सकती हूं । अपने हाथ में आप अगर न्याय खुद ही लेंगे तो फिर यहां दूसरे के बैठने की जरूरत नहीं । भंडारी जी को अपना बोलने दीजिए, जिसका समय आएगा बोलेगा । इस तरह से लड़ाई-झगड़ा करने से न तो कोई बात सुनाई देगी, न बात का कोई जबाब होगा । अब मैं आप से निवेदन करती हूं कि सब लोग शांति से सुनें। बस ।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मौम अफजल : मैडम, मैं एजीटेट नहीं कर रहा हूं, मैं सिर्फ एक दरख्वास्त कर रहा हूं, मैडम, एक दरख्वास्त कर रहा हूं हाथ जोड़कर कि.....

मैं सिर्फ जानना चाहता हूं कि जो कुछ आनरेबल मेम्बर ने कहा है हम लोगों के मुताबिक या किसी के मुतल्लिक, उसको रिकार्ड पर जाने दिया जाए, उसका निकाला न जाये । इसलिए चाहता हूं कि नेशन को भी पता चल कि कैसे लोगों को यह पार्लियामेंट में भेज रहे हैं । .. **(व्यवधान)**

†[شری محمد افضل عرف م. افضل "مسلسل": میں صرف جاننا چاہتا ہوں کہ جو کچھ آنریبل ممبر نے کہا ہے ہم لوگوں کے متعلق، یا کسی کے بھی متعلق، اس کو ریکارڈ پر جانے دیا جائے اس کو نکالا نہ جائے اس لئے میں چاہتا ہوں کہ نیشن کو بھی پتہ چلے کہ کیسے لوگوں کو یہ پارلیمنٹ میں بھیج رہے ہیں... "مداخلت"...]

SHRI S. JAIPAL REDDY (Andhra Pradesh): My request is that all unparliamentary expressions be expunged from the record.

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Unparliamentary expressions I am going to remove from the record.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल वह अगर यह कहते हैं कि पाकिस्तान भेजा जाए तो यह अनपार्लियामेंट्री नहीं है ?

Let the nation know that these people want to send us to Pakistan.

شری محمد افضل عرف بھیم افضل: وہ اگر یہ کہتے ہیں کہ پاکستان بھیجا جائے تو یہ ان پارلیمنٹری نہیں ہے۔

श्री एन० के० पी० साल्वे (महाराष्ट्र): माननीय सदस्य श्री भंडारी जी एक बड़ी परिपक्वता से, संयम से अपने विचार, अपनी दलीलें रख रहे हैं । हमारे मतभेद हों, यह बात और है । मगर वे अपने व्याख्यान में , अपने भाषण में एक मर्यादा रख कर चल रहे हैं । यह बिल्कुल ठीक कहा था एक माननीय सदस्य ने कि यह सेंडन स्पीच है, हम लोग इसमें किसी तरह का इंटरप्शन न करें । इंटरप्शन होना भी नहीं चाहिए । हम लोग डिसएग्री कर सकते हैं मगर विचारों को एक इज्जत देनी चाहिए । मगर महोदय मेरी बहुत बड़ी आपत्ति इस बात पर है कि अगर किसी से गल्ती हो गयी, इंटरप्शन हो गया तो इसमें ऐसी बात नहीं की जाये कि–तुम तो राष्ट्रद्रोही हो । ..... **(व्यवधान)**

किसी को यह अधिकार नहीं है कहने का कि तुम पाकिस्तान जाओ । ..... **(व्यवधान)**

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहिब, मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर भंडारी जी की तकरीर में ..... **(व्यवधान)**

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اگر بھنڈاری جی کی تقریر میں ... مداخلت ...

श्री एन० के० पी० साल्वे :उन्होंने अगर यह कहा है कि--पाकिस्तान जाओ, महोदय, मेरा निवेदन है कि उन्हें क्षमा मांगनी चाहिए । ..... **(व्यवधान)**

उपसभापति : देखिए ; सिकन्दर बख्त साहब, जरा आप तशरीफ रखेंगे, एक मिनट, प्लीज । एजीटेशन होता है दिमाग में । मैंने इसलिए कहा कि शायद किसी नय मेंबर ने ऐसी बात कही । देखिए .... **(व्यवधान)** सुनिए, मैं रिकार्ड देख लूंगी इतने हंगामे में कौन किसको क्या कहता है, कोई नहीं सुन पाता । मगर सवाल किसी के सुनने या नहीं सुनने का नहीं है । सवाल यह नहीं है कि मेरे मन में क्या है और आपके मन में क्या है ? सवाल यह है कि सदन की कुछ मर्यादाएं हैं । आप कुछ भी सोचें, मगर इस सदन में इस तरह का किसी की बात कहना अच्छा नहीं लगता । अगर किसी मेंबर ने कहा है, मैंने नहीं सुना, रिकार्ड में देख लूंगी । अगर किसी ने इस बात की बात कही तो मैं उनसे यह निवेदन करूंगी कि वे ऐसे अलफाज् न कहें और अगर कहें तो वापिस ले लें । ... **(व्यवधान)** ऐसा करना यह सदन की और उनकी अपनी गरिमा होगी । .... **(व्यवधान)**

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहिबा, मुझे यह अर्ज करना है कि भंडारी जी की तकरीर में या मेरी पार्टी के किसी ... **(व्यवधान)**

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ۔ مجھے یہ عرض کرنا ہے کہ بھنڈاری جی کی تقریر میں یا میری پارٹی کے کسی ... مداخلت ...

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

उपसभापति : भंडारी जी से किसी को एतराज नहीं है ।

श्री सिकन्दर बख्त : मेरी गुजारिश तो सुनिए सदर साहिबा, भंडारी जी की तकरीर में या मेरी पार्टी के किसी भी सदस्य ने कोई ऐसी बात कही है जो अनपार्लियामेंटरी है, अनपार्लियामेंटरी को भी जाने दीजिए । अगर वह शराफत और तहजीब के दायरे से बाहर है तो मैं एक-एक शब्द वापिस लेता हूं । लेकिन यह दरख्वास्त करना चाहता हूं कि भंडारी जी के पहली दफा बोलने पर भी हम थोड़ी देर बर्दाश्त से काम नहीं ले सकते । भंडारी जी बहुत नरम लहजे में तकरीर कर रहे हैं । उस पर दूसरों का दखल देना क्या बहुत जरूरी है । . . . . (**व्यवधान**)

شری سکندر بخت : میری گزارش تو سنیئے صدر صاحبہ۔ بھنڈاری جی کی تقریر میں یا میری پارٹی کے کسی بھی سدسیئے نے کوئی ایسی بات کہی ہے جو ان پارلیمنٹری ہے۔ ان پارلیمنٹری کو بھی جانے دیجئے۔ اگر وہ شرافت اور تہذیب کے دائرے سے باہر ہے تو میں ایک ایک شبد واپس لیتا ہوں لیکن یہ درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ بھنڈاری جی کے پہلی دفعہ بولنے پر بھی ہم تھوڑی دیر برداشت سے کام نہیں لے سکتے۔ بھنڈاری جی بہت نرم لہجے میں تقریر کر رہے ہیں۔ اس پر دوسروں کا دخل دینا کیا بہت ضروری ہے

ڈپٹی چیئرمین : اکبر احمد جی، آپکا کیا ہے ؟

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

डा० अबरार अहमद (राजस्थान) : महोदया, मैं यह बात कहना चाहता हूं कि वैसे तो सिकन्दर बख्त साहब ने वह शब्द वापिस लेने की बात कही है । लेकिन जिस दिन मुरली मनोहर जोशी जी यहां पर अपनी पहली स्पीच बोल रहे थे तो उन्होंने यहां पर . . . . (**व्यवधान**) उन्होंने बड़े गलत तरीके से कहा था कि वाइस चेयरमैन के पैनल में हों तो वे इंडिसिप्लिन करते हैं । जो उन्होंने शब्द कहे वह अपने कानों से सुने तो बर्दाश्त नहीं होगा । उनको खुद माफी मांगनी चाहिए . . . (**व्यवधान**) उन्होंने क्या कहा, आपको मालूम है ? . . . . . (**व्यवधान**)

डा० मुरली मनोहर जोशी (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभापति जी, यह प्वाइंट आफ आर्डर है या प्वाइंट आफ डिसआर्डर है ? . . . . . (**व्यवधान**) मैं जानना चाहता हूं कि यह प्वाइंट आफ आर्डर है ? . . . (**व्यवधान**)

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is no point of order. Please take your seat.

डा० मुरली मनोहर जोशी : इस तरह की इजाजत नहीं दी जा सकती । प्वाइंट आफ आर्डर के नाम पर प्वाइंट आफ डिसआर्डर क्यों किया जा रहा है ? . . . . . (**व्यवधान**)

उपसभापति : अबरार अहमद साहब, छोड़िए, माफी मांग ली . . . . (**व्यवधान**)

डा० अबरार अहमद : जो सदस्य यह कह सकता है, वह खुद क्यों नहीं माफी मांगते ? . . . . (**व्यवधान**)

उपसभापति : देखिए प्लीज, **व्यवधान**, इसमें होता है इंसान का कि अगर किसी ने माफी मांग ली तो जानते हुए भी कि आपका दिल दुखा है, ठीक है मान लीजिए बस हो गया । और सबसे बड़ी बात यह है कि . . . . .

एक माननीय सदस्य : माफी मांग रहे हैं ?

उपसभापति : हां मांग रहे हैं। . . . **(व्यवधान)** आप बैठिए, प्लीज । मैं एक बात का ध्यान आपकी तरफ करूं कि जब भंडारी जी बोल रहे थे तो मुहम्मद अफजल साहब ने कहा था कि इनकी मेडन स्पीच है इसमें डिस्टर्ब न करें। तो मोहम्मद अफजल साहब जरा गुस्से हो गये । आप लोग जरा ठंडे रहिए, काम ठीक से चलने दीजिए . . . . **(व्यवधान)**

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल : मैंने भंडारी साहब की तकरीर पर एक भी बात नहीं कही । आप मुझ पर गलत इलजाम लगा रही हैं .....

شری محمد افضل عرف م۔ افضل : میں نے بھنڈاری صاحب کی تقریر پر ایک بھی بات نہیں کی ۔ آپ مجھ پر غلط الزام لگا رہی ہیں ۔

उपसभापति : मुझे मालूम है, मैंने यही बात कही । आपने तो मदद करी थी। मैं यही कह रही हूं कि आप मदद कर रहे थे, आप क्यों गुस्सा हो रहे हैं ? . . . . . **(व्यवधान)**

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI S. B. CHAVAN): Madam, I would like to submit one thing for your kind consideration. You have been pleased to state that you will go through the record if any of the hon. Members has said something which is highly objectionable. Unfortunately, I could not get at it. But there-after. . . . (*Interruptions*) . . . .

THE DEPUTY CHAIRMAN: Have some courtesy to listen to him also. You don't allow him to speak and then you would say "We did not hear what he has said." This is an unfortunate part. Please listen to him. He is the Leader of the House.

SHRI S. B. CHAVAN: The Deputy Chairperson was pleased to state that if any of the hon. Members has used certain objectionable remarks, she will see to it that he apologises to the House. The Leader of the Opposition has said that if any Member of his party has said something, he would apologise on behalf of the Member of his party. He made a general kind of statement. That is not the spirit. The spirit of the observation is that the Deputy Chairperson will go through the record and if she finds that the Member has used any objectionable word, she will ask the Member to apologise to the House.

श्री सिकन्दर बख्त : मैं यह कहना चाहता हूं कि मैंने एक लफ्ज सुना नहीं है . . .

نتاندر بخت : میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ میں نے ایک لفظ سنا نہیں ہے ۔

उपसभापति : मैं देख लूंगी . . . **(व्यवधान)**

THE DEPUTY CHAIRMAN: Have to react to the statement of the Leader of the House. मैं यह अर्ज करना चाह रहा हूं कि मैंने एक लफ्ज वह नहीं सुना है, अनपार्लिमेंटरी, आब्जेक्शनेबल की बात तो अलहदा है, जो तहजीब से दूर हो वह मैंने नहीं सुना है । उसके बावजूद भी यह कहा है कि अगर कोई लफ्ज इस तरह का है तो उसको मैं वापस लेता हूं, इस पर भी ऐतराज है, यह बात अजीब दुनिया हो गई, कमाल की बात है . . . **(व्यवधान)**

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

[Shri Sikander Bakht]

میں یہ عرض کرنا چاہ رہا ہوں کہ میں نے ایک لفظ وہ نہیں سنا ہے ان پارلیمنٹری آبجیکشنیبل کی بات تو علیحدہ ہے جو تہذیب سے دور ہو وہ میں نے نہیں سنا ہے۔ اس کے باوجود بھی یہ کہا ہے کہ اگر کوئی لفظ اس طرح کا ہے تو اس کو میں واپس لیتا ہوں۔ اس پر بھی اعتراض ہے۔ یہ بات عجیب دنیا ہو گئی۔ کمال کی بات ہے.... "مداخلت"

उपसभापति : भंडारी जी, आप बोलिए ..... **(व्यवधान)**

SHRI SIKANDER BAKHT: The Home Minister is becoming a party to every... (*Interruptions*)...He has no business to... (*Interruptions*)...

उपसभापति : सुनिए, रेकार्ड सिर्फ लिखा नहीं जाता, रेकार्ड टेप पर रिकार्ड भी होता है । सिकन्दर बख्त साहब ने जो कहा उसकी बुनियाद पर आगे प्रोसीड करना चाहिए । भंडारी जी बोले, उसके बाद मुझ पर भरोसा करिए । ये रेकार्ड देखकर, रेकार्ड कान से सुनकर, अगर लगा कि किसी की दिल-आज़ारी हुई है तब यह बात आगे सोची जाएगी । फिलहाल यहीं पर मामला छोड़कर भंडारी जी को बोलने दीजिए । ..... **(व्यवधान)**

SHRI SIKANDER BAKHT: Why don't you give a word of advice to the Leader of the House? It was absolutely an uncalled for statement. (*Interruptions*).

SHRI S. B. CHAVAN: Madam, I strongly object to this. That is not correct. (*Interruptions*). He cannot make this kind of observations.

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : अगर कहा गया है, गलत आरोप लगाया गया है तो गृह मंत्री जी को माफी मांगनी होगी ... **(व्यवधान)**

उपसभापति : सिकंदर बख्त साहब, आपको जैसे लीडर आफ अपोजिशन के नाते हक है इजहार करने का, ऐसे ही लीडर आफ दि हाउस को भी हक है इजहार करने का । इसमें माफी का सवाल नहीं है ... **(व्यवधान)**

कुछ माननीय सदस्य : इनको माफी मांगनी चाहिये... **(व्यवधान)** ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will check with the tape. I am only going by the record. Take your seat. I will look into the debate. (*Interruptions*). I am not permitting anything more on this. That is enough.

SHRI P. UPENDRA (Andhra Pradesh): Madam, one minute. He has agreed to it. This is arising out of the poser to Mr. Bhandari. I want to ask him something. When the NIC team visited Ayodhya... (*Interruptions*).

THE DEPUTY CHAIRMAN: Nothing more on that. Please help me to run the House. (*Interruptions*). I am not permitting you. Unless I see the record, I am not permitting anything on that. There is the tape.

SHRI M. A. BABY (Kerala): Madam, I have a point of order.

SHRI P. UPENDRA: We put a specific query whether .... (*Interruptions*).

THE DEPUTY CHAIRMAN: There is no point of order. Please take your seat. (*Interruptions*). I have not identified you, Mr. Upendra. Please sit down.

SHRI P. UPENDRA: He has agreed. (*Interruptions*).

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ (Haryana): He has not agreed. (*Interruptions*).

उपसभापति : अफसोस की बात यह होती है कि इस हाउस में जब झगड़ा होने लगता है किसी बात पर तो कई एक प्रिजाइडिंग आफिसर्स हो जाते हैं । हर तरफ से मुझे सवाल पूछना है । मैं सुन ही नहीं पा रही हूं कि यह प्वाइंट आफ आर्डर में आ रहा है कि नहीं । चार इधर से, दो उधर से बोलेंगे तो मैं उनको बिठाऊं कैसे ? अगर, मेहरबानी करके, अगर भरोसा है तो थोड़ी देर चुप रहिए । अगर मैं गलत कह रही हूं तो आप मुझे कहिए . . . . . (**व्यवधान**) मगर सुनने तो दीजिए । . . . (**व्यवधान**) अब चलने दीजिए . . . . .

Now, nothing. (*Interruptions*).

SHRI M. A. BABY: Madam, I am on a point of order.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Already there is so much disorder. I want to bring some order in the House. What is your point of order, Mr. Baby?

SHRI M. A. BABY: Madam, still a section of Members on this side feel that a solution has to be found on this question. (*Interruptions*) Madam, you have given a ruling which I respect very much that you will go through the record. Going by the high traditions of this House, there can be one more methord through which this question can be solved. Now, we can take the statement of a Member because some allegation is being made that one hon. Member has said something which should not have been uttered in this House or in any other House. (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: He is on a point of order. He has a right to ask. (*Interruptions*)

SHRI M. A. BABY: Madam, my submission is, if the hon. Member stands up and states that he has not uttered what is being alleged to have been uttered the problem is over, it is alleged that he has stated "you are the agent of a neighbouring country and we will throw you out! This is what we heard. If he stands up and says that he has not said that, there is no problem. He can stand up and say that. (*Interruptions*).

SOME HON. MEMBERS: He has not said that.

उपसभापति : आप सब बोल रहे हैं, मैं सुन नहीं पा रही हूं वह क्या कह रहे हैं (**व्यवधान**)

श्री विष्णु कांत शास्त्री : आप हाउस को एडजोर्न कीजिए और टेप सुन लीजिए । (**व्यवधान**)

SHRI M. A. BABY: Yes, he has. (*Interruptions*). He can stand up and say that he has not said that. This is my point of order. (*Interruptions*)

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: He should clarify this. Otherwise, he should apologise to the House. (*Interruptions*). This is highly objectionable. How can we tolerate all these things? (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have informed the House that I will listen to the tape. If the Member is not voluntarily coming forward. I will listen to the tape. (*Interruptions*).

SHRI YASHWANT SINHA (Bihar): Madam. the sensibility of some Members . . . (*Interruptions*)

SHRI SURESH KALMADI (Maharashtra): Madam, let the Member clarify. Why should you listen to the tape? Why is the Minister sitting quiet? (*Interruptions*)

SHRI YASHWANT SINHA: Madam, the suggestion which Mr. Baby has made is a very eminent suggestion. (*Interruptions*) What is alleged to have been said is not only unparliamentary, it is extremely objectionable. There is nothing absolutely which can justify it, even one word of it. Now, if it has not been said or the Member's intention was not to hurt, there is nothing which prevents the Member from getting up and saying that he did not say that. This, I think, will

[Shri Yashwant Sinha]

bring peace to the House and will be in conformity with the dignity of the House. Therefore, I will suggest to my friends of the BJP that let them persuade that Member to stand up and according to the suggestion made by Mr. Baby say that he did not say that. (*Interruptions*)

SHRI N.K.P. SALVE: Can't the Member concerned get up and deny it? (*Interruptions*)

SHRI YASHWANT SINHA: Madam Deputy Chairman, if you want that the business of the House should proceed, please direct the Member to do it. (*Interruptions*) The Member is identified... (*Interruptions*)... Because, it was not whistling in the dark. What he has said has been heard. He has been identified, Madam Deputy Chairman. (*Interruptions*)

DR. JINENDRA KUMAR JAIN (Madhya Pradesh): Madam, if you want to examine the BJP viewpoint, please listen to Bhandariji. (*Interruptions*)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shiv Shankerji. ...(*interruptions*)... I have allowed Shiv Shankerji. We have to cross this hurdle somehow...(*Interruptions*)...

SHRI P. SHIV SHANKER (Gujarat): Madam, I must submit that Shri Sunder Singh Bhandariji was developing his arguments in an exceedingly proper manner. Though with certain of the observations I was not able to agree, I was really appreciating the manner in which he was trying to put forth his case before the House. It is at that time very rightly Mr. Afzal has said that he should not be interrupted. What happened at the back, we, the whole House, has not been able to hear and...(*interruptions*)... Just a moment. And what you are trying to say about the tape recorder and what has gone on record, I doubt very much whether anything has gone on record as to what has happened at the back benches. ...(*interruptions*)... Will you kindly listen to me?

उपसभापति : आप जरा उनकी बात सुन लीजिये, वह तो रिकार्ड पर आ जाय।

SHRI P. SHIV SHANKER: I am very clear that if what has transpired in the back benches is true I am sure, it cuts across the party-lines and even the Members of the BJP will not agree with what one of the Members has said, if it is true...(*Interruption*)... If it is true. If it is true, ...(*Interruptions*) I am sure about it. It has nothing to do with the party. It has nothing to do with the party. ...(*Interruptions*)... It has nothing to do with the party.

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: I agree that there is nothing to do with any party.

SHRI P. SHIV SHANKER: That is exactly what I am saying. I am sure, I am confident that even the Members of the BJP or the Leader of the BJP who is here, even the Leader of the Opposition, would not contribute to the theory of an individual who seems to have said something. Therefore, Baby is right. If the hon. Member has said something, it is for his conscience; if he has not said it, the matter ends there. But if he has said something, it will be highly graceful, it will be highly graceful on the part of that hon. Member to stand up and say, "Well, I apologise for what I have said." If he says he has not said anything, he can as well say that he has not said anything. The matter must end there. It is not a question of the Leader of the Opposition or the Leader of the Party, if it is true... (*Interruptions*)... If what has been attributed to the hon. Member is true, it puts everyone, every Member of this House, to shame. Therefore I appeal to the conscience of the hon. Member to stand up and clarify the position.

डा० मुरली मनोहर जोशी : श्री बेबी ने जो कुछ बातें कहीं उससे यह समझ में आया कि कोई ऐसा एलीगेशन है कि किसी मेम्बर ने दूसरे मेम्बर के बारे में यह कहा कि वह किसी पड़ोसी देश का एजेंट है। मैं अपनी पार्टी की तरफ से... **(व्यवधान)**

....यह कहना चाहता हूं कि हमारी पार्टी इस सदन में बैठे हुए प्रत्येक सदस्य को किसी देश का एजेंट मानती नहीं है और यहां बैठे हुए किसी सदस्य को दूसरे देश में भेजने की हामी नहीं हैं .... **(व्यवधान)**

उपसभापति : आप सब बैठिये । Satya Bahin, please sit down. ...(*Interruptions*)... No, no; please take your seats... (*Interruptions*)... Please take your seat. Sardar Sahib, please sit down.

सरदार साहब बैठिये .... **(व्यवधान)** ...बैठिये ।

डा० मुरली मनोहर जोशी : विपक्ष के नेता ने खड़े होकर सबसे पहले यह कहा था कि कोई बात चाहे रिकार्ड में आयी है या नहीं आयी है, किसी ने सुनी है या नहीं सुनी है, अगर किसी ने कहा है तो उन्होंने कहा था कि मैं उसकी तरफ से माफी मांगता हूं ..**(व्यवधान)**...

उपसभापति : आप बैठिये । I am not permitting. (*Interruptions* I am not permitting. (*Interruptions*)

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : इन्होंने ...**(व्यवधान)**...पाकिस्तान चले जाओ । ये जो सामने बैठे हुए हैं .... **(व्यवधान)** .....इन्होंने कहा कि पाकिस्तान चले जाय । हिन्दुस्तान इनकी जागीर है क्या ? .... **(व्यवधान)** ....

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: انہوں نے "....مداخلت"....پاکستان چلے جاؤ۔ یہ جو سامنے بیٹھے ہوئے ہیں۔ "...مداخلت" انہوں نے کہا کہ پاکستان چلے جائیں۔ ہندوستان انکی جاگیر ہے کیا..."مداخلت"

उपसभापति : आजमी साहब, बैठिये । ...**(व्यवधान)**...

I am not allowing... (*Interruptions*)

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: यह ...**(व्यवधान)**...अगर मुझे इंसाफ नहीं मिला तो मैं चला जाऊंगा ...**(व्यवधान)** ....

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: یہ ... مداخلت"...اگر مجھے انصاف نہیں ملا تو میں چلا جاؤں گا۔...: مداخلت"...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not allowing you. (*Interruptions*)... I have not permitted you. I am very sorry ...(*Interruptions*) सेाजमी साहब , कोई इस तरह जो टेंटेड.. **(व्यवधान)** ...आप बैठिये मैं आपसे एक बात अर्ज कर रही हूं कि इतना गुस्सा करने की जरूरत नहीं ..... **(व्यवधान)**...आप चुप रहिये ।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : हिन्दुस्तानी को जो पाकिस्तानी कहेगा, हम यह बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं । हिन्द पर हमें नाज है ...**(व्यवधान)**...ताज और लाल किले के बानी हम हैं । हम हिन्दुस्तानी हैं । हम किसी को हक नहीं देंगे पाकिस्तानी कहने का ।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: ہندوستانی کو پاکستانی کہے گا۔ ہم یہ برداشت نہیں کرسکتے۔ ہندوستان پر ہمیں ناز ہے۔ "مداخلت" تاج اور لال قلعے کے بانی ہم ہیں۔ ہم ہندوستانی ہیں۔ ہم کسی کو حق نہیں دیں گے پاکستانی کہنے کا۔"

†[ ] Transliteration in Arabic Script

उपसभापति : आप बैठिये।

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): Most of the BJP leaders participated... (*Interruptions*)... against the Britishers in 1942. (*Interruptions*)

मौलाना अबैदुल्ला खान आजमी : हमें जो पाकिस्तानी कहेगा तो हम इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे ... (**व्यवधान**) ....

مولانا عبید اللہ اعظمی: ہمیں جو پاکستانی کہے گا تو ہم اسے برداشت نہیں کریں گے ... "مداخلت"

उपसभापति :

Please, just a minute. I request everybody... (*Interruptions*)... आजमी साहब, मेरे या किसी के कह देने से कोई कहीं का बन नहीं जाता। यहां गुस्से में कोई बात हो जाती है लेकिन किसी के दिल में बुराई नहीं होती। उन्होंने मांफी मांग ली है। अगर वे..... (**व्यवधान**) ....

SHRI P. SHIV SHANKER: No, no.

SHRI S. JAIPAL REDDY: No, no. I am on a point of order.

SHRI P. SHIV SHANKER: The hon. Member must clarify his position. (*Interruptions*)...The hon. Member must clarify. We will go by what the Member says. (*Interruptions*)...

SHRI N.K.P. SALVE: Let the Member clarify. (*Interruptions*)... Madam, you go by what he is saying. (*Interruptions*) ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will ask Mr. Jaipal Reddy. (*Interruptions*)...

SHRI P. SHIV SHANKER: The hon. Member must clarify the position. (*Interruptions*)...

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam...

SHRI P. SHIV SHANKER: Madam, it is a grave reflection on the dignity of this House. (*Interruptions*)...

SHRI N.K.P. SALVE: On the honour and dignity of the House. (*Interruptions*) ...I seek your ruling. (*Interruptions*)...

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदया, (**व्यवधान**) ... यह बड़ी गलत बात है। यह भारत के संविधान के खिलाफ है। हम सब भारत के नागरिक हैं। ... (**व्यवधान**) ...

SHRI P. SHIV SHANKER: The hon. Member must clarify the position. (*Interruptions*)... The hon. Member must clarify the position. (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have asked Mr. Jaipal Reddy. (*Interruptions*) ...

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE (Maharashtra): Madam, I am on a point of order. (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have asked Mr. Jaipal Redddy. He has got up on a point or order. (*Interruptions*)... I will call you. (*Interruptions*)...

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam Deputy Chairperson,....

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have asked Mr. Jaipal Reddy. (*Interruptions*) ...please. I have asked Mr. Jaipal Reddy. (*Interruptions*)... रेड्डी साहब, आप बोलिये।

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam Deputy Chairperson, I learnt reliably, authentically and authoritatively from Members of the Janata Dal and the CPM that such a word was used by one BJP Member against the JD Member. I don't know whether such an expression used by that Member could be recorder on take or not. The very fact that so many Members have heard it testifies to the fact that such an expression has been used. I completely concur with the sentiments expressed by Shri Shiv Shankerji that all

[1] Transliteration in Arabic Script.

of us are deeply hurt. It is not merely unparliamentary, it is outrageous, it is obnoxious and it is filth. I know Shri Sikander Bakht is an extremely respected Member of this House. He is not merely the Leader of the Opposition, but above all, more than that, he is respected in this House. I am sure he would not be privy to such an expression. Since such an expression was used, the Member concerned should say that he is sorry, or, otherwise, the Chair may contemplate necessary action against him.

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहेबा, एक मिनट मुझे दीजिये ।

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ اب مجھے موقع دیجئے ۔

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have identified him. He is on a point of order.

श्री सिकन्दर बख्त : भंडारे साहब, मुझे एक मिनट दीजिए प्लीज़ ।

شری سکندر بخت: بھنڈاری صاحب مجھے ایک منٹ دیجئے پلیز۔

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: I am not yielding.

श्री सिकन्दर बख्त : सब कुछ हो रहा है (**व्यवधान**) सदर साहिबा, मुझे कुछ अर्ज़ करना है जरूर ।

شری سکندر بخت: سب کچھ ہو رہا ہے مداخلت، صدر صاحبہ۔ مجھے کچھ عرض کرنا ہے ضرور۔

उपसभापति : सिकन्दर बख्त साहब, आप लीडर आफ दी अपोज़ीशन हैं । मैं आपको पूरा मौका दूंगी बोलने का मगर भंडारे साहब बहुत पहले से प्वाइंट आफ आर्डर पर थे । उन्हें बोलने दीजिये ।

श्री संवप्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : मेरा भी व्यवस्था का प्रश्न है ?

उपसभापति : जी, जी ।

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: Because of what has happened today in the House, everyone of us should hang his head in shame. It is not a hurt to Mr. Azmi it is a hurt to everyone of us. We are all citizens of India and we are proud to be the citizens of India. Now the question is not what Sikander Bakhtji is saying or Joshiji is saying. The Members who have felt hurt—we share their hurt because it is our hurt—have identified the Member. Now the only course open is not to check the records but the Member should get up and either own the statement and apologise or deny it. There is no other course left.

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहेबा, अब मुझे मौका दीजिये ।

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ ایک منٹ مجھے دیجئے۔

श्री दिलीप सिंह जूदेव (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदया . . .

उपसभापति : जिनके ऊपर एलीगेशन था वह बहुत हिम्मत से खड़े हुए हैं । बड़ी खुशी की बात है । बोलिये, बोलिये, मामला खत्म तो हो ।

श्री दिलीप सिंह जूदेव : माननीया उपसभापति महोदया, मेरे ऊपर इल्ज़ाम लगाया जा रहा है, मैंने यह नहीं कहा । अगर किसी के सुनने में कोई गलती हुई है तो मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूं ।

†[ ] Transliteration in Arabic Script

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now the matter ends. I personally, from the Chair thank the hon. Member, who is a new Member, to have this courage to get up and say. I am very happy with that. I hope in the true spirit of Parliamentary democracy they will behave like this. कोई भी ऐसा मौका नहीं आने देंगे कि किसी दूसरे की दिल आज़ारी हो। आगे बोलिये भंडारी जी। आपका समय तो ज्यादा इंटरप्शंस में चला गया।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : मेरे से ज्यादा टाइम तो दूसरे माननीय सदस्यों ने ले लिया।

उपसभापति : चलिये, वह मुझे मालूम है

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : मैं फिर से अपने तर्क को एक कोटेशन से आगे बढ़ाता हूं और वह कोटेशन है बोम्मई साहब की रिपोर्ट से। उसके पेज 26 पर सिविल मिसलेनियस एप्लीकेशन नम्बर 48 आफ 1989 और इसके ओरिजिनल सूट नम्बर 4 आफ 1989 के जजमेंट के आखीर में जज साहब ने यह लिखा है—

"It is doubtful that some of the questions involved in the suit are soluble by judicial process."

मैंने यह बात इसलिए कही कि जन्म स्थान के मन्दिर का विवाद दो तरीके से सुलझाने की बात शुरू से चल रही है। या तो आपस में सलाह मशविरा करके कोई रास्ता निकाला जाए या फिर अदालत इस मामले में कोई फैसला दे। अदालत के रास्ते में अभी तक उत्तर प्रदेश की सरकार का कोई काम आड़े नहीं आया। आज तक उत्तर प्रदेश की सरकार ने अदालत के फैसले के दायरे में रह कर काम किया है। उम्मीद की जा रही थी कि इस फैसले के कारण वहां पर कुछ भी काम नहीं हो सकेगा। तकलीफ इस बात से हो रही है कि अदालत के किसी फैसले का वायोलेशन भी नहीं हुआ और काम हो रहा है। तकलीफ इस बात से पैदा हो गयी कि अदालत का फैसला जहां खड़ा है, वहां है, उत्तर प्रदेश की सरकार उससे बंधी हुई है और उसके बावजूद मन्दिर के निर्माण का काम प्रारम्भ हो गया है। अभी तक के फैसलों के अनुसार कोई वायोलेशन नहीं हुआ है, विवादग्रस्त जमीन को कोई खतरा पैदा नहीं हुआ है और अदालत में भी जो कुछ हो रहा है उसमें कोई रोक डालने के लिए इन्कार किया है।

अब दूसरा सवाल खड़ा होता है एमिकेबुल साल्यूशन का। एमिकेबुल साल्यूशन के लिए चव्हाण साहब खुद इस बात के गवाह हैं कि बहुत बार नुमाइंदों से आपस में बैठकर बातचीतें हुई हैं। दोनों तरफ से सबूत दिये गये हैं। यह बात अलग है कि अभी तक उसमें से कोई आपसी समझौते का रास्ता नहीं निकला है। अभी थोड़े ही दिन पहले जब यह जमीन खोदी गयी और ऐसे ऐसे पक्के सबूत मिले हैं जिसमें पक्का चबूतरा, पुराने जमाने की ईंटें आदि प्राप्त हुई हैं जो आर्कलाजिकल डिपार्टमेंट के लोगों ने की है और अगर की हैं तो आज वे पब्लिक इन्स्पेक्शन के लिए खुली हुई चीजें हैं।

पहले शुरू में जब विवाद सुलझाने की बात चली थी तब यह कहा गया था बाबरी मस्जिद के नुमांइदों के द्वारा भी कि अगर यह साबित हो गया कि यह मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनायी गयी तो यह हमारे मजहब के खिलाफ है कि ऐसी किसी जगह पर इबादत की जाए। मैं समझता हूं कि मुस्लिम धार्मिक नेता भी इस बात को और गौर से देख लेंगे और अगर पक्के सबूत इस बात के मिले हैं तो किसी तीसरे को बीच में आने की जरूरत नहीं है। बहुत मुमकिन है कि उन्हीं की तरफ से यह फतवा आ जाए कि जबर्दस्ती ऐसी जगह पर जो विवादग्रस्त है, मन्दिर की जगह थी तो यहां मस्जिद के लिए क्यों हाय तौबा करते हो। बाबर के जमाने में तो आक्रमण के अधीन वह मस्जिद बनी थी। वह जमाना और आज का जमाना बदल गया है। अब न तो कोई आक्रमणकारी है न किसी पर आक्रमण हो रहा है। अब तो पुराना घाव फिर से भरे जाने का आपस की समझाइश का, हमदर्दी को पैदा करने का जमाना है।

चव्हाण साहब ने फरमाया कि इरादा क्या है। अभी तो मंदिर बन रहा है उस जगह जहां विवाद नहीं है, ढांचा अपनी जगह पर खड़ा है। चव्हाण साहब, आप भी शायद इस बात को मान जाएंगे कि अगर इस आपसी समझौते में से कोई रास्ता निकल आता, कोर्ट की तरफ से अगर कोई फैसला हो जाता है तो इस मन्दिर को बनने से न आप रोक पाएंगे न मैं रोक पाऊंगा। मैं इसलिए उस समय क्या होगा। कानून के दायरे में खड़े हैं। आप सब लोग इसलिए मैं ऐसा समझता हूं कि अगर कानून के प्रति थोड़ी सी भी इज्जत हमारे दिमाग में है तो फिर कानून के रास्ते में हम आड़े न आयें और समझौते के लिए कोई अगर रास्ता निकल सकता है तो हम सब लोग मिलकर एक समझौते के आधार पर मन्दिर निर्माण करवाने के रास्ते को मुकम्मिल तौर पर करने की इजाजत दें। यही मुझे इस सदन को निवेदन करना है। बहुत बहुत शुक्रिया।

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: Madam, this is the maiden speech of my esteemed friend, hon. Shri Sunder Singh Bhandari. I have had both the pleasure and the privilege of listening to him on a number of occassions because he had been my colleague in this House. He is known for his restraint. He has been known for making responsible statements. He has also been known for his well-reasoned argument and today is no exception. He also realises that the House today is dealing with one of the most emotive issues of the present times which is gripping the nation. In fact, the scam of the century has receded into the back ground because this issue has surfaced. I must really compliment the Members of the BJP for choosing such time and it also lessens the burden on our shoulders, but that is not to say...

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: So you are relieved.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: ...that we should not deal with the whole issue which is before the House with great restraint. There are two things that I must tell you. I will read from our manifesto as to what the Congress policy is so that there is no mistake about what our stand is. The Congress is committed to finding a negotiated settlement of this issue which fully respects the sentiments of both the communities involved. If such a settlement cannot be reached, all the parties must respect the order and verdict of the Court. The Congress is for the construction of the temple without dismantling the mosque. I think that a national solution, a sagacious solution, lies here and today what we find is that an attempt is being made—I hope that I am wrong—to see that this very foundation of a national consensus is being destroyed. I know that it is a very highly technical argument to say that we are building on something where we are permitted to build, that we are building something which is not a permanent structure and that therefore we are not violating the order of the Court. But look at the very first statement of the hon. Home Minister. He has said—he has also underlined—that the Ram Janambhoomi-Babri Masjid dispute has acquired national significance' with large ramifications and the State Government should consult the Government of India before permitting any construction activities in the complex in future. I think that this is a very, very reasonable request. I do not know why people should take such a highly emotive issue with large ramifications, more outside Ayodhya than in Ayodhya itself, take these things in their own hands and try to build something which will create such large tensions all over the country.

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: Why is it that it is not so much in Ayodhya as it is outside Ayodhya?

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: It is so. Fortunately, as I see, there is comparative peace in Ayodhya as it has always been. But the disturbance of peace is elsewhere. The disturbance of peace in this House is even more. But we owe it to ourselves to see that such disturbance is not there anywhere as it is not there in Ayodhya. The point which I am making is that I have my own doubt. The Supreme Court has clearly stated that no permanent struc-

[Shri Murlidhar Chandrakant Bhandare]

ture should be built. But this matter should be clearly clarified and I want the hon. Home Minister also to clarify what he has stated that is, "I am of the view that the Government of Uttar Pradesh has violated the Court order by permitting the work to be carried on." I shall be immensely grateful if he gives us the very text of this order so that we can apply our independent mind. I am not happy. I have read the order which was passed by the Supreme Court. I have read it in the newspapers and it clearly says, "You are building the structure at your cost," that these structures are liable to be demolished. But that is not...

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: If they are violated.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: If they are in violation. But that is not enough. The order further says that no permanent structure will be constructed.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): On which demarcated land?

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: The whole idea is that you have the mosque, the Babri Masjid, which is not to be touched at all. So whether you are *vachan badh* or otherwise, you cannot touch it at all till you get the final decision of the Court in your favour. Please make no mistake. Please alter your promise to the people of this country that this is subject to the decision of the Court, that we are all here bound by the rule of law, that we are all here pledged to secularism. You may criticise pseudo-secularism. But you are also bound by secularism and, therefore, you must assure the people...

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: But the Court is yet to take a decision.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: But what is most important is that when a case of this magnitude involving so many emotional, religious issues is before the court. It is the duty of all parties to see that there is no escalation of the basic sentiments. Unfortunately, the way the activities are carried on, the time at which these activities are carried on—you may have a very good case—I am not saying that—that itself gives rise to a lot of suspicion and sometimes *bona fide* suspision. In this case, I cannot rule it out because Bhandariji had no answer at all. I have carefully noted the question asked by the hon. Home Minister which is: "Is not your intention ultimately to cover the structure?" That is the point and there has been no answer to it. As long as there is no answer to it, the B.J.P. has no benefit of doubt whatsoever. My humble request is—you say that you will not break the order—in a matter like this, it is much better that you are in constant touch with the Union Government.

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: Let me ask...

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: I had also consulted and before you ask, I would further go and say that without trying to interrupt the Court order in your own way, it will be much better if you approach the Court and tell them consistent with this order...

SHRI SUNDER SINGH BHANDARI: The Cour is already seized of the matter.

SHRI MURLIDHAR CHANDRAKANT BHANDARE: The Court is seized of the matter. But when you want to construct and when the words used are "permanent structure", when you use bricks, sand etc., what a temporary structure is known and what a permanent structure is known—something which is not embedded in the earth, something which is not affixed to the earth is a temporary, structure. We need not go into it. But the way the activities are going on, that it is not a temporary structure. One finds that there is a clear indication, a clear evidence that what structure is being built and please do

not pretend this innocence because we know what your idea is, your object is and what you are trying to achieve. But if you care for the country, please remember that Hindu religion is one—I am quoting from Hitopadesh—which is compared to a tree which gives continuously shade to the person who comes to cut that tree. That is the legacy of the Hindu religion. Do not wait till you are convicted for contempt of court. I would request you to take a very temperate, a very reasonable attitude, even if it means an attitude of cooperation, even if it means and attitude to conciliation, I would request that in matters of such construction, you should be in close touch with the Home Ministry of the Union Government and you should take specific permission from the Court, in advance, so that there is no cause whatever for any compliants against you. If your intentions are clear, there is no reasons at all why such a permission should not be obtained or will not be given as long as you are acting within the four corners of law. I am also aware that the Supreme Court is hearing the matter tomorrow. But these are matters for which there are not only legal solutions. They all transcend into the hearts and minds of the people, the faith of the people. I am quite sure with the sagacity which the B.J.P. is showing the accommodation which it has shown in today's it will still be amenable to the only solution of this problem and that is a negotiated settlement. Thank you.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Mufti Mohd. Sayeed.

SHRI M. A. BABY: Madam, this is also a maiden speech.

श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद (उत्तर प्रदेश: मैडम डिप्टी चेयरमैन, यहां तो बहुत बहस हो रही थी, बड़े अच्छे तरीके से, बीच में है मिनिस्टर ने कुछ सवाल किए। मुझे लगता बहस का बेसिक सवाल जो है वह यह है कि यू.पी. के मुख्य मंत्री कल्याण सिंह जी यह कहते रहे हैं बल्कि बी.जे.पी. के बड़े नेता भी यह कहते रहे हैं कि स्ट्रक्चर को.....

They don't mention the mosque.

स्ट्रक्चर को कोई नुकसान नहीं होने दिया जाएगा। That has been the main plank. लेकिन मेरा कहना यह है कि बी.जे.पी. को भी यह मालूम है कि हिंदुस्तान की तहजीब मिली जुली तहजीब है। इनकी सरकार य.पी में है। जब इनकी सरकार नहीं थी तो ये क्या करते, वह मुझे मालूम नहीं है। वह तहजीब इनको मस्जिद को मिटाने की इज्जाजत नहीं देगी और मेरा विश्वास है कि ये खाली मस्जिद को मिटाने का सवाल नहीं हैं, यह एक दिल को जैसे शीशा एक दिल होता है जिसमें अगर कहीं निशान लग जाए तो वह टूट जाता है, यह हिंदुस्तान को तोड़ने का सवाल है। हम उसे जोड़ना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि यहां सब लोग इक्कठे होकर रहें।

Now, let us not dig up the past.

कब बाबर आया, हमारा क्या है बाबर के साथ ताल्लुक ? हम इस जमीन से पैदा हुए हैं, हमारे आबा-व-अजदाद इस जमीन से पैदा हुए, हमारा खून यहां है, हमारी तहजीब यहां है, हमें क्या है कि उन्होंने क्या किया ? आप आज की जनरेशन को क्यों सजा देते हैं ? तीन सौ, चार सौ साल पहले क्या हुआ इससे क्या वास्ता ? मैं यहां का रहने वाला हूं। मुमकिन है मेरे आबाव व अजदाद भी हिन्दूओं। मैं इस तहजीब का वारिस हूं। फिर क्यों ऐसी बात की जाए। आप इंडिया की बात नहीं करते, आप मथुरा की बात करते हैं, वाराणसी की बात करते हैं। आप तो कहते हैं कि आप देश की अखंडता चाहते हैं, आप श्रीनगर में नेशनल फ्लैग फहराना चाहते हैं। कैसे आप नेशनल इंटीग्रिटी को कायम रखेंगे, अगर आप क्रिमिनल पोलायजेशन करेंगे। ? हमें बड़ा दुख हुआ, लखनऊ हायकोर्ट का जजमेंट हमने सुना। बड़ा दुख हुआ कि कैसा माहौल हो रहा है ? तो मेरा कहना है कि यह तहजीब इस तरह के कामों के लिए हमें इजाजत नहीं देता। जैसे पहले एक माहौल बनता था कि दलित की बात है तो दलित बात करें, सेक्युलरिज्म की बात है तो मुसलमान बात करे, बाबरी मस्जिद की बात है, मुसलमान बात करे... **(व्यवधान)**.....मुझे इस बात की खुशी होती अगर हिंदुस्तान को सेकुलर कैरक्टर जिंदा रखना है, अगर देश की अखंडता को, यूनिटी

[श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद]

को बरकरार रखना है तो मुफ्ती मोहम्मद सईद बात नहीं करता, बात करती

All the secular parties including the Congress(I)—

यह इस चीज की बात करते हैं, जैसे इन्होंने सवाल किया मस्जिद को डिमोलिश करने का सवाल नहीं है, सवाल यह है कि जो आप स्ट्रक्चर बनाना चाहते हैं, जो आपका प्लान है मंदिर बनाने का, उसमें अल्टीमेटली जो नक्शा है, हमारी नेइटीग्रेशन की सब कमेटी भी गयी थी जिसमें हमारे बोम्बमई साहब चेयरमैन थे, हमें वहां स्टेट गवर्नमेंट ने कोई रिकार्ड, कोई मैप, कोई प्लान नहीं दिया बल्कि लखनऊ हाईकोर्ट का भी यह आब्जर्वेशन है कि हमारे पास कोई फैक्ट्स नहीं हैं जो आपका प्लान है, जो आप बुनियाद से शुरू करेंगे, पता नहीं उसको उठाएंगे या कैसे करेंगे—तो मस्जिद उसमें आता है। इसलिए मुझे होम मिनिस्टर साहब से यह कहना है कि जैसे जहां से इन्होंने लैंड एक्वीजीशन शुरू किया, फिर हायकोर्ट में एप्लीकेशन हुआ, हायकोर्ट का आर्डर है कि कोई पर्मानेंट स्ट्रक्चर नहीं होना चाहिए, लेकिन उसके बाद वहां इनकी सरकार के हाथ में, नहीं है, लैंड एक्वीजीशन वी०एच०पी० बजरंग दल—जो वहां तामील कर रही है, वह कर रही है लखनऊ हाईकोर्ट का फैसला जो कल आया है, वह एप्लीकेशन दो महीने पहले हुआ है। वह आज का एप्लीकेशन नहीं है। जो लैटेस्ट, जैसाकि आमरेबल होम मिनिस्टर ने कह दिया, बल्कि साफ अल्फाज में कह दिया है—

"However, in regard to the questions as to whether the work is being carried on in the acquired land, the agencies which were doing the work and the purpose for which the platform was being constructed, he was non-committal."

"However, in regard to the questions as to whether tht work is being carried out in the acquired land, the agencies which were doing the work and the purpose for which the platform was being constructed, etc., he was non-committal. Unfortunately, I was not able to get satisfactory answers to these questions which is a matter of concern."

इसी तरह :

The Home Minister says:

"*Prima facie,* I am of the view that the Government of Uttar Pradesh have violated the Court orders by permitting the work to be carried on, on the acquired land. However, the final decision of the Supreme Court will have to be awaited..."

लास्ट में इनका है, जो एक पहर से हैल्पलैसनैस का इजहार है।

"In view of the pending proceedings in the Supreme Court, I have tried to use all persuasive reasoning with the Chief Minister of Uttar Pradesh to have the construction at Ram Janmabhumi-Babri Masjid complex suspended pending final decision on these petitions. The Government will pursue these efforts and will also keep a close watch on the situation."

मैं यह कहना चाहता हूं हाई कोर्ट में केस है, सुप्रीम कोर्ट में केस है। यह केस 1949 से चला आ रहा है। एक सूट लखनऊ हाई कोर्ट के पास है। एक सूट है लैंड एक्वीजीशन का। तो क्या यह गवर्नमेंट आफ इंडिया इस केस में पार्टी नहीं हो सकती है? कैसे इस केस का एक्सपीडिशयन डिस्पोजल होगा? हमें बी०जे०पी० के रहमोकरम पर करना होगा। आज चाहेंगे आज करेंगे, कल चाहेंगे कर करेंगे। सारे देश में माहोल खराब हो रहा है। तो मेरी यह दरखवास्त है कि बी०जे०पी० वाले कहते हैं कि हमें राम मंदिर बनाने का लोगों ने, भारत की जनता ने मेंडेट दिया है। इससे राम को भी आप बांट रहे हैं। हम यह कहते हैं कि हम भारत के इतिहास के वारिस हैं, राम इस इतिहास का एक हिस्सा है। राम को हिन्दू भगवान मानते हैं।

लेकिन हम कहते हैं कि राम का राज्य इंसाफ के लिए मशहूर था । क्या राम के नाम पर खून हो सकता है? क्या राम झोंपड़ी में नहीं रह सकता है ? क्या राम के नाम पर मंदिर बनाने के लिए उसको आप अपना बना रहे हैं । इस देश का भी नहीं बना रहे हैं । तो मेरी यह दरख्वास्त है कि इनको मिला है मेंडेट–राम मंदिर बनाने के लिए और कांग्रेस को मिला है मेंडेट–भारत का सेक्यूलर जिन्दा रखने के लिए । आप लोग दुविधा में, सेंट्रल गवर्नमेंट इज इन ए डाइलेमा ।

जैस आपने 1989 में 9 नवम्बर को शिलान्यास करने की इजाजत दी । जब आपने बाबरी मस्जिद का ताला खोल दिया, 9 नवम्बर को शिलान्यास की इजाजत दी, खुश हो गए यह लोग । 10 नवम्बर को आर्डर दिखाकर बंद कर दिया । क्या सेंट्रल गवर्नमेंट की पालिसी ऐसी ही है । आप डिसीजन नहीं लेना चाहते तो हमारा सुझाव है कि दोनों कोर्ट ने आपको एज पार्टी आना चाहिए और दूसरा इस मसले का जहां तक हमने कह दिया, नेशनल फ्रंट पार्टीज ने कह दिया कि इस जमीन को टेक ओवर करना चाहिए । बड़ी खुशी की बात है, बी० जे० पी० भी जब हम कहते हैं कि,

"We are here to preserve the Constitution of India; we are here to preserve the secular traditions and values of our country."

तो इसमें हमारा यही ख्याल है कि इस जमीन को तब तक टेक ओवर करके रखा जाए जब तक कोर्ट का फैसला हो जाए । जो भी आज तक काम हो रहा है, कहते हैं कि वह कोर्ट का फैसला है । कल का फैसला वह नहीं । लेकिन जो लेटेस्ट हमने टेलीविजन पर भी देख लिया कि पक्का स्ट्रक्चर बनाया जा रहा है, चबूतरा बनाया जा रहा है, परमानेंट स्ट्रक्चर बनाया जा रहा है । हमारी यह अपील है कि सेंट्रल गवर्नमेंट का इसमें डिसीजन क्या है ? हमारे पास तो बहुत बड़े सवालात हैं जो हमें पार्लियामेंट में डिस्कस करने हैं, । हमारे पास नेशनल इंटीग्रेशन का सावल है, हमारी आर्थिक स्थिति का सवाल है, हमारे पास जो यह बैंकों का बहुत बड़ा स्कैम है, इस पर भी हम डिस्कस नहीं कर सकें । सारा अटेंशन इसी तरफ डाइवर्ट हो रहा है । मैं यह नहीं कह रहा हूं कि देश का कोई भला नहीं होने वाला है । इसमें गवर्नमेंट आफ इंडिया डिले नहीं करे । इस बारे में कोई ठोस कार्य करे ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The House is adjourned for lunch till 2.30 Further discussion on this subject will take place at 2.30.

The House then adjourned for lunch at thirty-six minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at thirty-two minutes past two of the clock.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN in the Chair.

Short Duration Discussion on the statement re. developed at Ayodhya—*Contd.*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Now, we continue with the Short Duration Discussion on the Ayodhya issue. Shri Suresh Kalmadi.

SHRI SURESH KALMADI: Madam Vice-Chairman, what we are discussing today is a matter of paramount interest. It is a very serious matter where the whole world is watching. What is at stake is the secular credentials of this great country. The Congress' stand has been made clear by Shri Bhandare, that we are for the Temple. The building of the Temple is not the monopoly of any one single party. It is the monopoly of the people of this country. We all want the Temple, but our stand is that while we build the Temple, we do not want the Mosque to be destroyed.

Madam, ever since the BJP came to power in U.P., they have been acting to a design. They first took control of the

[Shri Suresh Kalmadi]

place. Then, they destroyed all the Hindu temples which existed there. They drove out the *poojari*. The Vishwa Hindu Parishad did all this. I do not know how the Vishwa Hindu Parishad could take upon itself the task. Who gave them the *maktadari* to do what they like, in the name of Hindu religion? Does the Vishwa Hindu Parishad own the Hindu religion? Who gave them the authority to destroy the Hindu temples which existed there? In this connection, I would like to know this from the hon. Home Minister. He was there on Sunday. I would like to know from him whether all the idols which were removed from there, the old idols, are in safe custody. Where is the idol of Hanuman? What about the other idols, which are thousands of years old, which were removed from the sacred place? After all, what is a temple? It is not just any ordinary building. It is a sacred place. Every idol is sacred. Even a small temple is sacred. They have removed these idols and temples which are thousands of years old have been destroyed. No amount of concrete buildings and marble temples can replace the old temples which were there. So, I do not know how the U.P. Government kept quiet, how they allowed the Vishwa Hindu Parishad to destroy the temples from that place. Now, of course, they are moving on to the next round.

Madam, I happened to go there a few months back when the *kar seva* was there. I went there just to see whether the court decision was being implemented, whether there was free access for any one who wants to visit the Ram Janamabhoomi or the Babri Masjid complex and whether the law and order situation there was all right. Madam, we were dismayed to find what was going on there in the name of *kar seva*. All sorts of people all sorts of hooligans, were there. When we went on a fact-finding mission, we were stoned by these very people. It is very clear that today there is no free access to the Ayodhya temple or to the Babri Masjid. Nobody can go there without the permission of the Vishwa Hindu Parishad. The police is there. The Chief Minister has told the Home Minister that enough police is there, but I would like to state that the police is most ineffective. They cannot do a thing because the writ of the BJP-led U.P. Government does not run in that complex. I have warned them earlier, I warn the BJP now that they are going to pay very dearly for that; this movement is getting out of their hands. I have told them that it is getting into the hands of very dangerous people. In the name of the vote-bank politics they were playing with fire. Things would get out of their hands.

Today they are not in a position to maintain law and order in that area. The Home Minister had gone there yesterday. I do not know why he did not visit the actual site where the construction took place. He saw it from a distance. (*Interruptions*). He did not go to the actual site. I do not know why. It could be that if he had gone there the law and order situation might have worsened. He is justified in not creating a situation which might get out of hand. So, I would like the Home Minister to clarify as to why he did not visit the actual site where the construction was going on. Having gone there, he should have visited the actual site. What were the reasons which compelled him not to go to the site? More than that, what would be the attitude of the BJP Government in U.P. after the decision of the Supreme Court which is due to arrive in a day or two?

SHRI G. SWAMINATHAN (Tamil Nadu): The Home Minister has said that the work was in progress. That means, he has visited the site and seen for himself that the work was in progress.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): He has said that he will clarify in his reply.

SHRI SURESH KALMADI: Madam, the Supreme Court decision is due in a couple of days. I do not know whether the BJP Government in U.P. is going to listen to the verdict. Even if the

BJP Government listened to the verdict, will it be able to act, will the VHP and the Bajrang Dal who are present there on the site, allow the U.P. Government to intervene? So, the first thing is whether there is the will of the U. P. Government to intervene, and the other is whether the Bajrang Dal and the VHP will allow the U. P. Government to intervene. It is a very serious matter. I am very worried that they have given a call for all the Sadhus to rally round them. I do not know why we are waiting for any action, any decision of the court. The Home Minister himself has said that a *prima facie* case is there. If there is the *prima facie* case, I think the Government must take action immediately because they are getting organised. They are building a fortress there today. Right now, while I am talking here, there is a fortress being built at Ayodhya, a human wall is being built at Ayodhya. I am not so much worried about the seepage which might destroy the foundation of the Babri Masjid. What I am more worried about is the trenches filled by human beings, and no amount of non-violent methods be able to remove them from there. A very grave situation is, at the moment, building up there. A lot of tensions are built up there. I do not know why you waited so long.

The Home Minister is aware of the BJP call given one month back that they were going to start construction on the 9th of the month. The Home Minister was aware that in the last one month arrangements were being made for the concrete wall entering into that area. I am sure all the reports were coming in. Why you didn't act in the last one month, why you didn't call them for a discussion in the last one month, I do not know. Why did you wait till the very end? And now they have got ready—they are fully prepared—and we are not fully prepared. I would like to know what concrete action the Home Minister will take at this late juncture.

Madam, I am also very much worried about the security of the area. The Home Minister has offered five platoons but they have not taken them. They are just happy with a couple of platoons and a few hundred policemen, which is not adequate. The Home Minister must send reinforcements, even if it is the military, to surround and guard the Babri Masjid and the entire area because there is going to be a law and order problem. Whatever laws have to be passed what ever is to be done; we will be ready in this House to give him full authorization, full backing. But I think it is not just a local issue, the Ram Janamabhoomi-Babri Masjid issue. It is an issue which the whole country is looking at, and fast action is called for.

Madam, I would like to ask the hon. Minister as to what the Government is doing to safeguard the idols which have been removed, what action is being taken for free access for anybody who wants to visit the Ram Janamabhoomi complex because I do not know what is happening. Whatever is happening is not coming on Doordarshan. I have seen a lot of construction activity on the BBC; they are giving it. I do not know why Doordarshan is not giving it. Why are you not showing it to the public, what is actually happening?... (*Interruptions*)... I think there should be more coverage by Doordarshan of what is actually happening in that area, how many people are going there, how much of security is there, how much of police is there and what sort of actual * is prevailing in that area in the name of Vishwa Hindu Parishad.

Madam, again, before I end, I would like to say...

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Madam the word * highly objectionable. ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Madam, through you I wish to appeal that there are people, with whatever commitment they have, and we are nobody to call them by any name which is not parliamentary. If they are involved in anti-social activities, then let it be for the authorities to label them thus... (*Interruptions*)...

---

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI SURESH KALMADI: Madam, I wish Renukaji will get an opportunity to go there... (*Interruptions*)... I am not even talking of that. There are people. In the name of the Vishwa Hindu Parishad. in the name of the BJP, anti-social elements are going there in a big way.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: How can we label them?

SHRI SURESH KALMADI: We have seen. You go there once before you say something. Go there and see the tension in that area... (*Interruptions*)...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: By virtue of being on the spot if we say that everybody is associated with such activities it doesn't speak highly of us in Parliament... (*Interruptions*).

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : महोदय, पहले ही एक घटना हो चुकी है । ऐसा कहना बहुत ही अनुचित है (**व्यवधान**) मैं उनसे अपील करता हूं (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I will look into the record and, if there is anything unparliamentary, I will remove it.

***श्री प्रमोद महाजन** (महाराष्ट्र) : कहना बहुत अनुचित है . . . (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): That is not what he said.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : यह कोई तरीका नहीं है । मैं भी कह सकता हूं कि फलां फलां मेम्बर है । आप मुझे इजाजत दीजिए, मैं कह देता हूं । उन्होंने ऐसा क्यों कहा ? उनको इसको वापस लेना चाहिए ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Let him explain what he said.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : आप मुझे इजाजत दीजिए, मैं कह देता हूं कि अमुक अमुक सज्जन *हैं । आप मुझे इजाजत दीजिए मैं उनको *कह देता हूं . . . (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Let him explain what he said.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : नहीं तो मुझे इजाजत दीजिए कहने की कि अमुक सज्जन *हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mathur Saheb, please sit down. Please sit down. I will ask him. Please sit down. I will ask him... (*Interruptions*)

Please sit down. Shastriji, please sit down. You have to, sit down... (*Interruptions*).

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं चैंडम से इजाजत चाह रहा हूं कि वे इजाजत दें कि मैं *कहूं ।

श्री विष्णु कांत शास्त्री : मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप अपने दल के मेंबरों को नियंत्रित करें ।
. . . (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mathurji, please sit down. Please sit down now. Let me talk to him. Please sit down. Mrs. Renuka Chowdhury has raised a point of order... (*Interruptions*)

You cannot keep on talking to the Chair. Please sit down.

Yes, Mr. Kalmadi... (*Interruptions*)

Please sit down. I am not allowing this to go on record. Mrs. Renuka Chowdhury has raised a point of order. I am going to ask the hon. Member... (*Interruptions*)...

Everybody cannot speak at the same time.

*Erpunged as ordered by the Chair.

Yes, Mr. Kalmadi, if you have said any objectionable thing, I appeal to you to withdraw it.

SHRI SURESH KALMADI: I am not saying anything objectionable. I am saying that there are some * elements there, anti-social elements there... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Let him finish now.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: Majority of the Congressmen are*... (*Interruptions*)

SHRI PRAMOD MAHAJAN: The fact finding committee which went there was full of. All* selected* were there... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I appeal to the Members. Let him conclude now.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: Let him deny it, or let him withdraw it ... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I cannot force a Member to withdraw what he is saying.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: Let him withdraw it.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: The fact finding team which went there, was full of*. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please conclude now, Mr. Mathur.

श्री विष्णु कांत शास्त्री : सदन के नेता कृपया यह बतायें कि आपके दल में कैसे लोग हैं ... (**व्यवधान**) ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): It will not go on record.

Please conclude, Mr. Kalmadi. (*Interruptions*)

Let him conclude now.... (*Interruptions*)

Please sit down. Let him conclude. Please sit down. Let him conclude now. I am not allowing any more interruptions. Please sit down.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं चाहता हूं कि आप बतलाइए, कि आपको कहां कितने * मिले ? कितने परसेंट * मिले, बतलाइए । ... (**व्यवधान**) ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please conclude, Mr. Kalmadi... (*Interruptions*)

Please, Mr. Mathur.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : वहां, कांग्रेस में कितना परसेंटज है, वे मैं बताता हूं । कांग्रेस में कितने * हैं यह मैं बताता हूं ।

श्री सुरेश कलमाडी : मैंने बी०जे०पी० वालों को थोड़ी कहा, मैं ऐसा थोड़ी बोल रहा हूं ।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं कहता हूं कि आपको यहां 90 परसेंट * हैं । ... (**व्यवधान**) ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Mathur, please sit down. Mr. Mathur, please sit down. All this is not going on record. ... (*Interruptions*)

Mr. Meena, please sit down. Let him conclude. No more interruptions... (*Interruptions*)

No. Please sit down. I am not allowing interruptions. Interruptions will not go on record. Please sit down. Mr. Kalmadi is going to conclude now. Please sit down.

Mr. Kalmadi, please conclude now.

SHRI SURESH KALMADI: Madam, all I have said is.....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): That is over. You just conclude.

*Expunged as ordered by the Chair.

SHRI SURESH KALMADI: I have not mentioned that the BJP is involved in it at all. I am only saying that some *are there. Why are they taking objection to that? When I am not naming you, why are you naming yourselves? (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): All right. Please conclude now.

श्री विष्णु कांत शास्त्री : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदया,

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Are you raising a point of order? You cannot get up at every sentence.

श्री विष्णु कांत शास्त्री : मैं सदन के नेता से चाहता हूं कि वह अपने दल के लोगों को नियंत्रित करें। करेंगे कि नहीं? अगर आप नियंत्रित नहीं करेंगे तो हममे कैसे अपेक्षा रखेंगे कि हम नियंत्रित रहे। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): There is no information. If you are raising a point of order, raise a point of order... (*Interruptions*) If you are raising a point of order, kindly state the rule. Otherwise sit down.

Mr. Kalmadi, please conclude... (*Interruptions*)

SHRI SURESH KALMADI: Madam, in conclusion I would like to say that the Government should act before it is too late. I would also like to repeat my warning to the BJP to be very careful of the VHP and the Bajrang Dal. It is my duty to warn you.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Don't go on giving warnings and suggestions on what relations we should have with the VHP. You be concerned about yourselves.

SHRI SURESH KALMADI: One day when they contest elections as a separate party, at that time you will see. You are fanning communal passions. You are backing wrong people. That is all I want to say. It is not an internal party matter. It has affected the whole country. (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Kalmadi, please conclude.

श्री विठ्ठलभाई मोतीराम पटेल (गुजरात) : इसी को तो * कहते हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please, Mr. Patel, now let him conclude. We are running out of time. The hon. Home Minister has to go.

SHRI SURESH KALMADI: I warn the BJP not to play politics of vote which will fan communal passions.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: You play politics of religion; we play politics of vote.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): You please ignore interruptions.

SHRI SURESH KALMADI: I request the Home Minister to take a very tough stand. The Supreme Court decision is going to come in a day or two and if the UP Government does not listen to the voice of reason, I think the Central Government would have no option but to dismiss the UP Government immediately.

श्रीमती रेणुका चौधरी : यह तो बहुत बड़ी थेट है।

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal): After visiting Ayodhya the hon. Home Minister has come out with a long statement giving us facts without spelling out what action he proposes to take to remedy the situation.

My friend on the other side, Shri Suresh Kalmadi, was just now asking what construction work is going on there. He should not have asked that because from this side, Mr. Bhandari has already spelt out very clearly that they are building the Ram

*Expunged as ordered by the Chair.

Temple there, because they had pledged to the people during the election that they will build the temple. They have already started construction of the temple. They have made it very clear. So, this question is irrelevant now. The fact is that the construction of Ram Temple has already started. Whether it is a permanent structure or a temporary structure, what the court will say, these are all legal niceties. But the fact remains that the issue of Babri Masjid-Ram Janmabhoomi is going to be settled by the BJP Government in Uttar Pradesh by unilaterally constructing a temple there. When the hon. Home Minister met the UP Chief Minister, he asked so many questions of the Chief Minister about the agency which is constructing and what construction is taking place, but the Chief Minister kept silent about all these questions. He did not reply. This is the main issue. The land in question is a disputed one and has been taken over by the BJP Government of Uttar Pradesh. Indeed the construction of the Ram Temple has started. Look at the timing. Synchronising with the Parliament session, the construction of Ram Temple has begun in Uttar Pradesh. Who is doing it? The Uttar Pradesh Government itself is doing it or any private agency has been doing it, that question has not yet been cleared. Why this synchronising has been done with the Parliament session? My view is definitely to boost the morale of Hindu fundamentalists in the country, the BJP has chosen this particular timing of the Parliament session. There will be discussion, there will be noise and through that they will get enough publicity and propaganda so that the fundamentalist viewpoint and philosophy is propagated throughout the country.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: The date for it was fixed much earlier nad the summons for the Parliament session was issued much later. So, I don't know who is responsible for the date.

SHRI SURESH KALMADI: You knew when the session will start. So, you fixed the date.

श्री संघ प्रिय गौतम : आप इस मसले को उठाते ही नहीं सेशन में तो काहे को पब्लिक को मालूम पड़ता ।

SHRI SUKOMAL SEN: The construction on the disputed land has been started. This land had been taken over by the Uttar Pradesh Government. The Chief Minister could not say which agency had started the construction. Is it the Uttar Pradesh Government itself? If the Uttar Pradesh Government itself starts the construction, that itself is unconstructional, because in a secular State, a State Government cannot construct a temple on its own. They cannot do it. It should not do it. If it is giving to a private agency, which private agency is doing the construction work? In that case they cannot do it on the land taken over by the State Government. Has the land been transferred to the agency for construction? All these issues come up. These issues are not very clear. The tactic of the BJP Government is very clear now. They say they are not violating the court order. The court order is that the structure of the Babri Masjid Ram Janmabhoomi should not be touched. They are not touching it. Without touching also they can construct the Ram Temple. That is what they are doing. Around that structure they are building up a platform; they are building up the Singh-Dwar. The question that was raised by the Home Minister is pertinent. The question that he raised was whether it will cover the structure itself. Yes, Madam, this structure is going to be covered by the construction that they have taken up around the Ram Janambhoomi-Babri Masjid complex. Ultimately one day we will find that the entire structure of the Ram Janambhoomi-Babri Masjid complex will be covered by the newly built Ram temple and the Ram Janambhoomi-Babri Masjid structure will be a structure within the precints and within the walls of the Ram temple. Then with the seeping of water whether it will be collapsing or they themselves will destroy it, is a different matter. But this structure is going to be covered by the construction which they have undertaken. So this is how they are going to do it.

[Shri Sukomal Sen]

It is a national matter. It relates to the sentiments of crores of people in the country. It not only concerns the minority people but the bigger section of the population also. It is not that the entire Hindu population of the country is lined up behind the BJP or the Vishwa Hindu Parishad. It is a fact that majority of the Hindu population are behind other perties. It is a question which relates to the sentiments of the whole population of the country, minority as well as majority of the population. Can they do it? Yes, they are going to do it. Now. the question of the court verdict comes. Madam, I am not casting any aspersions on the court or on the judgement. But today morning when I looked at the newspaper and read the judgement of the Lucknow Bench of the Allahabad High Court, it was a majority judgement against a minority dissent. I was shocked at the nature and colour of the judgement. ... (*Interruptions*) ...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, I am on a point or order.

SHRI N.K.P. SALVE: Madam, I am on a point of order.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Yes, Dr. Jain.

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Madam, I want you to give your ruling on the issue. While trying to express his views the hon. Member said...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): He has not cast any aspersion... (*Interruptions*) ...No aspersions on the judiciary will be allowed in the House. (*Interruptions*) I will not allow any aspersions against the judiciary.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: He said: "It is a majority judgement against a minority dissent." A note of dissent is always a minority, it will be never a majority. He said, about the colour of the judgement'. What does he mean by 'colour of the judgement'?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): It is only just a manner of speaking. Mr. Mahajan, I don't think there is anything in that... (*Interruptions*) ... He is entitled to say.

SHRI N.K.P. SALVE: Madam, what about my point of order? ..(*Interruptions*) ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I have already told you, I will not allow any aspersions against the judiciary.

SHRI N.K.P. SALVE: Madam, I maintain, in this House or elsewhere any judgement of any court can be discussed. One can have one's views on the legalities or illegalities. What is prohibited in this House is to say something which would impute motives to the judges. That should not be done. I am entirely with Mr. Sukomal Sen, what he is saying about the content of the matter. But there is one sentence "look at the colour of the judgement" to which I object. That is not fair. He can be critical of the judgement. I myself won't agree with the judgement at all. But I do not impute motives to the judges. I maintain that the judges have gone wrong. The judgement is not correct. Maybe, they think differently and I think differently. That is what I want to request him, through you, Madam. That is my point of order. Nothing should be said which would be tantamount to imputing motives to the Judges.

SHRI SUKOMAL SEN: Madam, I am not imputing any motives. But this is Parliament having supreme authority. We have to look at the interest of the whole country. That is why I referred to it. I have no intention of casting any aspersions against any Judge or the High Court or the Supreme Court.

Now the Home Minister himself is awaiting the Supreme Court order. The Supreme Court has clearly said that no permanent construction should be allowed there. They have made it very clear. Now they have raised a question whether that is a permanent construction or a temporary construction. Madam, the Ram Temple cannot be a temporary construction with card board or files. It must be a permanent construction. Without permanent construction, it cannot be Ram Temple because they have confirred that they are building

Ram Temple. This is the main question. Unfortunately, the Home Minister is worked up with legal niceties. Now, my apprehension is that when the Uttar Pradesh Government is taking such a disastrous step, it may lead the country to a serious situation, a conflagration and our reputation at the international level is going to be downgraded. At this time, the Home Minister's inaction is paining me. Going by past records, I have some doubts in my mind. In November 1989, when "Shilanyas" was allowed, the Congress Government was in power. It was allowed in the disputed site. I cannot forget that. Is the Home Minister concerned anough to protect the country, to protect the Constitution and to maintain and ensure the rule of law? If so, the Home Minister should have acted promptly. But he is not acting. He is drifting and he is wasting time. Nobody knows what will happen tomorrow or the day after tomorrow. The situation may go out of order. What was the difficulty for the Home Minister to acquire the disputed land? Is the construction permissible? It is not permissible. The Central Government can take control of it, acquire it and maintain it according to the wisdom of the Central Government. Whether they will demolish the construction or not, whether there will be a new construction or not depend upon the Central Government. But they can acquire it. Then Uttar Pradesh Government or any private agency cannot commit any mischief on the disputed land and the country can be saved from a holocaust. But that is not being done by the Home Minister. Is the Home Minister maintaining a compromising attitude? I could understand it when you allowed "Shilanyas" in November 1989. You had some electoral compulsions and perhaps, you looked at them out now; what compulsion do you have? An election has just been held there. It will take place again only four years hence. what is the fear?

SHRI CHATURANAN MISHRA: (Bihar): Are you sure?

SHRI SUKOMAL SEN: If they collapse, that is a different thing. But according to the time-table,...*(Interruptions)*... it will take place again four years hence.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please conclude now.

SHRI SUKOMAL SEN: If you want to protect the unity and integrity of the country, if you want to maintain the communal harmony, if you want to maintain and ensure the rule of law, it is high time the Central Government stepped in firmly and acquired the land so that all misdeeds are undone. With this request, I conclude and I hope that the Home Minister will should his inaction and act.

श्री सयैद सिब्ते रजी : (उत्तर प्रदेश) मैडम जब-जब इसे सोचा है, दिल थाम के बैठा हूं, इनसान के हाथों से इनसान पे क्या गुजरी ।

इस देश में राम और रहीम के नाम पर काफी खून बह चुका है । मस्जिद और मंदिर के इशु के ऊपर भी खासतौर पर सन् 1990 से लेकर आज तक बराबर तनाव बना हुआ है ।

सन् 1990 में एक यात्रा चली थी, जो शायद आपको भी याद हो । उस यात्रा का इख्तमाम किस तरह से हुआ, यह यात्रा चलने दी गई और क्यों नहीं चलने दी गई, इसकी बहस में मैं नहीं पड़ना चाहता । लेकिन इतना जरूर कहना चाहूंगा कि जबरदस्त तनाव अयोध्या और अयोध्या के बाहर विशेष तौर पर उत्तर प्रदेश के अंदर पैदा हुआ ।

आज बी०जे०पी० को जो बुरा कह रहे हैं, निश्चित रूप से उनका यह अधिकार है, लेकिन मैं उन लोगों को और ज्यादा बुरा समझता हूं जिनके कारणवश कुछ ताकतें देश की सत्ता में कहीं-कहीं पहुच गई, जो मुख्य रूप से हमारे जो बुनियादी मानवीय और जो हमारे बुनियादी जम्हूरी, लोकतांत्रिक और संवैधानिक उसूल है, उनमें यकीन नहीं रखती । निश्चित रूपसे एक तरफ तो हम उन ताकतों के लिए यह कहते हुए सुनते हैं कि इलैक्शनों कमीशन के सामने हम जो अपना हलफनामा दाखिल कर रहे हैं, या डैक्लेशन दे रहे हैं, उसमें संविधान के प्रति हम कसम खाते हैं, चाहेके अंदर या सदन के या सदन के बाहर, चाहे चुनाव का जमाना हो या चुनाव का जमाना नहो, लेकिन जब हम उनके अमल की तरफ नजर उठाते हैं, जो हम देखते हैं कि चुन कर आने

[श्री सैयद सिब्ते रजी]

के बावजूद जो जनमत मिला और जिस पार्टी को भी मिला हो और जिसकी भी सरकार उत्तर प्रदेश में बनी हो वह यह नहीं कह सकती कि उसको जनमत का वोट इस आधार पर मिला है कि वह किसी धर्म विशेष या जाति विशेष का रिप्रेजैंटेशन कर रही थी या प्रतिनिधित्व कर रही थी । निश्चित रूप से लोकतंत्र के अन्दर किसी भी पार्टी की सरकार जब चुनकर सत्ता में पहुंच जाती है तो उसको हरेक का मफाद, हरेक के अधिकारों की चिंता होनी चाहिए । यदि ऐसी सरकार केवल एक पक्ष के बारे में सोचने लगती है तो निश्चित रूप से उसके बारे में अगर सवालात किए जाते हैं तो गलत बात नहीं होगी । अयोध्या के अन्दर मुतनाजा जमीन है इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता वह जमीन एक्वायर भी की जा चुकी है इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। हाई कोर्ट ने उस एक्विजीशन को सही मान लिया है उस अर्से तक जब तक कि उस पर पूरा फैसला न हो जाए, इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता, लेकिन आज जो कल तक कोर्ट की बात नहीं करते थे, खुशी की बात है कि उनके हृदय में इतना परिवर्तन तो आया है, उनके दिलो-दिमाग और उनके सोचने के तरीके में इतनी तब्दीली तो आई है कि वह आज कोर्ट की बात करते हैं और कहते हैं कि कोर्ट का जो भी फैसला होगा वह हम मानेंगे । मैं इतना अर्ज करना चाहता था मैडम, कि उस एक्विजीशन के साथ-साथ जो शर्तें लगाई गई, वह शर्तें लगाई गई कि किसी किस्म का स्थायी निर्माण उस स्थल पर नहीं होगा जिसको एक्वायर किया गया है । एक्वायर किया गया पर्यटन विभाग के नाम से लेकिन आज वहां पर जो हो रहा है क्या वह पर्यटन विभाग की तरफ से हो रहा है ? ये बड़े सवालात हैं । अभी गृह मंत्री जी वहां गए हैं और उन्होंने अपने बयान में भी कहा है, अपनी शंकाएं भी उन्होंने व्यक्त की हैं कि किन-किन बातों की उनको संका है । ये संगीन हालात जो बने वह इसलिए बने कि हमने धर्म को राजनीति में परिवर्तित करने की कोशिश की है और हमें उसको रोकना होगा । नहीं तो देश का बहुत बड़ा नुकसान होगा और उसको रोकने के लिए हमें न्यायपालिका और सरकार दोनों की तरफ नजर उठा कर देखना होगा । न्यायपालिका की ओर से जो भी 15 तारीख निश्चित हुई है, मुझे उम्मीद हुई है कि देश में संविधान की रक्षा के लिए देश में धर्म-निर्पेक्षता की रक्षा के लिए, देश में जम्हूरियत और लोकतंत्र के उसूलों की रक्षा के लिए, केन्द्रीय सरकार का जो दायित्व है वह निश्चित रूप से वह निभायेगी मैं सताईश करना चाहूंगा, मैं एप्रीशिएट करना चाहूंगा अपनी सरकार के उन इकदामात के जो उसने अभी तक किए हैं निश्चित रूप से इतने बड़े सेंसटिव इश्यू के ऊपर,

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है,
मजा तो तब है कि गिरते को थाम ले साकी।

हिन्दुस्तान के अंदर कांग्रेस का इतिहास यह है कि उसने जजबात को न कभी भड़काया है और न जजबात के साथ कभी खेलने की कोशिश की है और हमें खुशी है कि उसी परिपाटी उसी रास्ते के ऊपर आज भी हमारी पार्टी की सरकार चल रही है हम जजबात में बहक सकते है और हमें बहकाने की कोशिश भी की जा रही है, लेकिन निश्चित तरुप से वक्त आने पर जैसा कि गृह मंत्री जी ने कहा है जो मुस्बत इकदामात हैं वे उठाए जायेंगे । आज जो परिस्थिति है उस परिस्थिति के अन्दर और जो हालात हैं उन हालात के अंदर मैं सिर्फ यही कहना चाहूंगा कि कोई रास्ता ऐसा निकाला जाना चाहिए जिससे यह जो मसला है वह हल हो जाए। मैं माननीय गृह मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि क्या कोई आप इस तरह के जो आपने मुख्य मंत्री जी से बात की है और लोगों से बात की हैं क्या कोई ऐसा पैकेज लाने का प्रयास किया जा रहा है कोशिश की जा रही है जिससे इस मामले के ऊपर हमेशा हमेशा के लिए नतीजाखेज गुफ्तगू के बाद कुछ न कुछ फैसला हो सके। नंबर दो मैं यह कहना चाहूंगा कि निश्चित रूप से इस मामले में काफी देर हुई है कई वर्ष इस फैसले में गुजर गए हैं। हालिया मामलात ; भी देखें हाई कोर्ट में मुकदमा पड़ा हुआ है मुकदमा चल रहा है लेकिन मुकदमे का कोई फैसला नहीं हो रहा है। सुप्रीम कोर्ट के इंटरवेंशन की आवश्यकता है। मैं यह सुझाव रखना चाहूंगा कि गृह

मंत्री जी इस बात पर विचार करें कि हाई कोर्ट में जो मुकदमा चल रहा है वह सुप्रीम कोर्ट टेकअप कर ले और फाइनल डिसिजन के लिए कोई स्पेशल बैंच बना दी जाए और उस बैंच के तहत इस कजिए का किसी तरह से निपटारा कर दिया जाए, क्योंकि मुल्क की आशती और अमन से बढ़ कर कोई चीज नहीं है। लेकिन यह अमन और यह आशती यकीनी तौर पर डराकर और धमका कर लोगों के अंदर टैरर पैदा करके नहीं, बल्कि संविधान के जरिए हमारी जो हिकमते अमली रही है जम्हूरियत के अंदर उसके जरिए आना चाहिए एक तरफ तो बी०जे०पी० कहती है, बी०जे०पी० के मुख्य मंत्री कहते है कि हम किसी तरह का कोई नुकसान जो मुतनाजा इमारत है उसको नहीं पहुचाएंगे लेकिन दूसरी तरफ जो वी०एच०पी० के जो हमारे जनरल सेक्रेटरी है सिंघल साहब, वह बार-बार यही कहते है कि हमें शिलान्यास गर्भगृह तक पहुचना है और वहां मंदिर बनाना है अभी कोई फैसला अदालत के जरिए नहीं हो सका है। इस तरह के भड़काने वाले जो स्टेटमेंटस हैं ऐसे स्टेटमेंटस के बजाये बेहतर यह होगा कि आग बुझाने की कोशिश की जाए। मैडम-हमारे मुल्क के अन्दर हर व्यक्ति को हर शहरी को, हर नागरिक को अपने अकीदे के लिहाज से अपने विश्वास के लिहाज अपन मजहब पर अमल करन की इजाजत है और अपने अकीदे के लिहाज से उसको इस बात का अधिकार है कि उसकी जो इबादतगाहें है, जब दस्ती उन पर कब्जा न किया जाए।

मैडम, मुल्क के माहौल में तनाव है। इस तनाव को हम सब को मिलकर कम करने की कोशिश करनी चाहिए और मुझे उम्मीद है कि गृह मंत्री जी निश्चित रूप से वक्त आने पर ऐसे कदम उठाएंगे जिससे रूजपसंद ताकतें रिवाइवलिस्ट ताकतें, वह ताकतें जो हिंदुओं को मुसलमानों से अलग करना चाहती है वह ताकतें जो मुसलमानोंको हिंदुओं से अलग करना चाहती ह उन पर रोक लगाएंगे और हमारा मुल्क जो कि जन्नत निशां हिंदुस्तान कहा जाता है अपनी परंपराओं से कहा जाता है वह अपनी परंपराओं अपने अकदार, अपनी खुसीसियत, अपनी रंगारंग तहजीब, अपनी मिलीजुली तहजीब का परिचम लेकर आगे बढ़ता रहेगा और जो इस परचम को नीचा करने की कोशिश करेगा चाहे वह कितना ही ताकतवर क्यों न हो, चाहे वह जितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, सरकार को उससे बड़े शोर के साथ और बड़े जोश के साथ, पूरी ताकत के साथ निपटना चाहिए तभी यह मुमकिन हो सके कि हम इस मुल्क में उन तकाजों को पूरा कर सकेंगे जो हिंदुस्तान के आजाद लोग हम से करते है। शुक्रिया।

SHRI YASHWANT SINHA: Madam Vice-Chairman, I must confess right in the begining to my very serious disappointment at the statement of the Home Minister. This is a statement of the Home Minister of India. It is not the according to this statement askes him But what does this show? We know that the Home Minister told us here in this House. he said outside also, that he had called the Chief Minister of U.P. for a discussion. The Chief Minister of U.P. took two full days in responding to his invitation to meet him. Then he comes and meets him. The Home Minister, according to this statement, askes him very relevant questions. Which are agitating the minds of the Members of this House. But what did the Chief Minister of U.P. do? According to the Home Minister, he is non-committal, he does not answer those questions and he goes back. The Home Minister himself goes to U.P. A team of officials of the Government of India goes to U.P. According to the newspaper report, he visits the site, accepts *Prasad,* accepts a *chadar* and looks at the disputed site from the safety of that disputed structure. He does not visit the site and then he tells us that the security is not proper, it lacks, and advises the U.P. Government how the security should be beefed up and the U.P. Chief Minister responds though a letter and says that everything is hunky-dory, everything is fine. This is the picture. Now the Government of India seems to be waiting again helpless ly for tomorrow when this matter will

[Shri Yashwant Sinha]

come before the Supreme Court and then they hope that the Supreme Court might pull them out. But what if the Supreme Court does not pull them out? Madam, the issues are very clear to my mind. They have been raised by other Members, but some of them will bear repetition.

One is the technical aspect and let us not be in doubt in regard to the technical aspect at all. Let there be no doubt. When Mr. Bhandari was speaking, an impression was sought to be created as if some of these issues were vague they were not very clear. Madam, he was saying that the land had been permanently transferred to the U.P. Government. That is not true. The Court Order very clearly says, "The State may take possession of the notified land and may make arrangements for the purpose notified in the notification, but no structure of a permanent nature shall be put up thereon, etc. etc. And the taking over of possession shall be subject to further orders of the Court," So, let us be very clear that it is only an interim order of the Court, that the title of the land has not been permanently conferred on the U.P. Government and that, perhaps, is the reasons why the Court has also ruled that there shall be no permanent structure. If it was a permanent transfer then they need not have said that no permanent structure would be built.

The second point arising out of this, Madam Vice-Chairman, is that if using concrete, if using steel does not constitute the building of a permanent structure, then we will have to revise the whole meaning of various words in the English language and our engineering concepts.

SHRI VIREN J. SHAH (Maharashtra): "Permanent" in the Vedantic sense.

SHRI YASHWANT SINHA: Yes, "saswat". Therefore, there is absolutely no duobt, and I am saying with full sense of responsibility in this House, that the U.P. Government has clearly, not *prima facie* as the Home Minister said, violated the order of the court. Whether the court ruled on this particular point or not, let the House be in no doubt, let this country be in no doubt, here is a legally constituted Government in a particular State which is defying the injunctions, directives and instructions of a court.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Violating the orders of the court.

SHRI YASHWANT SINHA: Violating the instructions of the Court. Let there be no doubt about that.

The third point, Madam Vice-Chairman, is that when Mr. Malaviya was raising a point Mr. Sunder Singh Bhandari—he is not here—sitting on his seat, said that the land had been leased out to Vishwa Hindu Parishad. Has it been leased out? Because, the court order says that it cannot be either transferred or aliented. This is the wording of the court order. Has the U.P. Government really leased it out to the V.H.P.? Can Home Minister please stand up and say that it has been leased out. Did the U.P. Chief Minister tell him that it had been leased out? If it has been used out, then it has been alienated, it has been transferred, and this, again, is a violation of a court order. So, these are the technical aspects.

On the political issue, Madam Vice-Chairman, why has the whole thing come up now? Whom is the BJP bailing out? The Parliament was going to meet. They knew that we had very important issues to raise. We have important issues to corner the Government with. But, why was the whole attention diverted to Ayodhya? Somebody in the BJP will have to explain why this has happened. Is there any nexus? Mr. Murlidhar Bhandare was raising it innocently. But there is much more to it than meets the eye. Therefore, Madam Vice-Chairman my point is that the Government of India cannot be a silent spectator. Mufti Mohd. Sayeed had suggested that the Government of India should become a party. It is not a party before the Supreme Court. It is not a party before the High Court. How can the Government of India just sit helplessly and let some citizens of the country take up this matter in a court? The Government of India must became a party in the court dispute and the Government

of India must produce all the evidence that it has about the recalcitrance of the U.P. Government. These individuals who have gone to the court against the whole might of the U.P. Government are mere individuals and citizens of the country. You see yesterday's judgement of the Allahabad High Court, Lucknow Bench. What have they said? They are not convinced that from the seepage the foundations of the disputed structure will be weakened or will not be weakened. There is nothing more in it than that. The Government of India has sent experts. Their report has come. We should know what exactly and how exactly the structure is going to be affected as a result of this particular engineering which has been devised by the U.P. Government. Is it their intension that they will not touch the mosque and the mosque will fall by itself because of the so-called construction work they are doing so that the problem is solved once and for all?

Madam Vice-Chairman, these are issues which are of great significance. Let this be very clearly understood that this is a dispute which does not concern Uttar Pradesh alone. It is not a dispute which the U.P. Government alone will be able to solve. It has always been regarded by all of us as a national problem, as a question of national importance. If this problem has to be solved, then all of us must get involved in it. It is now the responsibility of the BJP Government in U.P., it is the responsibility of the Congress (I) Government at the Centre to make sure that we find an amicable settlement. When the Home Minister got up to ask Mr. Bhandari as to what their intention was in regard to the ultimate rate of the structure, he was non-committal like the U.P. Chief Minister. Can somebody from the BJP get up here and now and say that it is not the intention of the BJP, the VHP, the Bajrang Dal, the RSS and all the connected organisations that the disputed structure, namely the Babri Masjid, shall not be interfered with, shall not be destroyed, shall not be demaged? Can this assurance come? If that assurance comes, I shall be the first to applaud that assurance. I shall be the first to say, "Please go ahead and construct the temple were you want to construct it." But that assurance must be there. It is the stated position of all the secular parties in this country that we are not against the construction of the temple. I would like to repeat it on behalf of my party that we are not against the construction of the temple but we would not like the mosque to be damaged, touched or interfered with in any manner. If this be the intention of the BJP, let they come forward and say, "let us sit down, look at the plans which they have prepared, let all the parties agree to it, then there will absolutely be no dispute." I have no hesitation in saying so. If you have other intentions, if you are going to play politics, then my very huble request to you is, let us decide in this House which is the highest chamber of this nation, at what cost we are going to conduct the politics of this country. Madam, there has been enough bad blood, there has been enough bloodshed, there has been enough of everything that is despitable in our politics. Let us not add to it any further. Let us not aggravate the situation. In doing politics, let us not divide the policy. In doing politics let us not divide the people. In doing politics, in getting votes, let us not completely dismember this nation. Let us not destroy the secular fabric of this nation. One last word, then I shall conclude.

This House represents a cross-section of people. There are Members of Parliament who belong to the minority communities. I would like to assure them on behalf of my party—I know that this assurance I can say safety on behalf of most of the Members of this House—that we stand for secular ideals, we stand for secularism and that we shall not be found wanting, we shall be second to none in defence of that secular order. It is not the concern of only some of us, it is the concern of all of us. Let us not give it a colour which is likely to send wrong signals outside. That is the reason. Madam why I was very keen that the find of scenes which took place in the morning should not take place. I used all my influence

[Shri Yashwant Sinha]

to see that peace was restored in the House. But this is something which will send wrong signals. Therefore, there is need for a great deal of restraint on the part of those Members also. With this appeal I conclude my statement and hope that good sense will prevail over those who are ruling in UP and over those who are ruling in Delhi.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : मैं एक प्रश्न पूछना चाहूंगा जवाब देंगे कि जहां पर राम लला की मूर्ति है उसको हटाने के बारे में आपकी राय क्या है? आप चाहते है कि उस मूर्ति को हटा दिया जाए या न हटा दिया जाए?

श्री राम नरेश यादव : वहां मंदिर बनाना चाहते हैं यह भी बता दीजिए।

SHRI PRAMOD MAHAJAN: You are repeatedly referring to the disputed structure as masjid. That clears your position on the... (*Interruptions*)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : वहां 40 साल से पूजा हो रही है। उसको आप हटाना चाहते हैं रखना चाहते हैं या ....(**व्यवधान**)

श्री यशवंत सिन्हा : मैं तो अपनी बात उस वक्त कहूंगा जब आप अपनी नीयत स्पष्ट कर देंगे।

श्री प्रमोद महाजन : यशवंत जी आपको कहने की जरूरत नहीं है क्योंकि मुफ्ती साहब और आप (*Interruptions*)

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: It is not that the minority communities in this country... (*Interruptions*). Every Indian every Member of Parliament... (*Interruptions*)... Will retain the secular spirit of this nation... (*Interruptions*).

श्री अजीत जोगी (मध्य प्रदेश) : आपकी नीयत सबको मालूम है... (**व्यवधान**)

श्री यशवंत सिन्हा : माथुर साहब आप जिसको मंदिर कहते हैं उसके साथ क्या करने वाले हैं? आप यह बताइये उसको तोड़ने वाले हैं कि छोड़ने वाले हैं? आप कहिए आप क्या करने वाले है .....(**व्यवधान**) तोड़ेंगे कि छोड़ेंगे .... (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): No, that is all Mr. Mathur, please sit down. Mr. Afzal has a point of order. (*Interruptions*). Mr. Sinha, you don't have to give an answer. Please sit down (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Yashwant Sinha, you don't have to answer... (*Interruptions*)...

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Nothing will go on record... (*Interruptions*)... Please sit down... (*Interruptions*)... Mr. P. K. Jopi... (*Interruptions*)...

SHRI MOHAMMED AFZAL alias MEEM AFZAL:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I am not allowing you... (*Interruptions*)... Please sit down. Nothing is going on record. So there is no point of order... (*Interruptions*)... Under what rule are you raising it?... (*Interruptions*)...

श्री अजीत जोगी : आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदया, माननीय गृह मंत्री जी ने एक अहम मसले पर बयान दिया, मैं यह मानता हू कि यह सवाल केवल राम जन्म-भूमि और बाबरी मसजिद का नहीं है, यह सवाल अब इस बात का हो गया है कि आज के बाद हम इस देश को किस दिशा में ले जाना चाहते हैं। आज के बाद यह मुल्क उस रास्ते पर चलेगा जिस रास्ते पर हमें हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने, पीरों ने, बुजुर्गों ने, चलना सिखाया था उस मार्ग में से हटकर हम दूसरे मार्ग पर इस देश को ले जाना चाहते हैं ? प्रश्न इस बात का है कि हम

*Not recorded.

अपनी संस्कृति, अपनी परंपरा और अपने धर्म के अनुसार लोगों को जोड़कर रखना चाहते हैं या तोड़ना चाहते हैं ? यह जो छोटा सा स्ट्रक्टचर है जिसको बाबरी मसजिद या जिसको विवादग्रस्त भवन कहा जा रहा है वह अब केवल छोटा सा स्ट्रक्टर, छोटा सा ढांचा नहीं रह गया है । बाबरी मसजिद भवन या वह विवादाग्रस्त भवन जिसे हमारे भाजपा के सदस्य कहते हैं.....

एक माननीय सदस्य : राम जन्म-भूमि कहिए ... **(व्यवधान)**

श्री अजीत जोगी : राम जन्म भूमि अब एक प्रतीक बन गया है । मैं इसलिए प्रतीक कह रहा हूं क्योंकि अगर वह भवन बचता है तो इस मुल्क के दलित, इस मुल्क के शोषित, इस मुल्क के अल्पसंख्यक, इस मुल्क के गरीब, इस मुल्क के मेहनत-कश मजदूर यह मानेंगे कि मेरी अस्मिता, सम्मान सुरक्षित है । अगर इस ढांचे को हम सुरक्षित नहीं रख पायेंगे तो इस मुल्क के दलित, शोषित, अल्पसंख्यक यह मानेंगे कि इस मुल्क के रहनुमा, हम सब नेतागण बिलकुल असमर्थ हो गए हैं उनकी अस्मिता की रक्षा करने के लिए । मैं यहां जज्बातों पर बात नहीं करना चाहता हूं । मुझे बड़ी खुशी हुई जब भंडारी जी के भाषण को, तकरीर को मैंने सुना । आज पहली बार भाजपा के साथियों ने कहा कि हम को न्यायालय के आदेश का सम्मान करना चाहिए । न्यायालय के आदेश का सम्मान करना चाहिए केवल भाजपा के साथियों को ही नहीं हम को भी सम्मान करना चाहिए । फिर न्यायालय के समक्ष जो मुद्दे बार-बार इस विषय में उठते रहे हैं और जब न्यायालय के समक्ष यह बात निर्धारित करने की बात आई क्या यह अयोध्या वही है जो हमारे मर्यादा पुरुषपोत्तम भगवान राम के त्रेता युग की अयोध्या थी ? यदि इस पर न्यायालय फैसला दे तो क्या उसको आप नहीं मानना चाहेंगे । जब यह तय करने की बात हुई कि न्यायालय इस पर फैसला करे कि क्या अयोध्या में जिस स्थान पर जिसे आप राम जन्मभूमि कह रहे हैं, जिसे कोई बाबरी मस्जिद कह रहा है या किसी और नाम से कहा जा रहा है तो क्या राम लला का जन्म वहीं पर हुआ था ? क्या न्यायालय इस को तय करेगा और भारतीय जनता पार्टी के साथी इसको मानेंगे ? जब आप कहते हैं न्यायालय जो कुछ तय करे हम उसको न्यायालय के अनुसार मानेंगे तो कुछ बातें आप कहते हैं जो न्यायालय तय करेगा हम उसको नहीं मानेंगे क्योंकि यह हमारी आस्था का प्रश्न है । मैं आपसे करबद्ध निवेदन करना चाहता हूं कि यह मुल्क का बहुत अहम सवाल हो गया है । जैसा मैंने पहले कहा था मुल्क जुड़ेगा या टूटेगा, मुल्क एक रहेगा या विघटित हो जाएगा इससे जुड़ा हुआ यह सवाल है । इसलिए आपसे हाथ जोड़ कर यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर आप आपस में मिल बैठकर इसको हल नहीं कर सकते तो जैसा भंडारी जी कह रहे हैं न्यायालय की बात तो न्यायालय की बात मानिए । उन सब मुद्दों को न्यायालय को दे दीजिए । हम सब सहमत है । हम सब जो धर्मनिर-पेक्षता की बात करते हैं, आप जो धर्म निरपेक्षता की अपनी परिभाषा के अनुसार बात करते हैं हम सब इस पर सहमत हैं कि अगर न्यायालय इन मुद्दों पर निर्णय देता है तो उसे इस देश के मुसलमान मानेंगे, इस देश के हिंदू मानेंगे, इस देश का हर आदमी मानेगा । आप न्यायालय का आदेश मानने की बात कर रहे हैं तो न्यायालय ने जो आदेश दिए हैं उन्हें कहां तक आप मान रहे हैं ?

आपने भू-अर्जन अधिनियम के अंतर्गत जिस भूमि को अर्जित किया है जो भी अर्जन अधिनियम की धारा को पढ़ लीजिये जब अनिवार्य तौर पर भू अर्जन किया जाता तो किसी विशेष उद्देश्य के लिए किया जाता है । इसमें आपने उल्लिखित किया है कि इस जमीन का अर्जन हम पर्यटन के विकास के लिए कर रहे हैं । आज भंडारी जी ने यह कहा जो जमीन अर्जित की गई है 2.7 एकड़ या जितनी भी अर्जित की गई है उस जमीन को उत्तर प्रदेश शासन ने विश्व हिन्दू परिषद् को दे दिया है । आप न्यायालय की बात कर रहे हैं । कानून की बात कर रहे हैं । कानून का स्पष्ट उल्लंघन है । आपने जिस उद्देश्य के लिए भू अर्जित की है उसके

[श्री अजीत जोगी]

अलावा किसी और उद्देश्य के लिए उसका उपयोग नहीं कर सकते । पर्यटन के विकास के लिए जमीन अगर अजित की गई है जैसा आपने अपनी रिपोर्टों में गृह मंत्रालय को कहा है तो उसके अलावा आप और किसी काम के लिए उसका उपयोग नहीं कर सकते । वहां के चीफ सेक्रेटरी साहब का एक शपथ पत्र सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश हुआ है जिसमें उन्होंने कहा है वहां कोई निर्माण कार्य नहीं चल रहा है केवल समतलीकरण हो रहा है । मैं यह पूछना चाहता हूं कि आपने भी, भाजपा के सदस्यों ने भी यहां पर स्वीकार किया है कि साक्षी गोपाल मंदिर तोड़ा गया, सुमित्रा मंदिर तोड़ा गया, संकट मोचन मंदिर तोड़ा गया । यह सब तोड़े गए तो क्या यह समतलीकरण है ? मंदिरों का तोडना समतलीकरण में नहीं आता । अभी कुछ दिन पहले हमने एक कानून बनाया था कि वर्ष 1947 के बाद जितने भी पूजा स्थल हैं उनका स्वरूप नहीं बदला जाएगा केवल राम-जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद को छोड़कर । पर आपने साक्षी गोपाल मंदिर तोड़ दिया, सुमित्रा मंदिर तोड दिए आपने संकट मोचन मंदिर तोड़ दिया और न जाने कौन-कौन से मंदिर तोड़ दिए । क्या वह कानून जो इस संसद ने सर्वानुमति से पारित किया था उस कानून का उल्लंघन आपने नहीं किया ? न्यायालय की मर्यादा की बात करते हैं, कानून की की मर्यादा की बात करते हैं उसका पालन आप बिल्कुल नहीं कर रहे हैं ।

मैं सदन के सामने स्पष्ट रूप से इनके दिल में क्या बात है वह बताना चाहता हूं जिससे यह रिकार्ड में रहे । अभी इनकी सरकार दो साल तक उत्तर प्रदेश में रह चुकी है । यह सब जानते हैं पांच साल चलने वाली सरकार है, ऐसा मान रहे हैं । हम भी चाहते हैं । पांच साल चले । जो निर्माण कार्य चालू किया है इसको एक साल चलायेंगे । इसके बाद दो साल और निर्माण कार्य चलेगा । तब तक यह इस ढांचे को किसी तरह से छुयेंगे नहीं हम को आश्वासन देते जाएंगे कि हम इस ढांचे को नहीं छू रहे हैं । जब चारों तरफ से सब कुछ बन जाएगा तब यह कहेंगे जैसा अब कह रहे हैं या मेरे साथी प्रमोद महाजन जी कह रहे हैं यह बाबरी मस्जिद नहीं यह राम जन्म भूमि राम लला का गर्भगृह है ।

श्री प्रमोद महाजन : यह पहले दिन से कह रहा हूं । और उस मंदिर के ढांचे को जब चारों तरफ से आप बना देंगे तो तब गर्भ गृह के ऊपर छत डालकर जोड़ने की बात कहेंगे और देश को यह कहना चाहेंगे कि हमने आपसे जो वायदा किया था वह मंदिर तो बन गया है । इस बारे में मैं माननीय मंत्री जी को आगाह करना चाहता हूं कि आज ये उस ढांचे को छूना नहीं चाहते हैं और हो सकता है कि उस ढांचे को अभी गिराना नहीं चाहते हैं । ये चाहते हैं कि किसी तरह से जब पांचवां साल आएगा तो उस समय ये हमारे सामने ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देंगे कि सब कुछ बन गया है, केवल गर्भ गृह को ढांचे से जोडना है जिससे पूरा राम मंदिर बन जाय । तीस साल की गारन्टी तो आप दे ही रहे हैं ।

श्री अजीत जोगी : मैं दे रहा हूं और आपको समझ रहा हूं । आप किस तरह से पूरे मुल्क को, देश को, पूरी संसद को, बेवकूफ समझ रहे हैं । लेकिन हम ऐसे बेवकूफ नहीं हैं । हम समझ रहे हैं कि आप किस तरफ बढ़ रहे हैं । इसलिए मैं यह रिकार्ड पर रखना चाहता हूं कि आप किसी मुगालते में मत रहिए । आपकी चाल को, आपके रंग को, आपके ढंग को, हम सब समझते हैं । हम आपके अन्तर मन की अच्छी तरह से समझते हैं । आपकी चाल को हमारा शासन, हमारे गृह मंत्री जी और प्रधान मंत्री जी सफल नहीं होने देंगे ।

मैं आपसे केवल यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप इतिहास की बार-बार बात करते हैं और यह कहते हैं कि बाबर ने अत्याचार किया । मेरे दोस्तों, इतिहास सबक सीखने के लिए होता है, दोहराने के लिए नहीं होता है । अगर इतिहास में और पीछे जायेंगे तो न जाने कितनी बातें सामने आयेंगी । आप जानते हैं कि आर्य इस देश में आए तो द्रविडों के मंदिरों को उजाड़ा गया । कल्हण की

राजतरंगिणी को आपने पढ़ा होगा। काश्मीर में जब जैन धर्म का विस्तार हुआ तो हिन्दुओं के मंदिरों को तोड़ा गया। आपने यह भी पढ़ा होगा कि जब इस राष्ट्र में बौद्ध और जैन धर्म का विस्तार हुआ तो हिन्दुओं के मंदिर तोड़े गए। आपने यह भी पढ़ा होगा कि जब आदरणीय आदि शंकराचार्य जी ने हिन्दू धर्म का रिवाइवल किया तो दस हजार बौद्ध विहारों को तोड़ कर मंदिर बनाया गया। अगर आप इतिहास में जायेंगे तो पायेंगे कि इतिहास में न जाने कितनी भूलें हुई हैं। आप उनको अब सुधार नहीं सकते हैं। इतिहास दोहराने के लिए नहीं होता है, इतिहास सबक सीखने के लिए होता है।

श्री चतुरानन मिश्र : इनका भी दस हजार मंदिरों का प्रोग्राम है।

श्री अजीत जोगी : इनका कितने ही मंदिरों का प्रोग्राम हो, ये इतिहास की बातें करते हैं। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि महमूद गजनवी पेशावर से सोमनाथ कैसे पहुंच गया जहां से इन्होंने अपनी रथ यात्रा निकाली थी? केवल अपने चार सौ घुड़सवारों के साथ यह इतनी दूर तक कैसे पहुंच गया? क्या रास्ते में हिन्दू राजाओं ने उसकी मदद नहीं करी थी। बाबर कैसे इतनी दूर पहुंच गया? क्या हिन्दू राजाओं ने उसकी मदद नहीं करी थी? इसलिए इस प्रकार से इतिहास में मत जाइए। इतिहास सबक सिखने के लिए होता है ... **(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष महोदया, आप मुझे ज्यादा समय नहीं दे रही हैं। मैं केवल दो चार बातें ही कहना चाहूंगा। एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो यह कहते हैं कि धर्म और सियासत को अलग किया जाना चाहिए। मैं उन लोगों में से हूं जो जो यह मानते हैं कि हर आदमी को सियासत अपने धर्म के अनुसार करनी चाहिए। हिन्दू अगर हिन्दुत्व को समझता है तो हिंदू धर्म के अनुसार सियासत करे और मुसलमान अगर इस्लाम को समझता है तो इस्लाम के अनुसार सियासत को करे और अगर ऐसा करेगा तो जोड़ने की बात करेगा। राधाकृष्णन जी ने कहा था कि धर्म क्या है?

"That which integrates is *dharma* and that which disintegrates is *adharma*."

जो आत्मा को परमात्मा से जोड़ता है वह धर्म है, जो जीव को सजीव से जोड़ता है, वह धर्म है। जो हिन्दू को मुसलमान से जोड़ता है वह धर्म है। जो हिन्दू को सिख, पारसी, जैन से जोड़ता है वह धर्म है। आप जो बात कर रहे हैं वह तोड़ने की बात कर रहे हैं। संसद के प्रवेश द्वार से आप रोज प्रवेश करते हैं। वहां पर ऋग्वेद का एक श्लोक लिखा हुआ है। मैं मानता हूं कि हिंदुत्व की परिभाषा को हमारे संविधान बनाने वालों ने सोच समझकर इस संसद के मुख्य द्वार पर लिख दिया है। उसको आप याद कीजिए।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

जो कहता है कि मैं मैं हूं, तू तू है, वह हिन्दू नहीं है। जो कहता है कि मैं हिन्दू हूं, तू मुसलमान है, वह हिंदू नहीं है। यह ऋग्वेद कह रहा है, अजीत जोगी नहीं कह रहा है। जो यह कहता है कि तू हिन्दू है, मुसलमान है, ईसाई है, सिख है, पारसी है, वह हिन्दू नहीं है। हिन्दू तो ईश्वर से हाथ जोड़कर कहता है कि हे ईश्वर, इस वसुधा में पैदा होने वाला एक एक व्यक्ति मेरे कुटुम्ब की तरह है, मेरी माता की तरह है। मेरे पिता की तरह, मेरे भाई की तरह, मेरे बहन की तरह है। अगर एक हिन्दू एक एक मुसलमान को इस तरह मानता है, जो ऐसा समझता है वही हिन्दू है। हिन्दुत्व की परिभाषा संसद के मुख्य द्वार पर आप रोज पढ़ते हैं। यह ऋग्वेद की, आदिशास्त्र की वेदवाणी है। इसको कृपया समझिये, यह मेरा आग्रह है। यदि हम हिन्दुत्व की सही परिभाषा समझेंगे, धर्म की सही परिभाषा समझेंगे, इतिहास से सही सबक लेंगे और न्यायालयों के आदेशों को सही मानेंगे तो इस देश को हम सही रास्ते पर ले जायेंगे नहीं तो इस देश को हम सही रास्ते नहीं ले जा पायेंगे, ऐसा कह कर मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

SHRI TINDIVANAM G. VENKATRAMAN (Tamil Nadu): Madam Vice-Chairman, from a perusal of the statement by the hon. Home Minister, we are able to cull out two central points. Number one is that the Home

[Shri Tindivanam G. Venkatraman]

[Minister had made a number of requests to the Chief Minister of Uttar Pradesh to put a halt to the building construction at Ayodhya. Number two is that in spite of his requests that construction is going on. And it is nothing but creating a bad precedent. And in a way, we can say that the Home Minister is expressing his inability to act upon he does not know what to do next. That is all I could gather from reading this statement. He has also clearly state, and the fact also remains that there is a court proceeding, and the court has granted a stay that nothing should be constructed until the disposal of the case. In spite of at, the construction is going on, Our Home Minister has stated in clear terms that, "*prime facie*, I find there is a flagrant violation of the court order." What more is required, Madam? He had been there. And under his very nose, the construction is going on for the past three or four days. And it is now going to be completed That else will be there? All the Members here are agitated rightly from the first day of the session. Everybody said that he must do something. The construction is going on there, and it will certainly cause great damage to the country as such and also to the national interest. So, we are able to read in between the lines. He has now come before the House expressing this inability to further act in the matter.

Madam, we are all awaiting tomorrow's judgement in this case. Anyway, I could only submit that it is a challenge as to who is powerful. It should be viewed in that manner only. The vishwa Hindu Parishad and also the Bhajrang Dal are building it, and they are managing the construction of that platform. Where is the urgency for the platform now, Madam, unless they want to finish it before the Court gives its judgment? Otherwise, Madam, if they want the Court to decide it, and if they are sure about their case, where is the hurry to put up this structure? It will be like creating a bad precedent. A truant student has to be brought to proper discipline. I think, this will set a bad precedent to all the States and it must be curbed. The earlier, the better; better late than never. Therefore, the Central Government, at any rate, can now say, "we are taking possession of the disputed land" in spite of the fact that it may even be a a flagrant violation when the court is seized of the matter. But to avoid the communal troubles and all that, and also in the national interest, the disputed land should be taken over by the Central Government. From the statement, it is also clear that the Chief Minister is not able to give satisfactory answers to all the vital questions put by the Home Minister. What does it mean? It does not mean that the Chief Minister does not understand the question. He does not want to reveal his mind. He says that he is supporting the claim of the VHP and also the peaple who are doing the construction. Therefore, my only appeal to the Home Minister is to take possession of the land. Till the dispute is settled by the court, let it be with the Central Government.

डा० अबरार अहमद : मेडम, सुबह से जो चर्चा चल रही है यह चर्चा या विवाद किसी कानून का और नियम का विवाद नहीं है, यह नीयत का विवाद है । अगर किसी की नीयत साफ है या किसी की मंशा ठीक है तो विवाद के उत्पन्न होने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता । इस विवाद की जो नींव है वह नीयत पर है, मंशा पर है । अयोध्या में क्या हो रहा है, इसके बारे में हम कुछ कहें, भारतीय जनता पार्टी के माननीय सदस्य कुछ कहें, वह आज यहां कहने की बात नहीं है । आज सारा देश अपनी आंखों से दूरदर्शन के माध्यम से देख रहा है, कुछ लोगों ने वहां जा कर के देखा है कि वहां क्या हो रहा है । इसको आज यहां अलग-अलग तरह से रखा जाए, महोदया, इस संबंध में मैं यह कहना चाहूंगा कि किसी मंदिर के बनने से यह देश चलने वाला नहीं है, किसी मस्जिद के गिरने से यह देश खत्म होने वाला नहीं है । यह तो एक भावनात्मक सवाल है जिस भावनात्मक सवाल का राजनीतिकरण कर दिया गया है और राजनीतिकरण करके इस देश को जलने के लिए आग में

झोंक दिया गया है । राजनीतिक लाभ लेने के लिये इस सवाल को जिन्दा रखा जा रहा है, इस सवाल को टाइम टू टाइम ताजा किया जाता है। महोदया, जब हम इस सदन में आते हैं या कोई भी व्यक्ति किसी भी देश के सदन में या सरकार में जाता है, तो सबसे पहल यह हलफ उठाता है, संविधान की सौगंध खा कर यह कहता है कि मैं देश की एकत और अखंण्डता को अक्षुण्ण रखूगा । आज मैं आपक माध्यम से यह सवाल यू.पी. सरकार से पूछना चाहता हूं कि जो हलफ उठा कर के वह सरकार में बैठ है, क्या जो कुछ वह कर रहे हैं, वह देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण करने का कार्य है ? क्या उससे देश की एकता और अखण्डता मजबूत होगी या देश मन्दिर और मस्जिद के अन्दर तकसीम होगा, उससे देश की एकता और अखण्डता को खतरा पहुंचगा ? जो बात आज सब के सामने है, सारे देशवासियों के सामने है, जिस तरह से देश को मन्दिर और मस्जिद मे बाटने का षड्यन्त्र चल रहा है, उस षड्यंत्र को रोकना होगा । आज सुबह से भारतीय जनता पार्टी के माननीय सदस्यों द्वारा बार-बार कोर्ट की दुहा दी गई, कोर्ट का निर्णय मानने की ब त की गई, कोर्ट में उनके हक में फैसला देने की बात की गई । लेकिन मैं आप के माध्यम से एक सवाल पूछना चाहता हूं । आज से पांच रोज पहले जो निर्माण कार्य अयोध्या में प्रारंभ हुआ था, क्या कोर्ट का यह निर्णय नहीं था कि विवादित भूमि पर किसी भी प्रकार का स्ट्रक्चर, किसी भी प्रकार का ढांचा, किसी भी प्रकार का पक्का निर्माण नहीं किया जाए ? यदि उस समय यह कोर्ट का फैसला था तो कोर्ट की दुहाई देने वालों ने कैसे उस भूमि पर यह निर्माण कार्य प्रारंभ किया मैं महोदया, उसी पार्टी के बड़े नेता, मैं नाम नही लेना चाहता हूं, लेकिन शिखर के दो तीन नेता हैं **(व्यवधान)**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : लीजिए ।

डा० अबरार अहमद : आप कहते है लेता हूं । अटल बिहारी बाजपेयी जी कहते हैं कि कोर्ट में केस 1949 से चल रहा है, कब तक उसकी प्रतीक्षा करेंगे । आडवाणी जी कहते हैं कि हमें मंदिर बनाने के लिए मेनडेट मिला है, हम कोर्ट के फैसले को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं । सुबह भंडारी जी बड़ी अच्छी बाते बोल रहे थे लेकिन माननीय गृह मंत्री जी ने उनसे एक सवाल पूछा कि आप एक बात का स्पष्टीकरण कर दीजिए कि जहां पर निर्माण कार्य हो रहा है क्या वह विवादितस्थल का हिस्सा नहीं है । तो वह फौरन बौखला गये और बौखला करके उन्होंने यह सदन में कह दिया कि वहां तो मंदिर बनना है और हम मंदिर बना कर के रहेंगे । जो कोर्ट को दुहाई देने वाले लोग है अगर उनके हक में कोर्ट फैसला देता है जैसे अभी लखनऊ हाई कोर्ट का फैसला हुआ है, एक अधूरा फैसला पहले हुआ था जिसकी पूरे फैसले की तारीख चल है तो कोर्ट की दुहाई देने वालों के खिलाफ जब कोर्ट फैसला देता है तो वह कह देते हैं कि हम कोर्ट की बात मानने के लिए बाध्य नहीं हैं । कोर्ट की बात नहीं मानेंगे । इस तरह से दो तरफा बात करने वाले दो तरह की चाल चलने वाली बात आज सारे देश के सामने है । वह सिद्धांत की बात करना चाहते हैं लेकिन अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए, अपना मतलब सिद्ध करने के लिए वह दूसरे तरीके भी अपनाना चाहते हैं। महोदया, जहां तक लैंड का सवाल है जो लैंड एक्वायर की गई थी उस लैंड को क्या यूज हो, इसके बारे में सुबह से यहां चर्चा हो रही है । जो एक्वायर्ड लैंड है, वह डिस्पयूटेड है । उसको एक्वायर के लिए दिया गया था और वह बहुत अच्छी तरह से जानते हैं लेकिन जो निर्माण कार्य हो रहा है, जिस प्रकार का कंस्ट्रक्शन वहां हो रहा है, क्या वह उसको वैध समझते हैं, क्या उसको ठीक समझते हैं ? मैं तो नहीं मानता हूं । माह मजूरी करने के इलावा मैं इसे और कुछ भी नहीं कह सकता हूं क्योंकि वह जानते हुए भी इस बात की बहस कर रहे हैं । वे जान रहे हैं कि हम गलत कह रहे हैं, वे जान रहे हैं कि हम गलत बना रहे हैं, वे जान रहे है कि संविधान के खिलाफ कर रहे है,

[डा0 अबरार अहमद]

कानून के खिलाफ कर रहे हैं उसके बाद भी अगर मुहजोरी करते हैं तो उस चीज का यहां कोई जवाब नहीं होता है ।

अभी यहां अजीत जोगी कह रहे थे और मैं भी आप के माध्यम से माननीय गृह मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि यह मसला सिर्फ विवादात्मक स्थल पर जो निर्माण हो रहा है उस तक सीमित न रखा जाए बल्कि अभी दो महीने पहले उन्होंने जो मंदिर तोड़े हैं--जबकि हमारे देश के अंदर यह कानून पास हो चुका है, हमने यह कानून पास किया है कि 1947 में जो धर्मस्थल जैसा था उसको वैसे ही रखा जाएगा, उसके बाद भी वहां यू० पी० सरकार ने मंदिर तोड़े, कानून का उल्लंघन किया और इसके संबंध में एक कमेटी वहां पर गई तथा उस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट दी, तो इस बात को मद्देनजर रखा जाए और इस चीज का भी फैसला किया जाए कि जिस यू० पी० की सरकार ने खुले रूप से कानून का उल्लंघन किया है उस यू० पी० सरकार के खिलाफ सख्त से सख्त एक्शन हो ।

माननीय गृह मंत्री जी के वक्तव्य में एक बात कही गई है कि वहां पर 3 कंपनियां पी० ए० सी० की लगी हुई है और 5 दूसरी कंपनियां भेजने की पेशकश माननीय गृह मंत्री जी ने वहां के मुख्य मंत्री से की जिसके लिए उन्होंने कहा कि अभी उसकी वहां आवश्यकता नहीं है । उपसभाध्यक्ष महोदया, इस सदन के अंदर कई बार पी० ए० सी० के रोल पर चर्चा हुई है । यह आज से नहीं कई वर्षों से है । जब जब भी यू० पी० के अंदर किसी प्रकार का कोई झगड़ा हुआ है या साम्प्रदायिक तनाव हुआ है तो पी० ए० सी० की क्या भूमिका रही है वह किसी से छिपा हुआ नहीं है । मैं आप के माध्यम से माननीय गृह मंत्री जी की तव्वजह चाहूंगा । (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष महोदया, आपके माध्यम से माननीय गृह मंत्री जी से यह कह रहा था कि आपके व्यक्तव्य में वहां पर पी० ए० सी० की 3 कंपनियां उत्तर प्रदेश सरकार ने लगाई है ऐसी बात कही गई है और आप ने दूसरी कंपनियों और अर्ध सैनिक बल देने के बारे में पेशकश वहां के मुख्य मंत्री से की जिसके लिए उन्होंने मना कर दिया । माननीय गृह मंत्री जी, पी० ए० सी० की भूमिका उत्तर प्रदेश में किस प्रकार की रही है । जब जब भी कभी साम्प्रदायिक तनाव हुआ है या किसी प्रकार का झगड़ा हुआ है तो उसमें पी० ए० सी० का रोल आप से छिपा हुआ नहीं है । मैं आप से यही कहना चाहूंगा कि पी० ए० सी० के भरोसे उत्तर प्रदेश की जनता को या उत्तर प्रदेश के लोगों को छोड़ना नाइन्साफी होगी । अतः इस पर आप ध्यान दें, पूरी तरह से तवज्जह दें और वहां दूसरे अर्ध सैनिक बलों को भेजें ।

अंतिम बात मैं इस संबंध में कहना चाहता हूं कि जिस राजनीति से ऊपर ये मंदिर और मस्जिद की बात करके यह राजनैतिक स्वार्थ पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है । माननीय सदस्य श्री अजीत जोगी जी ने जो यह बात कही वह बिल्कुल सही है । महोदया, मैं उसी तरह आपका तवज्जह दिलाते हुए आपको बताना चाहूंगा कि मैंने भी जयपुर के अंदर अभी कुछ दिनों पहले जब वहां थोड़ा सा साम्प्रदायिक तनाव था तो सर्व धर्म प्रार्थना बुलायी थी । उसके अंदर बड़े से बड़े कुरान के जानने वाले जो मौलवी थे उनको मैंने बुलाया बड़े से बड़े गीता के ज्ञाता जो पंडित थे उनको मैंने बुलाया, बड़े से बड़े गुरु ग्रंथ साहब के जानने वाले जो सरदार साहब थे उनको मैंने बुलाया और बड़े से बड़े बाइबिल के जो जानने वाले थे उनको भी बुलाया । उन सबसे मैंने पूछा कि क्या ये धर्मग्रंथ यह कहते हैं कि हमें आपस में लड़ना चाहिए, एक दूसरे को कत्ल कर देना चाहिए, एक दूसरे की सम्पत्ति को जला देना चाहिए । तो उन सबने एक स्वर में कहा कि कुरान में जो पैगाम है वह सिर्फ मुसलमान के लिए नहीं है, गीता में जो संदेश है वह सिर्फ हिन्दुओं के लिए नहीं है, गुरु ग्रंथ साहब में जो बात कही गयी है वह सिर्फ सिक्खों के लिए नहीं है और बाइबिल में जो बात कही गयी है वह सिर्फ क्रिश्चियनों के लिए नहीं है । उन्होंने कहा कि कुरान ने जो बात कही है, गीता

ने जो बात कही है, गुरु ग्रंथ साहब ने जो बात कही है या बाइबिल ने जो बात कही है तो उनके अंदर इन्सानियत का पैगाम दिया है, इन्सानियत का संदेश दिया है । एक दूसरे आदमी को कैसे काम आना चाहिए, एक दूसरे की कैसे मदद करनी चाहिए, अगर रोटी एक है तो कैसे आधी आधी बांटकर खानी चाहिए, अगर दो गज कपड़ा है तो किस तरह से बांटकर पहनना चाहिए, एक दूसरे की दुख तकलीफ में किस तरह से काम आना चाहिए यह बात कही गयी है । तो जो लोग धर्म के नाम पर लोगों को लड़ाते हैं, वास्तव में धर्म क्या कहता है यह उनको नहीं बताकर मस्जिद और मन्दिर के नाम पर वे तकसीम कराना चाहते हैं । आज आवश्यकता है उनके चेहरों से नकाब उठाने की, उनके चेहरे को नंगा करने की और लोगों को यह बताने की कि ये धर्म के नाम पर जो लड़ाई कर रहे हैं यह राजनैतिक लाभ लेने के लिए कर रहे हैं, धर्म के लिए नहीं कर रहे हैं ।

तो अंत में मैं माननीय गृह मंत्री जी से यह आग्रह करना चाहूंगा, यह निवेदन करना चाहूंगा कि जो यह मामला है जो यह विवाद है उसका स्थायी हल निकालें और जो लोग कानून का उल्लंघन कर रहे हैं, संविधान का उल्लंघन कर रहे हैं, नियमों को तोड़ रहे हैं, दूसरों को गुमराह करना चाह रहे हैं, संसद को गुमराह कर रहे हैं. उनके खिलाफ सख्त से सख्त एक्शन लें । धन्यवाद ।

SHRI G. SWAMINATHAN: Madam Vice-Chairman, on 10th morning some of the party leaders had an opportunity to meet the Home Minister and had a discussion on this dispute. At that time it was not very clear either to us or to the Home Minister whether the construction in Ayodhya was going on on a disputed land or not. In that meeting of party leaders, two views were prevailed on the Home Minister. One group said that you should immediately act. Since it is more or less certain that the construction was going on on the disputed site, action has to be taken immediately. The other group of party leaders pointed out that the Home Minister should himself be certain whether the construction was going on on a disputed site or not. And then the Home Minister said that he would like to take some time, he had requested the hon. Chief Minister of U. P. to meet him. After having a discussion with him, he will try to find out whether the construction was going on on a disputed site or not.

Now, Madam, hon. Home Minister in his statement says that after having discussions with the Chief Minister he has gone to Ayodhya. The Home Minister has said in the statement that there was a *prime facie* case that the construction violated the court orders. Here, one of the hon. Members from the Congress side, was saying that the Home Minister did not go to the actual site. I was under the impression that the hon. Home Minister had gone to Ayodhya to visit the actual site of construction. Otherwise, what was the need of going all the way to Ayodhya? I am not very clear whether the hon. Home Minister visited the actual site or not but I am very much clear that there is a *prima facie* case and on the basis of that finding of the hon. Home Minister there is a discussion taking place in this House. Now in this House two-fold action has been suggested. Hon. Member from the treasury Benches, Shri Kalmadi, suggested that the U. P. Government shall be dismissed forthwith. Another hon. Member from Tamil Nadu, not belonging to my party, advocated that the disputed site be taken over by the Central Government, it should be acquired by the Central Government. I think that was the point also echoed by many other Members. As far as I am concerned, I am not able to agree with both the views. I am also sure that action has to be taken, but regarding the two recommendations, I am not able to think in unison with them. I wish to inform the Home Minister that, it so happened, that I had a discussion on this issue with a retired Justice of High Court who had a long innings in Delhi. I asked him whether the Government of India could acquire the property which had already been acquired by the State.

[Shri G. Swaminathan]

He cited one case where Justice Subba Roa has given a judgement. He also took out and gave me the judgement by Justice C.L. Venkataramaiah in AIR 55, Supreme Court page 298, 2304. This is the case of the Collector of Bombay versus one N.C.L. Sarjwani where it has been stated that the State Government cannot acquire its own land. I also asked him whether the Government of India could acquire land which had been taken over by the State Government (*Interruptions*). I am not a lawyer. Contrary to this position has been advocated by the Janata Dal party. In that meeting the former Prime Minister, Shri V. P. Singh, was also present and he also held this view.

Since the Ex. Justice of the High Court who had a long innings in Delhi hold a different view. I feel, what he has said also needs to be considered

I do not say that it is a final view, you may have your own legal opinion in the matter.

While referring to the judgement he said, once a property has been acquired by a State Government it becomes a State property. That State property has been leased out to somebody. I do not know to whom it has been leased out. Now you are advocating that the Central Government should acquire the property. Now the Central Government is also the State. The State can acquire the property belonging to a citizen only. I am not aware whether one State can acquire the property belonging to another State. I am also not clear whether a State and a State makes any difference and what is the difference between the State Government and the Central Government in this context?

4.00 P.M.

He says there is no difference because State is a State whether it is the Centre or a State, and there is no position for you to acquire the property belonging to that. That is one position.

Madam, because the time given to me is only four minutes. I am not able to build up an argument. With regard to dismissal of the Government, I would only say that I am not prepared to vouch because I belong to a party in Tamil Nadu. This is an extraordinary action which I will not advocate, that the State Government should be dismissed... (*Interruptions*)... Most probably, by dismissing the State Government what may ultimately happen is, you will be doing the thing which, perhaps the VP also like you to do. Perhaps, by dismissing the Government, the BJP will become more strong. Most probably, this itself would become an issue. You have got two issues before you: one is the Ram Janmabhoomi temple construction issue. By allowing it to go on, you are in trouble. By dismissing the Government also you will be in trouble because it will be taken up as another issue.

AN HONOURABLE MEMBER: You have not indicated it?

SHRI G. SWAMINATHAN: Another Congress Member has been saying, dismiss the Government. We cannot take that view. My view is, I wish to tell you briefly two or three things. One: You can have a discussion with the parties because this is a dispute which has been going on for 100 years. Nothing will happen to the BJP by holding it over for some more time. May be for another 10 or 15 days if you don't construct the temple, nothing is going to happen, because this is a hundred-year-old issue. So I would request the hon. Members of the BJP to wait for sime more time so that there can be a bilateral discussion between the State and the Central and a conclusion can comes.

Another suggestion I would make the Inter-State Council has been formed under article 263 of the Constitution by the former Prime Minister, Mr. V. P Singh himself, only to go into the disputes and discussing subjects in which some or all of the States or the Union or one or more States have common interests. And it has got three provision a. b. c. One of them is, whenever there is a dispute between the States or between a State and the Centre, the Inter-State

Council can take up the matter. I would recommend tothe hon. Home Minister if he could consider taking it up because the National Integration Council meeting is going to be shortly. There was a suggestion that this matter will be taken up at the National Integration Council meeting. But I think the National Integration Council may not be able to solve the problem. The point is whether the Home Minister will be able to take up this matter at the Inter-State Council level so that this matter can be solved.

Finally, Madam, regarding our position, the position of the AIADMK Party, our Chief Minister was very categorical at one of the National Integration Council meetings that so far as the AIADMK Party is concerned, we want the Babri Masjid to continue there; it should not be demolished. At the same time, we are for the construction of the Ram temple at a place which is not a disputed area. This is the position because there are many places where both a mosque and a temple are co-existing, side by side, and there is no reason why a Ram temple should not exist adjoining a masjid—provided it is not constructed at a place which is not in a disputed area.

Finally, Madam, before I conclude, I think it was the hon. Member, Mr. Ajit Jogi who has cited the Rig Veda and said that one should take everyone as his own kin. I will conclude by quoting an ancient Tamil poet who said in a poem:

"Yaadhum oore,

Yaavarum kelir."

This is a very well-known stanza in Tamil. It means: Every town is my own and every one is my kin.

Thank you very much.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Shri V. Narayanasamy... Not here, Shri Meena. Your party's time is very little. So I can give you only two minutes because a lot of Members want to speak ...(*Interruptions*) Never mind. Then other Members should also give him the time.

श्री मूल चन्द मीणा : (राजस्थान) : मैडम अयोध्या का विवाद एक राष्ट्रीय महत्व का विवाद है । अयोध्या में राम मंदिर बने, अयोध्या में मस्जिद टूटे, सदन में बैठे हुए लोगों की मंशा मंदिर बनाने की नहीं, मस्जिद तोड़ने की नहीं बल्कि उनकी एक ही मंशा है कि अयोध्या के अंदर राम मंदिर बनाने का इश्यू आने वाले चुनाव तक जिंदा रहे । यह उद्देश्य है इन लोगों का ।

मैडम, अयोध्या के अंदर जब उस विवादाग्रस्त भूमि को ही अधिगृहीत कर लिया गया, उसके बाद उसके ऊपर निर्माण होना, मस्जिद के आसपास 15 फुट गहरी खाई खोदना क्या है ? कौन लोग इसको कर रहे हैं ? क्या यह सरकार के इशारे पर नहीं हो रहा है और भारतीय जनता पार्टी के बड़े-बड़े नेता यह कहते थे कि अयोध्या के अंदर, उस अधिगृहीत भूमि के ऊपर, उसके आसपास न कोई मंदिर जोड़ा गया है और न किसी प्रकार की भूमि को समतल किया गया है । यह कहा करते थे और आज यह मंदिर बनाने की बात करते हैं । क्या यह संविधान का उल्लंघन नहीं है । मैडम, इस संसद के अंदर ही यह कानून पास किया गया था कि सन् 1947 की स्थिति में जो मंदिर थे, जो मस्जिद जैसी स्थिति में थे, गिरिजाघर जिस स्थिति में थे, उनको बनाए रखा जाय । लेकिन यह क्या है, जो मंदिर वहां तोड़े गए, क्या यह संविधान का उल्लंघन नहीं है ? मैडम, आज गृह मंत्री जी ने यह कहा कि मेरी उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्रीजी से बात हुई थी और उन्होंने मुझे आश्वासन दिया है कि वहां पर किसी प्रकार का निर्माण नहीं होगा और चार दिन पहले भी गृह मंत्री जी ने इस सदन के अंदर कहा था कि वहां पर किसी प्रकार का निर्माण नहीं हो रहा है । लेकिन मैं गृह मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं कि आपने स्वयं जाकर अयोध्या में देखा है कि वहां पर निर्माण हो रहा है । कौन लोग वहां निर्माण कर रहे हैं ? वहां अनाधिकृत जमीन के ऊपर

[श्री मूलचन्द मीणा]

सरकार की शह पर निर्माण हो रहा है या हमारे सामने बैठे हुए लोगों के दिल के अंदर जो मंशा है, उसके आधार पर यह निर्माण हो रहा है । मैडम, हमारे गांव के अंदर कहावत है कि, "लाला बंब में हाथ दे, मंत्र हम पढ़ेंगे।" मंत्र तो पढ रहे है ये और आगे कर रखा है विश्व हिन्दू परिषद् व बजरंग दल को । क्या बजरंग दल और विश्व हिंदू परिषद ने हिंदुओं का ठेका ले रखा है? क्या हम हिंदू नहीं हैं हिंदूस्तान में रहने वाले लाखों-करोड़ों लोग हिंदू नहीं हैं । यह सब केवल राजनीतिक स्वार्थ के लिए सगठन बना रखा है और इस राजनीतिक स्वार्थ से जुड़े हुए हैं वे लोग जो कि चुनाव के टाइम पर भारतीय जनता पार्टी के लोगों का प्रचार करते फिरते थे । आज वह हिंदुओं के ठेकेदार बनते हैं, लेकिन इस देश की जनता, इस देश के लाखों-करोड़ों लोग उनको ठेकेदार नहीं मानते हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please conclude now.

श्री मूलचन्द मीणा : मैडम, वे राम की बात करते हैं । राम जी ने तो मर्यादा की रक्षा के लिए माता सीता को वन का वनवास दिया । आप उस मर्यादा को नहीं मान रहे हैं । ये संविधान की मर्यादा को नहीं मान रहे हैं । आप उसका उल्लंघन कर रहे हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please conclude now.

श्री मूलचन्द मीणा : मैडम, मैं इतना ही कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं । धन्यवाद ।

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभाध्यक्ष महोदया, बहुत से माननीय सदस्यों ने कहा कि इस विषय पर धार्मिक ढंग से विचार करना चाहिए या कानूनी ढंग से विचार करना चाहिए । मैं यह समझता हूं कि यह गलत है । यह विशुद्ध राजनीति है । हमारे बी०जे०पी० के मित्र लोग इस विषय को राजनीतिक बनाकर लड़ रहे हैं क्योंकि इससे उन्हें वोट मिलता है । वह कहते हैं कि अगर सरकार में ताकत है तो करे, नहीं तो अभी अयोध्या गए हैं, फिर बनारस चला जाय, फिर मथुरा चला जाय । अब जो गृह मंत्री को करना है सो करें उनका तो कहना बिल्कुल स्पष्ट है क्योंकि उनको इससे वोट मिलता है ।

मैडम, मैं आपको इस सप्ताह के पांचजन्य से एक उद्धरण पढ़कर सुनाता हूं । इसमें आडवाणी जी कहते हैं कि, हम एक क्षण के लिए भी यह नहीं भूल सकते कि उत्तर प्रदेश में भा०ज०पा० सत्ता में क्यों आई ? उत्तर प्रदेश में सत्ता में आने के पीछे राम जन्मभूमि के सिवाय और कोई कारण नहीं था ।

[उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) [पीठासीन हुए]

श्री संघ प्रिय गौतम : यह सही है ।

श्री चतुरानन मिश्र : यह साफ है, लेकिन गृह मंत्रीजी का बयान साफ नहीं है । वहां अधियारा हो गया है, आपके यहां कोई अंधेरा नहीं है ।

श्री संघ प्रिय गौतम : उनके वोट कट रहे हैं, इसलिए दुख हो रहा है ।

श्री चतुरानन मिश्र : उनकी दिक्कत यह है और कुछ नहीं है और अभी हमारे भंडारी जी ने जो भाषण किया, उन्होंने भी बहुत साफ कहा । उपाध्यक्ष महोदय, संस्कृत में एक श्लोक का अंश है—

"विष कुंभम् पयोमुखम्"

घड़े में विष भरा हुआ रहता है लेकिन ऊपर से अमृत लगाकर रखते हैं । वही भाषण था उनका । उन्होंने कहा कि हम कोर्ट की बात, अदालत की बात को मानेंगे । आप पूरी बात को मान लीजिए नहीं, इसमें हम मानेंगे, उसमें नहीं मानेंगे । ऐसा शपथग्रहण में तो आपने नहीं किया था कि इस अनुच्छेद के लिए हम शपथग्रहण करते हैं कि संविधान को हम मानेंगे और दूसरे अनुच्छेद क

लिए कांग्रेस पार्टी है और तीसरे अनुच्छेद के लिए कम्युनिस्ट पार्टी है । ऐसा कोई शपथग्रहण नहीं हुआ था । आपको पढ़ना है तो पूरा पढ़िए । तीसरे अनुच्छेद के लिए कम्युनिस्ट पार्टी, ऐसा तो कोई शपथ ग्रहण नहीं हुआ था । मानना है तो पूरा मानिए और नहीं मानना है तो मत मानिए । ... (व्यवधान) इसीलिए यह कोर्ट की बात नहीं मानेंगे, यह स्पष्ट बात है उनको नहीं सूट करेगी । अगर आप भारतीय राजनीति का सही अन्दाजा लगाते हैं तब तो आप आइये । हमारे लिहाज से बात बहुत स्पष्ट है । सरकार बिल्कुल गलती कर रही है । अब हम लोग तय किए हुए हैं कि रामचन्द्र जी का मंदिर भी वहीं हो जहां वह उत्पन्न हुए हैं । आपकी पार्टी भी मानती है, आपके घोषणा-पत्र में भी है, दूसरे भी मानते हैं । आप डिमारकेट कीजिए वहां की जमीन में जाकर के कि यह हुई राम मंदिर की और यह हुई बाबरी मस्जिद की, इसको सुरक्षित करने का भार ग्रहण कीजिए । यह पौलिटिकल इश्यू है । सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट को हम नहीं दे सकते । सुप्रीम कोर्ट को तभी दे सकते हैं जब बी०जे०पी०, विश्व हिन्दू परिषद् या दूसरे लोग बजरंग दल वह सब मान लेते कि इसमें जो पंचायत करके दे वह हम मान लें । ऐसा तो करते नहीं हैं । एक चीज के लिए वह करते हैं और दूसरी चीज के लिए नहीं करते हैं । अभी आप स्ट्रक्चर रोकने की बात करेंगे । सारे देश में प्रचार करते हैं कि देखिए, यह तो मंदिर भी नहीं बनने देते ! इसीलिए हमारा ख्याल है कि सरकार को अपना माथा दुरुस्त करना चाहिए । हमारे लिहाज से प्रधान मंत्री जी इस मामले में बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं । जो स्पष्ट है उसको जाकर कर दीजिए । इस इलाके में, इस क्षेत्र में उनको मंदिर बनाना है । बाकी के लिए सरकार कानून बनाकर के करे । अभी हमसे पहले स्वामीनाथन जी ने कहा कि सरकार को हक नहीं है । सरकार को बहुत हक है और अगर सरकार को हक नहीं है तो सदन को हक है । जरूरत पड़ेगी तो हम और कानून बना लेंगे । आप बाबरी मस्जिद के लिए क्या इंतजाम करते हैं, वह कर दीजिए, क्योंकि बाबरी मस्जिद को बाबर ने बनाया या जिसने बनाया वह इतिहास की बात है । हम उतनी ही बात उसमें जानते हैं । हम जाकर के देख आए हैं कि उसकी ईंट-पत्थर वगैरह तो बहुत कमजोर हैं । लेकिन वह कहते थे कि वहां पर क्या रामलला की मूर्ति है, वह भी जाकर आपने रखा है । इसमें हम आपसे नहीं कह रहे हैं कि आपने रखा है । लेकिन हम एक बात राजनीतिक तौर से जानते हैं कि उसमें सफिसिएंट डायनामाइट है जो एक लंका दहन नहीं भारत-दहन कर सकता है । इस डायनामाइट या एक्सप्लोजन को कोई रोकेगा या नहीं ? यह मुख्य प्रश्न है । यह न हाई कोर्ट के मातहत है, न इलाहाबाद व लखनऊ बेंच के मातहत है । यह हमारे-आपके मातहत है और गृह मंत्री जी आप इस जिम्मेदारी से मुकर रहे हैं । आपने कहा है कि... (व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : आपका टाइम पूरा हो गया ।

श्री चतुरानन मिश्र : हमारा टाइम उतना ही है जितना स्वामीनाथन जी का था । हम सरकारी पार्टी के साथ में हैं ।

गृह मंत्री जी, आपने जब कहा कि The Government will pursue these efforts and will also keep a close watch on the situation.

तो यह काम तो आप पहले भी कर रहे थे । क्लोज वाच आप नहीं रख सकते । पहले भी वही परसू किया था तो अयोध्या क्यों गए थे । इससे तो इलाहाबाद जाकर गंगा स्नान करके आते तो कुछ धर्म-लाभ भी होता । यही काम करना था जो पहले से कर रहे थे तो फिर इस सदन में बहस क्यों हो इतनी । कांग्रेस मैंबर्स क्यों जाते थे । यह सब दिखावे के लिए है, क्या लोगों को धोखा देने के लिए है, हम यह जानना चाहते हैं ? अगर आप सच में गए थे कि हम और आप चिंता प्रकट करते हैं कि वहां लोग कुरापात कर रहे हैं तो इसके अनुरूप काम कीजिए । यह राजनीतिक कदम उठाइये । इसलिए मैं आपसे फिर एक बार अपना भाषण

[श्री चतुरानन मिश्र]

समाप्त करने से पहले कहता हूं कि इस पर दृढ होकर कदम उठाइए । यह बात नहीं है, स्वामीनाथन जी ने कहा कि 40 साल से यह पड़ा हुआ है तो क्या होता है । मुस्लिम लीग ने जिस दिन पाकिस्तान का प्रस्ताव किया उसके सात वर्ष के भीतर में पाकिस्तान मिलो याद रख लीजिए इस बात को । जब साम्प्रदायिकता की आग लगती है तो क्या आप रोक सकते हैं ? गांधी जी नहीं रोक सके थे, जवाहर लाल नेहरू जी नहीं रोक सके थे, तो हम लोगों की क्या औकात है । देश में आग लग जाएगी । आपके प्रधान मंत्री कभी यहां से लड़ते हैं तो वहां हार जाते हैं, वहां जीतते हैं । तो जो प्रधान मंत्री पहले थे, जो आप लोगों को जितवाते थे वह भी साम्प्रदायिकता की आग को नहीं रोक सके । गांधी जी को बलिदान होना पड़ा उसी के लिए । इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि आप इस पर फुर्ती से कदम उठाइए । आज यह नहीं होने दीजिए । ये तो बाबरी मस्जिद और राम जन्म भूमि को ट्रैवलर्स चैक बनाकर रखे हुए हैं । जब-जब कुछ घटता है तब भुना लेते हैं । एकता यात्रा का नहीं चला तो राम पर चले आए । हमको तो आप पर दया आ रही है कि आप यह सब समझकर गलती क्यों कर रहे हैं । यह गलती मत कीजिए ।

आखिरी बात मैं आपसे कहना चाहूंगा । भारत में ही नहीं पुरानी सभ्यता के सभी देशों में तुर्की से शुरू कीजिए, अरब कंट्रीज अफगानिस्तान, भारत होते हुए श्रीलंका में प्रवेश कीजिए । ओल्ड सिविलाइजेशन के समय में क्या हुआ, मैं नहीं जानता । मैं उसका विद्वान नहीं हूं । जो विद्वान हैं वह बता दें । हम । अजानक देखते हैं कि वहां पर फंडमेंटलिज्म की बाढ़ आई है । यह बाढ़ दूसरी जगहों पर नहीं आई है । इसी एरिया म ज्यादा हैं । इसलिए गृह मंत्री जी, इस देश को मत जलाइए, बरबाद मत कीजिए हम लोगों की वह प्रतिष्ठा नहीं है जो गांधी जी की थी । अगर वह देश का विभाजन नहीं रोक सके तो हम लोग तो कभी भी नहीं रोक सकते । सच्चाई यह है कि आज अगर पंजाब बचा हुआ है, कश्मीर बचा हुआ है, हमारे आपके भाषणों से बचा नहीं है बल्कि सिक्योरिटी और फौज की वजह से बच हुआ है । इसलिए हम चाहेंगे कि आप इस पर विचार कीजिए ।

जहां तक बी.जे.पी. के भाई हैं, हम समझते हैं कि उनसे अपील करने की कोई गुंजाइश नहीं है क्योंकि उनके बारे में हमें कोई भ्रम नहीं है । हम कहना चाहते हैं कि ये उसको तोड़ रहे हैं और यही नारा लेकर सारे देश में जायेंगे कि एक सपूत हम हैं कि बाबर के मरने के 500 साल के बाद हमने बाबर पर विजय हासिल की । लोग कहेंगे कि जब मर गया 500 बरस हो गए तब बाबर पर विजय की है । यही एक बहादुरी करनेके लिए ये इस देश में जन्में हैं । सारा देश बरबाद करेंगे ... (**व्यवधान**)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप बाबर के जुल्म के साथ क्यों वाबस्ता हैं, अगर बाबर ने जुल्म किया था, आप उसके साथ इमोशनली क्यों बाबस्ता हैं ?

श्री चतुरानन मिश्र : जुल्म किसने नहीं किया था, हरिजनों ने किया था, ब्राहमणों ने किया था । हम ब्राहमण की संतान हैं हम आपको कहना चाहते हैं कि कोई नहीं है । जिसने अत्याचार न किया हो एक दूसरे के खिलाफ । इतिहास इसका साक्षी है । एक बाबर को क्यों लेते हैं ? बाबर तो कम से कम ऐसा था ... (**व्यवधान**)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप इमोशनली बाबर के साथ क्यों वाबस्ता हैं ?

श्री चतुरानन मिश्र : हम इस देश के आदमी के साथ हैं । हम इस देश के साथ हैं जहां हमारा खून बहा है, उसके साथ हैं । हम बाबर के साथ नहीं हैं । जो उसके साथ हैं वह देश के टुकड़े-टुकड़े करना चाहते हैं, बरबाद करना चाहते हैं और इसीलिए हम आपके खिलाफ हैं कि आप इस देश को बरबाद करने के रास्ते पर ले जा रहे हैं ... (**व्यवधान**) महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति के खून से रंगे हुए लोग इस देश में हैं । इसीलिए चिंता हम कर रहे हैं इस देश के लिए, आपके लिए नहीं ... (**व्यवधान**) हम चिन्ता

इस देश के लिए कर रहे हैं । मैं इनको जानता हूं लेकिन फिर मैं प्रार्थना करता हूं गृह मंत्री से, भगवान पर मुझे विश्वास नहीं है, कि आपको सदबुद्धि दे कि जल्दी से जल्दी आप प्रधान मंत्री को कहिए कि प्रधान मंत्री कदम उठाए ।

SHRI INDER KUMAR GUJRAL (Bihar): Mr. Vice-Chairman, Sir, I am a new Member in the House.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Mr. Gujral is the senior-most Member of this House. He become a Member of the Rajya Sabha in 1964. But he is making his first speech as a new Member again.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Mr. Gujral, my only problem is that the time is very limited. So please take ten minutes.

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: If I may repeat it again, as a new Member, I was wondering about one thing and that was when I saw this statement of the hon. Home Minister. My first reaction was that it was pathetic. Then I felt, "No, it may not be pathetic. It must be a part of the strategy". And that strategy was not born yesterday. It was born in 1986 when the Temple, Mosque or whatever you call it was opened. It was born also not on yesterday, but more recently, when "Shilanyas" was permitted. And today, the hon. Home Minister, who had built up a reputation for himself as being a very strong man, a *maratha* from *Maharasdtra* and what not, makes a statement in which one sees that there is all along a streak of helplessness. What does he say in the statement? He says that he requested the Chief Minister to suspend the construction. But what can the poor Home Minister do if the Chief Minister does not agree? He says that he asked the State Government to consult the Centre before permitting the construction. What can again the poor, helpless Home Minister of the Majestic India do when a Chief Minister does not pay attention to this? And when the Chief Minister of a State does not respond and remains non-committal, what can the Home Minister do? Again he says that *prima facie* he believes—I am quoting him—that the U. P. Government has violated the court's orders. I was sworn in here three days ago. Like others I swore by the Constitution. And I had the privilege of being a Minister of the Government of India a few times. I think one of the pledges that we take as Ministers is that we take upon ourselves as Ministers the responsibility of upholding the rule of law and protecting the Constitution. The poor Home Minister comes to us and tells us...

SHRI VIREN J. SHAH: Like when emergency was declared.

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: Well, not by me.

SHRI VIREN J. SHAH: You were part of it.

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: No, I was not, I want to say that again if you want to listen.

Therefore, *prima facie*, the Home Minister says, the U.P. Government has violated the court's orders. If the U.P. Government has violated the orders of the court, I was expecting that the Home Minister would come to the operative part of it. No. He does not. He only says that he has failed to persuade the Chief Minister. When the Home Minister of India fails to persuade the Chief Minister of a State, I am glad to hear that now he feels that he can do nothing. As my hon. friend has mentioned, I had the privilege of being associated with Parliament in one way or the other since 1964. There were so many Governments that had come and gone. But I cannot remember a single occasion of a pathetic sight of a Home Minister as we witness today. He says that he does not know it, the Chief Minister does not listen to him, the Chief Minister does not get persuaded and therefore, he has taken note of all these facts. And then he goes there. What does he see? Those of you, friends, who have seen the TV presentation of it, would know. Between the site and the Home Minister, there are bars to sight. He does not go in. He stays at a distance. As he views it, there is a protection of three people too. He looks at the whole

[Shri Kumar Gujrla]

thing from behind them. Then he says that something is going on. I think a more clear picture came when we saw the BBC presenting it. I wish the Home Minister had listened to the remarks of the BBC about the pathetic sight. When I saw that, I started wondering for myself, "Oh my God! The poor Home Minister is in such difficulty. We should have gone to help him out". The poor Home Minister saw that the work was going on. All the land was being levelled, the concrete was being poured and voluntary services of people were going on. Who were doing it? The Home Minister has to send a team there to find out as to who were doing it. Well, I must say this to the credit of the BJP; They have not made any secret of it. The Vishwa Hindu Parishad or the Bajrang Dal have openly said, "We are doing it." Well, if the Vishwa Hindu Parishad is doing it, then obviously the BJP Government is not doing it and if the BJP Government is not doing it, then how does the U. P. Government justify that they took the land, acquired the land for a public purpose—the public purpose being tourism? Now, I do not know if the Home Minister is satisfied in the sense that the Bajrang Dal and the Vishwa Hindu Parishad are the agencies of the U. P. Tourism Department or is it proposed that in future, in U.P., tourism will be encouraged, built, strengthened and provided by these two worthy organisations? They are doing all this. How does he permit that? He says, "without legal authority, the land had been handed over to them." If the land has been handed over to somebody else, my friend from the AIADMK has asked the question: Can the land be re-acquired? Well, the land can be handed over in two ways. One is obviously by an overt method. One could be by a covert method. If it has been handed over covertly, then it is all the more important that the Government of India, if it still has some strategy to take things over, should act. If it does not cooperate with the operation that is going on, then it must prove its *bona fides* and the *bona fides* can be proved only if the Home Minister tomorrow decides that he is going to acquire the land. On no other plea but on this plea that this land has been illegally occupied and traded upon and being developed by the agencies in the name of which the land was never acquired that the Government should act. What is happening there? It is very interesting. It is also on record that the concrete is being poured. The foundation is fifteen feet deep. I hope the CPWD will tell him today or they have told him but I don't think it required the CPWD to go into it. He could see it himself and even when the case went to the Allahabad High Court and when it was said that the foundations have been dug at such depth there is a danger of water seeping into the building or structure, whatever you call it, it is very clear that the intentions are very clear and I am very glad that my friend Mr. Bhandare, who is a very old friend of mine—we have been together in the Parliament on previous occasions also—has been very frank about it and if he is very frank, I do hope that the hon. Minister also will at least get courage from that if from nothing else. The Allahabad High Court judgement has been referred to. I do not want to go into all that. But I want to quote only one part of the remarks made by one of the Judges who says: "As far as the irreparable loss which may be caused to the party is concerned, no loss, much less irreparable loss, would be caused to the State of U. P. if the said operation is stopped." So, all the issues of convenience were in favour of stopping. It has not been done. That is a different matter altogether.

I would also like to point out that the issue has been very clearly stated in the Bommai Committee Report and I must say it goes to the credit of all the Members who functioned and laboured to bring it out.

Two or three points I would like to point out with your permission. One is that it is very clearly stated in the report itself and I quote: "On 14th August, 1989, the High Court of Allahabad passed an order". "Until further orders of the court, the parties to the

suit shall maintain the *status quo* and shall not change the nature of the property in question". On the 7th November, 1989, the court clarified again, that this *status quo* shall be maintained. I will not take your time. It also elaborated what *status quo* means. *Status quo* also includes not doing what is being done. Therefore, it is not as if the *status quo* has not been disturbed. The Allahabad High Court confirmed the earlier order once again on the 5th of February, 1992.

I go to the report again. The report again very categorically stated, and submitted to you, Mr. Home Minister, that the interim orders are standing. The Court's verdict is already very clear but all the same they are being flouted. Now if the Court's orders have been flouted, is it or is it not the duty of the Government of India to see that the rule of law prevails? Is it or is it not the responsibility of the Government of India that they should see to it that nothing is done which disturbs the *status quo* and if the *status quo* is to be maintained, then what should be done? I was hoping that in the statement itself the Home Minister would at least towards the end come to some operative part. There is no operative part in the statement. He only says, he will wait, watch. And he tells us that those three teams which he has sent there will, perhaps, come back this evening or tomorrow morning and report to him. What does he do after that? Will he come back to the House and tell us, or will he come back with the same and similarly pathetic statement to say that although the work has been handed over to the two agencies, although the work is going on, although the concrete is poured, although the *status quo* has been disturbed, what can the poor Home Minister do? And, therefore, I would suggest that at this stage at least we should give him courage if he does not have it and I think this House, perhaps with the exception of a few friends here, will totally back him up.

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: In matters of giving courage I will support him.

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: That might make him more prudent... (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Please sit down.

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: I had deliberately avoided addressing all this while to my friends on the right, but I would only wind up by saying that it would be in their interests to see a very interesting article which appeared in the *Jansatta* of yesterday. I will not read the whole article. I will only say, "Read that heading". And the heading is: 'झूठ और धोखाधड़ी पर बनाया गया मर्यादा पुरुषोत्तम राम का मंदिर मंदिर नहीं होगा।"

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Shrimati Renuka Chowdhury. See, your party has got four minutes' time and you and Mr. Rehman are going to speak.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Sir, I just wish to make a note. We on both sides of the House, have been deliberating on this matter that this House has been seized with... (*Interruptions*)... Sir, may I please have your attention? Several years ago it was the Congress which perpetuated this problem that this nation is seized with. To pretend today towring your hands in agony and helplessness is but another phase of hypocrisy that the nation is witnessing. You people opened the gates and you are accessory to the crime. The BJP take the stand that they are in Government in U.P.—I may not agree with them—they are justified in doing what they are. It is their Government. But what on earth is the Central Government doing? You have a Government here and you cannot afford not to exert what you should do in an act of governance. It is for you to sit up and take your responsibility or abdicate the throne. We can't sit back and say that you are helpless. A note of appeal also, Sir, to this august House. We are bending backward—some colleagues—to give a reassurance to the minorities of this coun-

[Shrimati Renuka Chowdhury]

try that this will be looked after. Sir, I want an assurance to be given to every Indian. As a daughter of a Service officer, for me my flag is the only religion that I know and this Parliament is the place of worship and if we can't transcend our personal limitations, I can be a Hindu within this country and outside, I can be a Muslim within this country and outside, but I am unique that only I can be Indian in any other part of the world. Sir, when Mr. K. C. Pant was the Defence Minister, when Mr. Rajiv Gandhi was the Prime Minister, and India was pulling out IPKF, it was a war without glory for the soldiers of this country. Ram Janambhoomi sizzled even at that time. We had requested that this sacred place of both Hindus and Muslims should become a monument, a symbol of secularism. That is a true tribute to the unknown Indian soldiers who laid down their lives in the quest for peace. They did not wish to see that, Sir. Today, it is truly tragic that we have a statement like this. It is a mere exercise and an eye-wash. I don't think anybody is going to take it seriously. But serious repercussions are bound to come about if we fail, if we stay away from exerting ourselves and doing what we should rightfully do.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Shrimati Satya Bahin. Only three minutes.

श्रीमती सत्या बहिन (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपको धन्यवाद देती हूं जो आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर दो मिनट बोलने का मौका दिया।

महोदय, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, भगवान राम के मंदिर के निर्माण में जिस तरह अत्याचार, अनाचार और मनमानी हो रही है, मान्यवर, इससे न केवल उत्तर प्रदेश में बल्कि पूरे देश में तनाव व्याप्त होने जा रहा है और यह पूरे देश की जनता के लिए एक चिंता की बात है। भारतीय जनता पार्टी के लोग यह कहते हैं कि हमें जनादेश मिला है। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि इन्होंने जो वायदे किए थे उसमें केवल मंदिर निर्माण का अकेला मुद्दा नहीं था, बल्कि और भी वायदे थे। इन्होंने यह कहा था कि "सब को देखा बार बार, हमको देखो एक बार" हम जनता की सभी समस्यायें हल करेंगे। इसलिए केवल मंदिर का ही मुद्दा उस समय नहीं था बल्कि बिजली-पानी, जनता को रोजी-रोटी, कानून और व्यवस्था और सभी तरह की समस्याओं को हल करने का वायदा था। क्या इन्होंने ये सभी वायदे पूरे कर दिए हैं जो मंदिर की बात पर ये आये हैं ? मंदिर के लिए जो समर्थन इनको दिया गया था वह मंदिर निर्माण के लिए दिया था, तनाव बढ़ाने के लिए नहीं था, मंदिर को तोड़ने के लिए बिल्कुल नहीं था, मस्जिद को तोड़ने के लिए बिल्कुल नहीं था। अगर यह पहले ही चुनाव के समय यह कहते कि हम मंदिरों को तोड़ेंगे उनको ध्वस्त करेंगे, मस्जिदों को तोड़ेंगे तो उनको जो वोट मिला है उसका, 2 प्रतिशत वोट भी इनको नहीं मिलता, यह मेरा पक्का यकीन है। मान्यवर, ये कहते हैं कि हमें जनादेश मिला है, बड़े गर्व से कहते है कि जनादेश मिला है। लेकिन अगर इसको सही मायने में देखा जाय तो उत्तर प्रदेश में उनको 35 प्रतिशत से ज्यादा वोट नहीं मिले। 65 प्रतिशत वोट इनके विरोधियों को गये जो धर्म-निरपेक्षता के लिए वचनबद्ध हैं। जो कांग्रेस को वोट गया, जो जनता दल को वोट गया, जो समाजवादी जनता दल को वोट गया और जो बहुजन समाजवादी पार्टी और दूसरी पार्टियों को वोट गया वह निश्चित रूप से इनके खिलाफ वोट गया था। जब 65 प्रतिशत वोट, उत्तर प्रदेश में इनके खिलाफ गया तो ये कह नहीं सकते कि हमको इसका जनादेश मिला है, हमको बहुमत का वोट मिला। बहुमत तो तब होता जब 50 प्रतिशत से ज्यादा जनता इनको वोट देती।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Three minutes are over. Please conclude now.

श्रीमती सत्या बहिन : पूरे देश के परिप्रेक्ष्य में अगर देखा जाय तो 85 प्रतिशत जनता ने इनके खिलाफ वोट दिया। इसलिए केन्द्र सरकार की यह जिम्मेदारी है कि

85 प्रतिशत जनता की भावनाओं का ख्याल कर उसका सम्मान करे और उनको सुरक्षा प्रदान करे। मान्यवर, जिस तरह से उत्तर प्रदेश सरकार ने 2.77 एकड़ जमीन को हस्तान्तरित किया है, अधिगृहीत किया है और उसको जिस तरह से बजरंग दल और विश्व हिन्दू परिषद को दिया है वह चिंता का विषय है। किस उद्देश्य के लिए उन्होंने इस जमीन का अधिग्रहण किया है, इस पर उनका कब्जा कैसे हो गया है, यह एक सोचने की बात है। किसी भी न्यायालय ने उन्हें यह अधिकार नहीं दिया और न ही जनता ने उनको यह अधिकार दिया कि इस जमीन को विश्व हिन्दू परिषद और बजरंग दल को दे दो। अगर वहां पर मंदिर का निर्माण हो रहा है तो क्या इसको पर्यटन निगम कर रहा है, या सरकार का कोई विभाग कर रहा है मान्यवर, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं हो रहा है कि ये आतंकवादी संगठन हैं जो देश में आतंक और तनाव पैदा कर रहे हैं। साथ ही इनकी नीयत भी ठीक नहीं। माननीय गृह मंत्री जी ने अपने बयान में कहा है कि केन्द्रीय दलों को भेजने की जो केन्द्र सरकार की पेशकश थी, उसको मानने से इन्होंने इंकार कर दिया, अस्वीकार कर दिया। यह इसलिए कि यह.....

उपसभाध्यक्ष (श्री जगेश देसाई) : अब खत्म कीजिए।

श्रीमती रुक्मा बहिन : जो मनमानी वहां पर कर रहे हैं तो ये सोचते हैं कि अगर केन्द्रीय दल वहां जायेंगे तो उनकी पोल खुल जायेगी। उत्तर प्रदेश पुलिस जो वहां लगाई गई है वह उनके दबाव में है और वह मनमाने ढंग से काम कर रही है। मैं यही कहना चाहती हूं कि इसमें केन्द्रीय सरकार पूरी तरह से ध्यान दे और उनके मनमाने ढंग पर अकुंश लगाए। धन्यवाद।

श्री राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, 1990 में हिन्दुस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व की साजिश में जो कार्य प्रारम्भ किया गया था सौभाग्य से उस वक्त उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री ने दृढ़ता के साथ उसको नकार दिया था। दुर्भाग्य से वैसी ही स्थिति फिर शुरु हो रही है। चार दिन से हम इस सदन में कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी के बीच एक नूरा कुश्ती देख रहे हैं, उसका प्रमाण हिन्दुस्तान के गृह मंत्री द्वारा सदन में दिया गया स्टेटमेंट है। मान्यवर, हिन्दुस्तान के गृह मंत्री के पद पर सरदार पटेल रहे, पंडित गोविन्द वल्लभ पंत जी रहे और चौधरी चरण सिंह जी रहे लेकिन कोई यह कल्पना नहीं कर सकता था कि किसी राज्य का मुख्य मंत्री उनको जवाब न देने का दुस्साहस कर सके, मनमाने ढंग से हिन्दुस्तान के गृह मंत्री के साथ बिहेव कर सके लेकिन मुझे बड़े अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है कि जब हिन्दुस्तान का गृह मंत्री किसी राज्य के मुख्य मंत्री के सामने गिड़गिड़ा कर यह रिक्वेस्ट करे कि ऐसा नहीं कीजिए, इसे रोक दीजिए। महोदय, इससे हिन्दुस्तान की एकता और अखण्डता को खतरा पैदा हो जाएगा। जिस दिन देश का गृह मंत्री कमजोर होगा, केन्द्रीय सरकार कमजोर होगी, केन्द्रीय सरकार इनडिसिजन की स्थिति में होगी, उस वक्त देश की सुरक्षा, देश की एकता और अखण्डता खतरे में होगी। इस बात को आज समझने की आवश्यकता है।

मान्यवर, मैं दो मिनट में अपनी बात कहना चाहूंगा। 2.77 एकड़ जमीन उत्तर प्रदेश की सरकार ने एक्वायर की और आज तक वह जमीन किसी अन्य एजेंसी को ट्रांसफर नहीं की गई। उस पर काम चल रहा है। कहा यह जा रहा है कि दूसरी एजेंसी काम कर रही है लेकिन मेरा यह आरोप है कि यह काम उत्तर प्रदेश की सरकार करवा रही है। हिन्दुस्तान का संविधान किसी भी सरकार को धार्मिक स्थल के निर्माण की इजाजत नहीं देता है। इसका अर्थ यह हुआ कि जो काम हो रहा है वह संविधान की मंशा के खिलाफ हो रहा है। अगर संविधान के मंशा के खिलाफ हो रहा है तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उत्तर प्रदेश की सरकार संविधान के अनुसार काम नहीं कर रही है। अगर उत्तर प्रदेश की सरकार संविधान के अनुसार काम नहीं कर

[श्री राम गोपल यादव]

रही है तो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 356 को इनवोक करने की आवश्यकता है। उस सरकार को बर्खास्त करने की आवश्यकता है, नम्बर एक। नम्बर दो, जब मुलायम सिंह सरकार ने छतरी को हटाया था तो माननीय उच्च न्यायालय, इलाहाबाद ने इसे कंटेम्प्ट आफ कोर्ट माना था और निर्देश दिया था कि छतरी को वहां लगाया जाए। इस सरकार ने छतरी को हटा दिया है, क्या इससे हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते हैं कि कंटेम्प्ट आफ कोर्ट हुआ है ? न्यायालय की अवमानना हो रही है, क्या हम यह नहीं कह सकते हैं कि डिस्प्युटेड लैंड पर काम हो रहा है, इसलिए जब न्यायालय की अवमानना हो तब भी हम यह कह सकते हैं कि सरकार संविधान के प्रावधान के अनुसार काम नहीं कर रही है। यह भी इस बात की डिमांड करता है कि उत्तर प्रदेश की सरकार को बर्खास्त कर दिया जाए। नम्बर तीन, मैं एक सेकेंड से ज्यादा नहीं लेना चाहता हूं। बहुत दिनों से यह राम जन्म भूमि की बात चल रही है। मैं बहुत प्रसन्न होता अगर भारतीय जनता पार्टी के लीडर, एकमात्र लीडर अपनी मातृभूमि को वापिस लेने के लिए हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का एक परिसंघ बनाने की एक बार भी मांग करते। किसी ने एक बार भी यह मांग नहीं की। राम जन्म भूमि वहां है या नहीं, यह भी डिस्प्युटेड मामला है, विवादास्पद चीज है। आज से बीस साल पहले कौन अपने घर में कहां पैदा हुआ यह अपनी अम्मा को पूछो तो बता नहीं पाएगी लेकिन यह चल रहा है। मैं इस अवसर पर सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि सारी दुनियां जान रही है, हम लोग भी जान रहे हैं, सत्ता में बैठे हुए लोग भी जान रहे हैं, उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार भी जान रही है। अगर केन्द्र सरकार ने हस्तक्षेप नहीं किया तो किसी भी दिन बाबरी मस्जिद को गिराया जा सकता है। जो ट्रेंचेज खोदी गई हैं, मुझे शुबहा था, जब आज ही हमारे एक मित्र जो अयोध्या को विधान सभा में रिप्रेजेंट करते थे, टेलीफोन पर यह बताया कि पानी डाला जा रहा है। मानसून का पानी नहीं आ रहा है इसलिए ट्रेंचेज में पानी डाला जा रहा है और यह सीप करेगा तो 48 घंटे के अंदर बाबरी मस्जिद आन इट्स ओन कोलेप्स कर जाएगी तब आपके हमारे किसी के बस की बात नहीं होगी कि हिंदुस्तान में जो आग बरसने जा रही है उसको रोक सकें। इसलिए अभी समय है। हालांकि यह योजना बन चुकी है। अब केन्द्र सरकार बहुत लेट हो गयी है। अगर उत्तर प्रदेश की सरकार को बर्खास्त भी करेंगे तो यह योजना है कि दो घंटे के अंदर बाबरी मस्जिद को उड़ा दिया जाएगा। वहां एक कारीडोर बना दी गयी है, एक बजरंग बली छावनी बना दी गयी है। एक ट्राएंगल के रूप में पुलिस दूर है। जिस क्षण इस तरह की कोई इवेंचुअलिटी होती है पुलिस वहां नहीं पहुंच सकती। इसमें बच्चे हैं, महिलाएं है। अगर पुलिस एक्शन लेगी तो बच्चों और महिलाओं पर गोली चलाने की नौबत आ सकती है। यह सब देखा जाकर क्या माननीय गृह मंत्री जी आपने। इसके बाद भी इतना लचर। मैं सिर्फ एक ही सेन्टेंस कहना चाहूंगा कि

SHRI P. UPENDRA: Sir, there has been a lot of heated discussion on this issue. But I find a silver lining in the present situation as compared to the situation a year ago or two years ago when we lost our jobs on this very issue. There is a definite change in the attitude of the BJP. One is that all along they had been saying that this is a religious matter and the court has no jurisdiction and they will not accept the court's judgement or decision. Today they are saying that we will abide by the court's decision and this is the change in their attitude. Two years ago they had been saying that they would break the *Babri Masjid*. But today they are giving repeated assurances that nothing will be done to the *Babri Masjid*. This is the change in their attitude and the Government has to show some statesmanship and the BJP should show some sense of responsibility... (*Interruptions*)...

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: Can you name the BJP leader who said that we would destroy *Babri Masjid*... (*Interruptions*)..

SHRI P. UPENDRA: Please, let us not get into arguments. Let me express

my views. I was a Member of the committee that visited Ayodhya. Two Ministers were also there, Mr. Balramji Tandon and Mr. Dwivedi. When we asked them, since they had decided to start work outside the Masid, whether they were giving up their claim on the Masjid and starting construction of the temple outside, their reply was, and I quote: "Yes, if it is the ultimate solution". That was the answer given by Mr. Tandon. I don't know whether Mr. Bommai mentioned this in his report. I did not see the report finally. The BJP cannot break the Masjid even if the court gives a judgement in their favour. There will be a blood-bath in this country if they break the Masjid. Therefore, even the BJP knows that it is impossible to break the Masjid and construct a temple. Today the Home Minister has elaborated on the security steps that have been taken and the assurance given by the Chief Minister . But that is not the question. The UP Government is responsible for the safety of the Masjid. The momnet it fails, it goes. I do not support the demand for dismissal of the UP Government. Some of the friends of the BJP must be suggesting that article 356 be invoked. The UP Government would also welcome it. They want it. But that is not the way. We never advocated dismissal of elected Governments. But when they are prepared to abide by the Court's judgement, it is the duty of the Court to give a suitable judgement. I am sorry, we cannot criticise the courts here. But the Allahabad High Court should have been more eloquent and should have given a day-to-day hearing and given a judgement by now. It is not at all happening. We have all pinned our hopes on the Supreme Court. And if the Uttar Pradesh Government disobeys the Supreme Court order—we know that they are all Pandits, they are all learned people—what will be the consequence? That itself will be the break down of the law and order machinery. It will lead to that. When the Supreme Court has not given its ruling, what is the hurry in doing this? Why is the Uttar Pradesh Government doing it in such a hurry? They say that they have got a mandate. Have they got the mandate only to construct the temple? Is it not a mandate to rule the State? What improvements have they effected in that State? You have been given a mandate to rule that State, to improve the lot of the people and not to build the temple. You have pledged your support to the people of that State. You fulfil that pledge. We are also *Ram bhaktas*. We want the temple there. But what is the solution? The only solution is that the Central Government must acquire the entire land available there and a part of the mosque and give 60 or 70 hectares of land offered earlier for the temple. And if the Nyas is not prepared to take them, let another Trust be created and we can give the land to that Trust to build the temple.

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान (आंध्र प्रदेश) : वाइस चेयरमैन साहब, यह जो राम जन्म-भूमि -बाबरी मस्जिद का इशु है, यह इंतहाई हस्सास इशु है और यह पूरे मुल्क के सेक्युलरिज्म को तहफ्फुज होना चाहिए, मगर आज ऐसा मालूम हो रहा है कि हमारे मुल्क का सेक्युलरिज्म, जिसकी वजह से सारी दुनिया में हमारा मुल्क जाना-पहचाना जाता है, खतरे में पड़ गया है ।

8 तारीख को हमारे मोअज्जिज होम मिनिस्टर साहब ने एक स्टेटमेंट दिया था और उस स्टेटमेंट में होम मिनिस्टर साहब ने एतराफ किया था कि रियासती हुकूमत उत्तर प्रदेश की जानिब से मुसलसल खिलाफवर्जियां की जाती रही हैं ।

[श्री मोहम्मद खलिलुर रहमान]

होम मिनिस्टर साहब और गवर्नमेंट आफ इंडिया की जानिब से तवज्जह दिलाने के बावजूद भी वहां की रियासती हुकूमत मुख्तलिफ खिलाफवर्जियों की मुर्तकिब हो रही है और उस स्टेट में भी उन्होंने अपनी लाचारी का इजहार किया था।

आज जो स्टेटमेंट दिया गया है, मैं समझता हूं कि यह स्टेटमेंट भी एक मजहूल स्टेटमेंट के सिवा और कुछ भी नहीं है। इंतहाई लाचारी का इजहार इस स्टेटमेंट में किया गया है। आज मैं हमारे बी.जे.पी. के भाइयों से कुछ नहीं कहूंगा, इस वजह से कि उनकी हठधर्मी से जाहिर है, उनकी नीयत साफ जाहिर हो चुकी है और वह किसी तरह से भी उस मस्जिद को नुकसान पहुंचाने पर तुले हुए हैं। तो उनसे कहना—क्या हासिल।

मैं सिर्फ हमारे होम मिनिस्टर साहब से और हुकूमते हिंद से पूछूंगा कि आप क्या कर रहे हैं? 8 तारीख को स्टेटमेंट दिया और फिर 12 तारीख को अब खुद बनफसे नफीस अयोध्या का दौरा किया और उस मुतनाजा मुकाम का आपने मुआयना किया और आपने अपने स्टेटमेंट में यह जाहिर कर दिया है कि रियासती हुकूमत की तरफ से वहां पर खिलाफवर्जी हो रही है। तो इसके बावजूद आपका अभी भी यह कहना कि वहां के चीफ मिनिस्टर साहब से दरख्वास्त की जा रही है, उनको राजी किया जा रहा है, यह एक बेमानी सी बात है।

पूरा मुल्क आप पर नजरें लगाये हुए है कि आप क्या करने जा रहे हैं और क्या कर रहे हैं।

आपके सामने अपोजीशन, नान बी०जे० पी० अपोजीशन पार्टियों की जानिब से और खुद कांग्रेस आई के गोशे की तरफ से यह सजेशन दे दिया जा चुका है कि वह जो मुतनाज्या आरजी है, उसको फौरी हासिल किया तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि वह क्या दिक्कतें हैं, क्या रूकावटें हैं, जिसकी वजह से आप उसे हासिल नहीं कर रहे हैं? जितनी देर होगी, उतना मस्जिद के ढांचे को नुकसान पहुंचाने का अंदेशा है।

लिहाजा, मैं आपसे दरख्वास्त करूंगा कि आप मजीद कोई वक्त जाया किये बगैर जल्द से जल्द उस मुतनाज्या अराजी को हासिल कीजिए और मस्जिद का तहाफुज कीजिए और पूरे हिंदुस्तान में सेक्युलरिज्म का तहाफुज कीजिए, जिसकी आप पर जिम्मेदारी है।

शुक्रिया

شری محمد خلیل الرحمٰن: آندھرا پردیش وقف چیئرمین صاحب۔ یہ جو رام جنم بھومی بابری مسجد کا ایشو ہے۔ یہ انتہائی حساس ایشو ہے اور یہ پورے ملک کے سیکولرازم کا تحفظ ہونا چاہیئے۔ مگر آج ایسا معلوم ہو رہا ہے کہ ہمارے ملک کا سیکولرازم۔ جس کی وجہ سے ساری دنیا میں ہمارا ملک جانا پہچانا جاتا ہے خطرے میں پڑ گیا ہے ۸ تاریخ کو ہمارے معزز ہوم منسٹر صاحب نے ایک اسٹیٹمنٹ دیا تھا اور اسٹیٹمنٹ میں ہوم منسٹر صاحب نے یہ اعتراض کیا تھا کہ ریاستی حکومت اتر پردیش کی جانب سے مسلسل خلاف ورزیاں کی جاتی رہی ہیں۔

ہوم منسٹر صاحب اور گورنمنٹ آف انڈیا کی جانب سے توجہ دلانے کے باوجود

†[] Transliteration in Arabic Script.

ان کو راضی کیا جارہا ہے۔ یہ ایک بے معنی بات ہے۔

پورا ملک آپ پر نظریں لگائے ہوئے ہے کہ آپ کیا کرے جارہے ہیں اور کیا کر رہے ہیں۔

آپ کے سامنے اپوزیشن۔ نان بی۔ جے۔ پی۔ اپوزیشن پارٹیوں کی جانب سے اور خود کانگریس کے گوشے کی طرف سے یہ سجیشن دیا جاچکا ہے کہ وہ جو متنازعہ آراضی ہے اس کو فوری حاصل کیا جائے تو میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ وہ کیا رکاوٹیں ہیں۔ کیا رکاوٹیں ہیں جس کی وجہ سے آپ اسے حاصل نہیں کر رہے ہیں۔ جتنی دیر ہوگی اتنا مسجد کے ڈھانچے کو نقصان پہنچنے کا اندیشہ ہے۔

لہذا۔ میں آپ سے درخواست کروں گا کہ آپ مزید کوئی وقت ضائع کئے بغیر جلد سے جلد اس متنازعہ آراضی کو حاصل کیجئے اور مسجد کا تحفظ کیجئے اور پورے ہندوستان میں سیکولرازم کا تحفظ کیجئے۔ جس کی آپ پر ذمہ داری ہے۔

شکریہ

"ختم شد"

بھی وہاں کی ریاستی حکومت مختلف خلاف ورزیوں کی مرتکب ہو رہی ہے اور اس اسٹیٹمنٹ میں بھی انہوں نے اپنی لاچاری کا اظہار کیا تھا۔

آج جو اسٹیٹمنٹ دیا گیا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ یہ اسٹیٹمنٹ بھی ایک مجہول اسٹیٹمنٹ کے سوا اور کچھ بھی نہیں ہے۔ انتہائی لاچاری کا اظہار اس اسٹیٹمنٹ میں کیا گیا ہے آج میں ہمارے بی۔ جے۔ پی کے بھائیوں سے کچھ نہیں کہوں گا۔ اس وجہ سے کہ ان کی ہٹ دھرمی ظاہر ہے ان کی نیت صاف ظاہر ہوچکی ہے اور وہ کس طرح سے بھی اس مسجد کو نقصان پہنچانے پر تلے ہوئے ہیں تو ان سے کہنا۔ کیا حاصل۔

میں تو صرف ہمارے ہوم منسٹر صاحب سے اور حکومت ہند سے پوچھوں گا کہ آپ کیا کر رہے ہیں۔ ۸ر تاریخ کو اسٹیٹمنٹ دیا اور پھر ۱۲ تاریخ کو اب خود بنس نہیں ایودھیا کا دورہ کیا اور اس متنازعہ مقام کا آپ نے معائنہ کیا اور آپ نے اپنے اسٹیٹمنٹ میں یہ ظاہر کر دیا ہے کہ ریاستی حکومت کی طرف سے وہاں پر خلاف ورزی ہو رہی ہے تو اس کے باوجود آپ کا ابھی بھی یہ کہنا ہے کہ وہاں کے چیف منسٹر صاحب سے درخواست کی جارہی ہے۔

श्री रफीक आलम (बिहार) : उप-सभाध्यक्ष जी, होम मिनिस्टर की स्टेटमेंट से साफ जाहिर होता है कि आप लाचार हैं, हम कुछ कर नहीं सकते और इससे यह जाहिर होता है कि The Uttar Pradesh Government has declared independence against Dtlhi Raj. यू०पी० गवर्नमेंट कुछ सुनने को तैयार नहीं है। अब सवाल यह पैदा होता है कि क्या हर स्टेट इसी तरह इंडीपेंडेंस डिक्लेयर करेगी ? क्या यह मुल्क एक रहेगा या नहीं रहेगा ? क्या यह मुल्क बार-बार बंटेगा ? कुछ लोगों ने इस देश को मजहबों के नाम पर बांटा। आज मेरा भारतीय जनता पार्टी पर डाइरेक्ट चार्ज है कि मंदिर और मस्जिद के नाम पर पूरे मुल्क को यह बांटने जा रहे हैं। आखिर यह हो क्या रहा है ? क्या यह राजनीति हमारे मुल्क की सभ्यता को खत्म करेगी, क्या हमारी सेन्ट्रल गवर्नमेंट देखती रहेगी ? यहां मस्जिद-मंदिर का सवाल नहीं है, यहां सवाल है इस मुल्क में कानून रहेगा या नहीं रहेगा, कानून का राज रहेगा या नहीं रहेगा, या हठ-धर्मी का राज रहेगा ? जो चाहे मंदिर बना दे या मस्जिद बना दे और सरकार देखती रहे। इसलिए सरकार को सोचना पड़ेगा कि जब कांस्टीट्यूशन के नाम से हमने कसम खाई है तो कांस्टीट्यूशन को अपहोल्ड भी करना पड़ेगा। साथ-साथ मुझे हिटलर का जमाना याद है। हिटलर ने रेशियल सुपीरियार्टी कह करके तमाम पार्टियों को, जितनी पार्टियां वहां थीं रेशियल सुपीरियार्टी के नाम पर एक व्यक्ति ने सब पार्टियों को खत्म कर दिया। आज यह धर्म के नाम पर अगर ये सैकुलर फोर्सेस यूनाइट नहीं होती हैं जिनका यह वास्ता दे रहे हैं तो याद रखिए कि मुल्क तो टुकड़े होगा ही, आज क्या वजह है कि पंजाब के सिख भाई खालिस्तान मांग रहे हैं ? मैं साफ पूछना चाहता हूं एज ए सिटीजन आफ द कंट्री चूंकि अगर भारत जनता पार्टी हिन्दू राष्ट्र का नारा नहीं देती तो सिख खालिस्तान का नारा नहीं देते। आजादी की लड़ाई में सभी एक थे। चाहे हिन्दु भाई हों या मुसलमान भाई हों या सिख भाई हों या ईसाई भाई हों, सभी ने एकजुट हो करके लड़ाई लड़ी थी। आज यह भेदभाव क्यों ? आज आजाद काश्मीर का नारा क्यों लगाया जाता है ? सिर्फ हिन्दू राष्ट्र का, उनको भी खतरा हो गया है कि हिन्दू राष्ट्र हो गया तो हम कहां रहेंगे ? इस तरह से मुल्क का फिर अगर हम बंटवारा करते जायें तो हम लोगों के लिए इससे ज्यादा लज्जा और शर्म की बात और कोई नहीं हो सकती। न हिन्दुस्तान की जनता मुआफ कर सकती है कि आपको एम०पी० बना कर भेजें हम, आपके हाथ में हमने हकूमत दी, भारतीय जनता पार्टी को कितने वोट आए हैं ? ज्यादातर तो सैकुलर फोर्सेस को वोट आए हैं। ये सैकुलर पार्टियां आखिर कर क्या रही हैं ? जनता आज हमारी तरफ देख रही है। इसलिए मेरी सब से अपील है कि जितनी सैकुलर पार्टीज हैं और वाकई सैकुलर हैं, एक हो कर मुकाबला करें ताकि धर्म और मजहब के नाम पर मुल्क का बंटवारा न हो, मंदिर और मस्जिद के नाम पर मुल्क तबाह और बर्बाद न हो। बहुत खून-खराबा हुआ 1947 से आज तक, मैं अहमदाबाद गया था। आप यह ताज्जुब कीजिएगा एक तरफ सोची-समझी स्कीम के तहत मुसलमानों के घर जलाए गए और रास्ता बहुत छोटा था। 10 लाख आदमी कैसे गुजरेंगे ? यह रास्ता क्यों दिया गया ? इस तरह की बातें आज हो रही हैं। जितनी कोमें हैं, क्रिश्चियन भी हैं, यहूदी भी हैं, पारसी भी हैं, मुसलमान भी हैं, हिन्दू भी हैं और सिख भाई भी हैं, यह तो सभी का देश है। यह तो ऐसा गुलदस्ता है कि इसमें हर तरह के फूल हैं। इस गुलदस्ते को कायम रखने के लिए फादर आफ द नेशन महात्मा गांधी ने अपनी जान दे दी और यही नहीं, इंदिरा जी की भी जान गई। आखिर में इस मुल्क की खातिर राजीव जी ने भी जान दी। ये लोग जानें देते रहे और हम लोग मुल्क को बर्बाद करते रहे। इसलिए पार्लियामेंट को यह हक पहुंचता है, आज पूरे भारत की जनता देख रही है कि हमारे मित्र

5.00 P.M. क्या करने जा रहे हैं। हमारी सेंट्रल गवर्नमेंट क्या करने जा रही है और यह देखिए, यह स्टेटमेंट

होम मिनिस्टर का है, होम मिनिस्टर कहते हैं कि "Kar Seva is continuing and the construction of a concrete platform is in progress."

हम लोग सुप्रीम कोर्ट को मानते हैं, हाईकोर्ट को मानते हैं और जब कोर्ट यह कहती है कि पर्मानेंट स्ट्रक्टर हो नहीं सकता, लेकिन जब पर्मानेंट स्ट्रक्चर बनता है तो हम कि तमाशायी की तरह देख रहे हैं। How long will this continue?

और यही नहीं नीयत कितनी साफ है यू० पी० गवर्नमेंट की कि---

"The police control room has been shifted and temporarily located in a small room."

पुलिस को भी हटा दिया गया। दिन-दहाड़े, दिन के उजाले में हो या रात के अंधेरे में हो, यह जो चाहें सो करें और सब देखते रहें। इसलिए मेरी केन्द्रीय सरकार से अपील है कि बहुत वक्त गुजर चुका, पानी सिर से ऊंचा हो चुका है, आप कोई निर्णय लें। मंदिर भी बने, उसमें किसी को एतराज नहीं है। मस्जिद भी कायम रहे। मुल्क में गिरिजाघर भी कायम रहें, मुल्के में गुरूद्वारे भी कायम रहें, लेकिन ये इस तरह की बातें कर के दूसरे लोगों को कमजोर करने की कोशिश करते हैं। समाजवादी जो, अगर बदन का एक हिस्सा कमजोर होता है तो पूरा बदन कमजोर हो जाएगा। यहां एक तरह की इंटरनेशनल साजिश हो रही है कि इस मुल्क को डिस्टेब्लाइज किया जाय। कुछ लोग मंदिर और मस्जिद के नाम पर मुल्क को तबाह करने पर तुले हुए हैं और हम हैं कि तमाशायी की तरह देख रहे हैं। इसलिए मैं सेंट्रल गवर्नमेंट से अपील करूंगा कि You must take action and save the country, for God's sake.

†شری رفیق عالم (بہار): اپ سبھا ادھیکش جی۔ ہوم منسٹر کی اسٹیٹمنٹ سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ آپ لاچار ہیں۔ ہم کچھ کر نہیں سکتے اور اس سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ

The Uttar Pradesh Government has declared independence against Delhi Raj.

یو۔پی گورنمنٹ کچھ سننے کو تیار نہیں ہے۔ اب سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ کیا ہر اسٹیٹ اس طرح انڈی پینڈنس ڈکلیئر کرے گی۔ کیا یہ ملک ایک رہے گا۔ یا نہیں رہے گا۔ کیا یہ ملک بار بار بٹے گا۔ کچھ لوگوں نے اس دیش کو مذہبوں کے نام پر بانٹا۔ آج میرا بھارتیہ جنتا پارٹی پر ڈائریکٹ چارج ہے کہ مندر اور مسجد کے نام پر پورے ملک کو بانٹے جا رہے ہیں۔ آخر یہ ہو کیا رہا ہے۔ کیا یہ راج نیتی ہمارے ملک کی سبھیتا کو ختم کرے گی کیا ہماری سنٹرل گورنمنٹ دیکھتی رہے گی۔ یہاں مسجد مندر کا سوال نہیں ہے۔ یہاں سوال ہے۔ اس ملک میں قانون رہے گا یا نہیں رہے گا۔ قانون کا راج رہے گا یا نہیں رہے گا یا جٹ دھرمی کا راج رہے گا جو چاہے مندر بنا دے یا مسجد بنا دے اور سرکار دیکھتی رہے۔ اس لئے سرکار کو سوچنا پڑیگا کہ جب کانسٹی ٹیوشن کے نام سے ہم نے

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

اور شرم کی بات اور کوئی نہیں ہو سکتی ہے ہندوستان کی جنتا معاف کر سکتی ہے کہ آپ کو ایم۔پی۔ بنا کر بھیجیں ہم۔ آپ کے ہاتھ میں ہم نے حکومت دی۔ بھارتیہ جنتا پارٹی کو کتنے ووٹ آئے ہیں۔ زیادہ تر تو سیکولر فورسیز کے ووٹ آتے ہیں۔ یہ سیکولر پارٹیاں آخر کر کیا رہی ہیں۔ جنتا آج ہماری طرف دیکھ رہی ہے۔ اس لئے میری سب سے اپیل ہے کہ جتنی سیکولر پارٹیاں ہیں اور واقعی سیکولر ہیں۔ ایک ہو کر مقابلہ کریں تاکہ وہاں دھرم کے اور مذہب کے نام پر ملک کا بٹوارا نہ ہو۔ مندر اور مسجد کے نام پر ملک تباہ اور برباد نہ ہو۔ بہت نقصان خرابہ ہوا۔ ۱۹۴۷ سے آج تک۔ میں احمد آباد گیا تھا۔ اور یہ تعجب کیجئے گا ایک طرف سوچی سمجھی اسکیم کے تحت مسلمانوں کے گھر جلائے گئے اور راستہ بہت چھوڑا تھا۔ لاکھ آدمی کیمپ گئے ریلیف کیمپ گئے یہ راستہ کیوں دیا گیا۔ پارسی بھی ہیں۔ مسلمان بھی ہیں۔ ہندو بھی ہیں اور سکھ بھائی بھی ہیں۔ یہ تو سبھی کا دیش ہے۔ یہ تو ایسا گلدستہ ہے کہ اس میں ہر طرح کے پھول ہیں۔ اس گلدستے کو قائم رکھنے کے لئے فادر آف دی نیشن مہاتما گاندھی نے اپنی جان دے دی اور یہی نہیں اندرا گاندھی قسم کھائی ہے تو کانسٹی ٹیوشن کو اپ ہولڈ بھی کرنا پڑے گا۔ ساتھ ساتھ مجھے ہٹلر کا زمانہ یاد ہے۔ ہٹلر نے ریشیل سپیریریٹی کہہ کر تمام پارٹیوں کو جتنی پارٹیاں وہاں تھیں۔ ریشیل سپیریریٹی کے نام ایک ویکتی نے سب پارٹیوں کو ختم کر دیا۔ آج یہ دھرم کے نام اگر یہ سیکولر فورسیز یونائٹ نہیں ہوتی ہیں۔ جن کا یہ واسطہ دے رہے ہیں۔ تو یاد رکھئے کہ ملک ٹوٹکڑے ہوگا ہی۔ آج کیا وجہ ہے کہ پنجاب کے سکھ بھائی خالصتان کی مانگ کر رہے ہیں میں صاف پوچھنا چاہتا ہوں۔ "ایز اے سٹیزن آف دی کنٹری" چونکہ بھارتیہ جنتا پارٹی ہندو راشٹر کا نعرہ نہیں دیتی تو سکھ خالصتان کا نعرہ نہیں دیتے۔ آزادی کی لڑائی میں سبھی ایک تھے۔ چاہے ہندو بھائی ہوں یا مسلمان بھائی ہوں یا سکھ بھائی ہوں۔ یا عیسائی بھائی ہوں۔ سبھی نے ایک جٹ ہو کر کے لڑائی لڑی تھی۔ آج یہ بھید بھاؤ کیوں۔ آج آزاد کشمیر کا نعرہ کیوں لگایا جاتا ہے۔ صرف ہندو راشٹر کا۔ ان کو بھی خطرہ ہو گیا ہے کہ ہندو راشٹر ہو گیا تو ہم کہاں رہیں گے۔ اس طرح سے ملک کا پھر اگر ہم بٹوارا کرتے جائیں تو ہم لوگوں کے لئے اس سے زیادہ لجا

میں ہو۔ یہ جو چاہے سو کریں اور ہم
دیکھتے رہیں۔ اس لئے میری کینڈر سرکار
سے اپیل ہے کہ بہت وقت گزر چکا۔
پانی سر سے اونچا ہو چکا ہے۔ آپ کوئی
قدم لیں۔ مندر بھی بنے۔ اس میں کسی کو
اعتراض نہیں ہے۔ مسجد بھی قائم رہے
ملک میں گرجا گھر بھی قائم رہے۔ ملک
میں گوردوارے بھی قائم رہیں لیکن اس
طرح کی باتیں کر کے دوسرے لوگوں کو
کمزور کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔ محترم
جی۔ اگر بدن کا ایک حصہ کمزور ہوتا ہے
تو پورا بدن کمزور ہو جائے گا۔ یہاں ایک
طرح کی انٹرنیشنل سازش ہو رہی ہے
کہ اس ملک کو ڈی اسٹیبلائز کیا جائے
کچھ لوگ مندر اور مسجد کے نام پر ملک
کو تباہ کرنے پر تلے ہوئے ہیں اور ہم
ہیں کہ تماشائی کی طرح دیکھ رہے ہیں
اس لئے میں سینٹرل گورنمنٹ سے اپیل
کروں گا کہ

You must take action and save the country, for God's sake.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Prof. Saurin Bhattacharya. Only two minutes today, please. You have to co-operate with me today. Only two minutes.

PROF. SAURIN BHATTACHARYA (West Bengal): Sir, I always co-operate and, as you know, co-operation is a two-way process.

Sir, let me begin with the observation that perhaps the Home Minister of India did the greatest harm to the cause of

جی کی بھی جان گئی۔ آخر میں اس ملک کی
خاطر راجیو جی نے بھی جان دی۔ یہ لوگ
جان دیتے رہے اور ہم لوگ ملک کو برباد
کرتے رہے۔ اس لئے پارلیمنٹ کو یہ حق
پہنچتا ہے آج پورے بھارت کی جنتا دیکھ
رہی ہے کہ ہمارے منسٹر کیا کرنے جا رہے
ہیں۔ ہماری سنٹرل گورنمنٹ کیا کرنے جا
رہی ہے اس لئے ہم چاہتے ہیں ہوم منسٹر
کہ ہوم منسٹر کہتے ہیں کہ۔

"Kar Seva is continuing and the construction of a concrete platform is in progress.

ہم لوگ پیریم کورٹ کو مانتے ہیں ہائی کورٹ
کو مانتے ہیں اور جب کورٹ یہ کہتی ہے
کہ پرائمنسٹر اسٹرکچر ہو نہیں سکتا لیکن
جب پرائمنسٹر اسٹرکچر بنتا ہے تو ہم ایک
تماشائی کی طرح دیکھ رہے ہیں

How long will this continue?

اور یہی نہیں دیکھئے کتنی صاف ہے یو۔پی
گورنمنٹ کی کہ

"The Police control room has been shifted and temporarily located in a small room."

پولیس کو بھی ہٹا دیا گیا۔ دن دہاڑے۔
دن کے اجالے میں ہو یا رات کے اندھیرے

[Prof. Sourin Bhattacharya]

protecting the Ram Janmabhoomi-Babri Masjid by visiting the site of illegal construction. His statement says that there is a *prima facie* case to show that it is illegal and by saying that, he himself is *prima facie* responsible for the gross dereliction of duty as the Home Minister of India.

Sir, hopes were raised by the visit of the Home Minister and all eyes were fixed on him and we were all waiting to hear what he was going to say. But ultimately, this is the statement that we have received and even in this statement he says *prima facie* his and *prima facie* that. But there is one sentence in the statement on the first page:

> "I also underlined that the Ram Janmabhoomi-Babri Masjid dispute had acquired national significance with large ramifications and the State Government should consult the Government of India beore permitting any construction activities in the Ram Janmabhoomi-Babri Masjid complex in future."

So, the purpose for which he went there is hereby just washed out. That is all. If that is the idea, he should have clearly and categorically stated that. But what is the position at Ayodhya? What is the status of the place which is called Ayodhya, which is called Ram Janmabhoomi and which is called Babri Masjid without any conclusive evidence? Rama's existence in that particular period, in that particular place, and things like that are more conjectures. But religious belief which is misused in this manner may lead to a great conflagration in our country. This significance of this entire problem should not be lost sight of by anybody, Hindus or Muslims and, perhaps, more by Hindus because they are by far the majority community in the country. It is a national issue and it should be dealt with like that. At least, I am not one who would suggest that, if found guilty, the Kalyan Singh Government of Uttar Pradesh should be dismissed and the President's Rule imposed there. We have opposed it throughout; we oppose it even now. But ways must be found to rompel the Government in Uttar Pradesh to follow the secular principles, truly and honestly, without any circumvention or without any subterfuge. That is the responsibility of the Home Minister of the country. He has given a teacher-like admonition to the UP Government but without being able to make that pupil comply 380 ways and ways to circumvent the admonition of the teacher But this teacher-like approach is not commensurate with the gravity of the situation that is now prevailing in the country in connection with this issue. Those who are trying to utilise this issue as a vote-catching machinery are really playing with fire, and they should not be, they must not be allowed to do that thing. The Uttar Pradesh Government has clearly acted in a fraudulent manner when it acquired the land adjacent to Babri Masjid-Ram Janmabhoomi for promotion of tourism purposes to be in the hands of the Government and then transferred it to Vishwa Hindu Parishad or Bajrang Dal for certain other purposes. So, that is a very blatant aspect. But the greatest tragedy, and the greatest danger is that.

* * *

* *

This danger is also appearing on the scene with the latest judgment on this particular issue. So, that way, we should in no way minimise the danger imminent in this situation. And the Government of India must make up its mind, clearly delineate what it wants to do and what it cannot do. If it cannot, it is better let them say, "we are unable to do anything". That is also a position which is understandable, more than its helpless situation. Thank you, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Now, Mr. Muham-

---

*Expunged as ordered by the Chair.

mad Masood Khan. This is your maiden speech. But now the time is very much limited. Please take only two minutes.

SHRI P. SHIV SHANKER: Mr. Vice-Chairman, Sir, you may kindly consider whether this observation should go on record, the observation of the hon. Member that *

SHRI SIKANDER BAKHT: Who has said that?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Is it so?

SHRI P. SHIV SHANKER: You would like to go into the record.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): If that is so, it cannot be on record.

SHRI P. SHIV SHANKER: Please look into the record.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I will look into the record. And if those words are there, then these have to be expunged. They cannot go on record. Thank you, very much, Mr. Shiv Shanker.

PROF. SAURIN BHATTACHARYA: I said, this danger is appearing.

श्री मोहम्मद मसूद खान (उत्तर प्रदेश) : मोहतरमा बाबरी मस्जिद राम जन्मभूमि का मसला सिर्फ अयोध्या का मसला नहीं है, यू०पी० का मसला नहीं है बल्कि यह पूरे देश और पूरे नेशन का मसला हो गया है। जो कंस्ट्रक्शन हो रहा है और सबकी आंखें इस वक्त सेंट्रल गवर्नमेंट की तरफ लगी हैं कि वह क्या फैसला करती है। जो कंस्ट्रक्शन हो रहा है, जिसके सिलसिले में मोहतरम वजीरे दाखिला साहब गए थे, देखकर आए हैं, आज हाऊस में बयान दिया है, उसके बारे में दो तीन प्वाइंट मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। नतीजा यह निकला है कि जो कोर्ट का आर्डर है उसकी भी हुकमअदूली हो रही है, जो मुनासिब सवालात आपने रखे थे उसका भी माकूल और मुनासिब जवाब नहीं आया और उसके बाद उसके उपाय, उसके सिलसिले में कार्यवाही करने का जहां तक ताल्लुक है सिर्फ परस्यूएड करने की बात कही गई। मोहतरमा सिर्फ परस्युऐशन से काम चल सकता तो जाहिर बात है कि आज फिजां खराब नहीं होती।

मोहतरमा वजीरे दाखिला साहब को मजबूती के साथ स्टैप लेना चाहिए। जो भी निजाई जमीन है बाबरी मस्जिद राम जन्मभूमि की, जब तक अदालत का फैसला नहीं हो जाता, जब तक दोनों फिरकों से बातचीत से मसला हल नहीं हो जाता, एक भी कंकरी रखने का काम, कंस्ट्रक्शन का काम वहां नहीं होना चाहिए। इसके बाद जो भी मजबूत से मजबूत स्टैप हो, वह लेना चाहिए। मान्यवर, एक बात और कहना चाहता हूं कि फिजां इतनी खराब है कि आज हाऊस के अंदर जो एक तल्ख फिजां हुई, यह बाहर भी इतनी ज्यादा है कि पता नहीं कितने रिमार्क कसे जाते हैं मुसलमानों के ऊपर। मैं एक बात कहना चाहता हूं कि मुसलमान इस मुल्क के जर्रे-जर्रे से प्यार करता है। वह जिंदगी में जीना तो जीना, मरने के बाद भी ख्वाहिश होती है कि हम जिस जगह पैदा हुए हैं वहीं दफन हों और जब वह दफन होता है तो तीन दुआयें पढ़ी जाती हैं—

"मिनहा खलकनाकुम्वफीहानुईदुकुम
मिनहा नुखरिजुकुम तारतन उखरा"

*Expunged as ordered by the Chair.

[श्री मोहम्मद मसूद खान]

यहीं से पैदा हुए इसी में जा रहे हैं, इसी से फिर उठेंगे । ऐसे लोगों को, ऐसे फिरक्कों को, ऐसे तबके के लोगों को अगर किसी किस्म का रिमार्क कसा जाए और कहा जाए कि वह वफादार नहीं हैं तो ऐसे लोग रिमार्क कसने वाले लोग वफादार नहीं हैं और उनको ज्यादा वफादार रहना चाहिए।

मान्यवर, एक बात और कहना चाहता हूं कि सन् 1947 के पहले जब इस मुल्क की आजादी की लड़ाई हो रही थी तो तीन सजायें सबसे बड़ी थीं—एक तो फांसी की, दूसरी जिलावतनी की और तीसरी मुल्कबदरी की। इन तीनों सजाओं में सबसे ज्यादा जिसको भोगा है, उसमें मुसलमान थे । आज वाक्या यह है कि हमको कहना पड़ता है कि—

"हमने सींची है खूं से जमीन, पत्ते-पत्ते से आश्तारा है,

नीयते बागबां दुरुस्त नहीं, वरना गुलशन में हक हमारा है"

यह कहने के बाद मैं फिर वजीरे दाखिला से उम्मीद करता हूं कि जवाब में वह कोई मजबूत स्टैप लें। मुल्क बड़ा है, पार्टी छोटी है । पार्टी की सतह से उठकर कैसे हिन्दु-मुसलमान एकता कायम हो, कैसे यह मुल्क पारा-पारा न हो सके, कैसे देश की एकता कायम रहे, इसके वास्ते इनको मजबूत स्टैप लेने चाहिएं। बड़े से बड़ा चीफ मिनिस्टर हो, बड़ी से बड़ी स्टेट हो, अगर वह आपकी माकूल बातें नहीं मान रही है तो उसको चाहे डिसमिस करना हो, चाहे जो भी कारवाई करनी हो, वह मुनासिब कार्यवाही करने के वास्ते आप तैयार हों । हम सब लोग, जितनी सैकुलर फोर्सेस हैं वह सब आपके साथ हैं ।

मौलाना ओबेदुल्ला खान आजमी : वाइस चेयरमैन सर, मैं आपकी तवस्सुख से होम मिनिस्टर साहब की तवज्जह आलमी खबरों की तरफ करवाना चाहता हूं :

सुन तो सही जहां में है तेरा फसाना क्या,
कहती है तुझको खलते खुदा गायबना क्या ।

बाबरी मसजिद के इश्यू पर जबर्दस्त बहस यहां हो चुकी है और हुकूमत पर पूरा-पूरा जेहन रखने वालों का दबाव पड़ रहा है कि हुकूमत अपने सैकुलर किरदार को वाजेह करे । इस मामले में सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि बी०बी०सी० ने जिस तरह खबर नम की है वह हिन्दुस्तान के सैकुलरइज्म की तबाही के लिए मजबूत गारन्टी फराहम करती है । बी०बी०सी० ने अपने नसरिया में कहा कि हिन्दुस्तान में अयोध्या में इस तरह के गैर-कानूनी तामीरी काम को देखकर अब तो यह लग रहा है कि हिन्दुस्तान में कानून की बालादस्ती खत्म हो चुकी है, हिन्दुस्तान में कानून का कोई राज नहीं रह गया है। मैं सिर्फ आपको यह रिक्वेस्ट करूंगा कि आप मजबूती के साथ यह साबित कीजिए कि हिन्दुस्तान में कानून है, हिन्दुस्तान में मसजिदों को बचाने के लिए हुकूमत वचनबद्ध है, हिन्दुस्तान में सैक्युलरिजम को हुकूमत किसी भी कीमत पर मरने नहीं देगी, बी०जे०पी० का करेक्टर अगर कांग्रेस अपनी खामोशी के साथ, बेअमली के साथ पेश करेगी तो इस मुल्क में गांधी जी का खून हमेशा के लिए कराहता रहेगा । इस मुल्क में जिन हिन्दुस्तानी हिन्दू और मुसलमानों ने मुल्क के इत्तिहाद और तालिमियत के लिए अपना खून जिगर देकर इस मुल्क के हिन्दु-मुस्लिम, और इस मुल्क की मजहबी भावनायें मसजिद और मंदिर का तवफुस किया है, आज वक्त आ गया है कि गांधी के खून की सही कीमत अदा कीजिए और देश को सांप्रदायिकता से बचाते हुए साप्रदायिकता की जड़ें उखाड़ दीजिए, यही मेरी आपसे गुजारिश है ।

ہندوستان میں سیکولرازم کو حکومت کسی بھی قیمت پر مرنے نہیں دے گی۔ بی۔ جے۔ پی۔ کا کیریکٹر اگر کانگریس اپنی خاموشی کے ساتھ بے عملی کے ساتھ پیش کرے گی۔ تو اس ملک میں گاندھی جی کا خون ہمیشہ ہمیشہ کے لئے کراہتا رہے گا۔ اس ملک میں جن ہندوستانی ہندو اور مسلمانوں نے ملک کے اتحاد اور سالمیت کے لئے اپنا خونِ جگر دے کر اس ملک کے ہندو مسلم۔ اور اس ملک کی مذہبی بھائی چارگی مسجد اور مندر کا تحفظ کیا ہے۔ آج وقت آگیا ہے کہ گاندھی کے خون کی صحیح قیمت ادا کیجئے اور دیش کو سامپردایکتا سے بچاتے ہوئے سامپردایکتا کی جڑیں اکھاڑ دیجئے۔ میری آپ سے گذارش ہے۔ شکریہ

"ختم شد"

SHRI S. B. CHAVAN: Mr. Vice-Chairman, Sir, I have heard with great patience the view expressed by most of the hon. Members. But I am sorry to say that some of the hon. Members who made suggestions are not in the House.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Because they are not sincere.

SHRI S. B. CHAVAN: There were some who made their maiden speeches It was quite and interesting feature to see, today, Mr. Gujaral, in this maiden speech, pleading very vehementlyy that a very strong action should be taken

† [ ] Transliteration in Arabic Script.

مولانا عبید اللہ خان اعظمی (اتر پردیش) دانش پیمبر میں سمجھ رہا ہوں آپ کے توسط سے ہوم منسٹر صاحب کی توجہ عالمی خبروں کی طرف کروانا چاہتا ہوں۔

سن تو سہی جہاں میں ہے تیرا فسانہ کیا
کہتی ہے تجھ کو خلقِ خدا غائبانہ کیا

بابری مسجد کے اشو پر زبردست بحث یہاں ہو چکی ہے اور حکومت پر پورا پورا ذمہ رکھنے والے لوگوں کا دباؤ پڑ رہا ہے کہ حکومت اپنے سیکولر کردار کو واضح کرے۔ اس معاملے میں صرف اتنا کہنا چاہوں گا کہ بی۔ بی۔ سی نے جس طرح خبر نشر کی ہے۔ وہ ہندوستان کے سیکولرازم کی تباہی کے لئے مضبوط گارنٹی فراہم کرتی ہے۔ بی۔ بی۔ سی نے اپنے نشریہ میں کہا کہ ہندوستان میں ایودھیا میں اس طرح کے غیر قانونی تعمیری کام کو دیکھ کر اب تو یہ لگ رہا ہے کہ ہندوستان میں قانون کی بالادستی ختم ہو چکی ہے۔ ہندوستان میں قانون کا کوئی راج نہیں رہ گیا ہے۔ میں صرف آپ کو یہ رکویسٹ کروں گا کہ آپ مضبوطی کے ساتھ یہ ثابت کیجئے کہ ہندوستان میں قانون ہے۔ ہندوستان میں مسجدوں کو بچانے کے لئے حکومت وچن بدھ ہے۔

[Shri S. B. Chavan]

against the State Government. For a change, it was quite interesting, I must say because I have heard many hon. Members, sitting on the opposite, requesting the Central Government not be hasty in its action, consider coolly the pros and cons and that once we decided to take action, we should not fall into a trap, into which, I am sorry to say, Mr. Gujral himself had fallen. (*Interruptions*)

SHRI P. SHIV SHANKER: Into which Mr. Sikander Bakht would like you to fall.

SHRI S. B. CHAVAN: His Government promulgated an Ordinance one day, but it had to withdraw the same the next day.

Sir, it was a very interesting sight for me to see that some of the hon. friends were very sympathetic to the Home Minister because for the Pathetic nature of the statement that I had given. Everybody was full of praise, full of sympathy, and ultimately, plead ed with me 'Now, you will have to take action to show that Government means business in this matter'. Because of the emotional speeches, some hon. Members fell prey. They began suspecting as if we are going to leave the minorities high and dry. Let me say this in the initial stage itself. When I say this, I mean what I say.

We want to give full protection to all the minorities living in India, irrespective of whether we remain in office or not. We are not bothered about it. We will not witness a thing which is against the basic principle of our polity. If secularism dies, we better not be in office. I do believe in it. I say this not with a view to giving any threat to anyone.

I would also request my BJP friends, though some hon. Members have said that they are beyond correction; 'Do not make any appeal to them'. So long as Mr. Sikander Bakht happens to be the Leader of the Opposition, I have still some hope. (*Interruptions*)

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Mr. Sikander Bakht has already crossed over.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): He is an old Congressman.

SHRI S. B. CHAVAN: I have every hope that Mr. Sikander Bakht will see the writing on the wall and create the proper atmosphere in the country. By all means, follow your own economic policy. We do not have any quarrel on that. But if you pursue...

SHRI S. JAIPAL REDDY: There is no quarrel on that. They are one with you.

SHRI S. B. CHAVAN: That is another obsession. I am happy that you have reminded me. That is another obsession which our friends would like to establish that Congress is now in alliance with BJP. That is the theme in which they are interested and that is why all kinds of things are being said here which otherwise, I am sure, they would not have said. May I make an appeal to you. In spite of your best wishes, this thing is not going to materialise; we are not going to oblige you by aligning yourselves with BJP friends because we do not believe in communal politics. The day Congress believes in communal politics, it will not remain Congress at all. That is my view and that is why...

DR. JINENDRA KUMAR JAIN: Congress has only been playing communal politics.

SHRI S. B. CHAVAN: You must understand the implication of what I am saying. Try to understand it. That is the only thing. I do not want to give anyother reply.

Shri Sunder Singh Bhandari was going on very right lines. I have great appreciation for the kind of speech that he was giving. I thought that what he was saying as sincere, honest out of conviction but when I put just one question the cat came out of the bag

and he had to admit, no, this is just a beginning and ultimately it is the Masjid also which is going to be covered in their plan; but it is going to take some time. In the meanwhile, might be, there might be a change of heart. This is what he has said, if I have understood him correctly. So, at least, Mr. Sunder Singh Bhandari still believes that there can be a change of heart and they can give up their claim on the disputed structure and concentrate only on the construction of the temple. If that were to happen, even in spite of accepting what my friend Mr. Jaipal Reddy has been saying that we are aligning with BJP. I am prepared to accept that position. Concentrate on the construction of temple; we have no quarrel. But the day you try to destroy the mosque, then whatever be the power under the Constitution that the Government has, we will never hesitate to use against them. Please, for God's sake do not create that condition. (*Interruptions*). That is why I must say for the information of Mr. Sunder Singh Bhandari that there are two misconceptions under which he was labouring. One was, having acquired the land, thereafter they get the full powers to do whatever they like. This information is not correct. The Court's judgement is, you can take the posession subject to the final order of the court. So, that is the first thing. Second will be the objectives for which you have acquired the land. What is the public purpose for which you have acquired the land? It is for tourism purposes. Now, is it the part of tourism that you are pursuing? Is this platform meant for any tourist purpose that you are constructing there, or is it for the construction of a Mandir? That is the plain and simple question to which you have to reply but the very fact that you are non-committal does not convey your helplessness but some sense. I am sorry that some hon. Members have not been able to follow, when I say that they were non-committal what exactly that means. They do not want to give any reply to this and that is why before coming to the House, yesterday also I had contacted the Chief Minister of U.P. to find out whether the land was still in the possession of the U.P. Government or they had trasferred the possession to some other body. To this, their reply on the telephone at least is, no, they have not transferred it. Are these people working as your agents there, was another question. To this question I expected a reply and he said, no. They are neither your agents, nor you have transferred the land to them. In that case, in what capacity are these people working there, is the question which arises. And again I get the same reply—non-committal! He does not want to commit himself because he knows it for a fact that in spite of his best efforts he cannot maintain the position of the Government. There are certain elements who, in fact, have forced certain issues there. It is not convenient for them to say anything on this and that is why they are bound to say, 'No, they are, after all, our own kith and kin; it is our friends who are working there." In spite of all that, if you have to do anything, as a result even of a Supreme Court judgement if you have to persuade them "Either do this or don't do this", then the real test is going to come. The order of the Court to be implemented through the State Government, whether it is going to be obeyed or not is going to be the real test, and that is why at this stage I would not like to say anything more. So, that is the first thing about which I thought I should clarify the position.

So, Mr. Bhandari, if he were to know this, I am sure,—with persuasion he feels that there can be a change of heart—that is the only thing that remains for him. I am sure that Mr. Bhandari has some kind of a standing; and so also my friend, Mr. Sikander Bakht. If both of you can persuade your friends that ultimately the kind of politics which you have undertaken is not going to be in the interest of the country, whether you belong to Hindus or Muslims is immaterial to me. I am sure, what some of our friends have

[Shri S. B. Chavan]

said is correct. It is not for the construction of the temple that they are trying to do this. It is a political issue and they would like to exploit the religious sentiments of the people for political purposes. So, at least in our analysis it is very clear. At least, I have no doubt about it. But, at the same time, there is something like persuading each other. After all, in this House, in a democratic setup, when we discuss a number of things, the whole purpose is to convert to our point of view the others who are not, and that is what we are doing. So I would request them to kindly try to understand and not to create conditions in which a message is going to go.

I don't believe in what the BBC says. The BBC or any other foreign TV or radio have their own way of saying things. But if we are really true to the oath which we have taken, that we are going to preserve the secular character of our polity, I am sure the hon. Members sitting on the other side should be able to persuade themselves and see if it is really secularism which they are now trying to propagate in this country. Are we going to say that India was first divided into so many castes and now it is on the basis of religion—Hindus and Muslims and then Sikhs and all others also? If this is going to be the situation, then what is going to be the future of our country? That is why I feel that you have got to have some kind of a rethinking.

By all means, you have your political and economic programmes. We have no quarrel on that. On that basis if you were to come to power, certainly nobody can object to that. But if you were to appeal to religious sentiments and exploit them for political purposes, then it goes against the very spirit of the Constitution and that is why it becomes necessary that you should not do it.

Sir, there is only one more point and I have done. My friend, Mr. Swaminathan, was pleased to say something about the opinion given to him by the retired Chief Justice of a High Court, or the Supreme Court I don't know.

SHRI G. SWAMINATHAN: High Court.

SHRI S. B. CHAVAN: There are certain constitutional and legal implications involved. Merely by saying no and immediately jumping to this conclusion, things are not going to happen. At least, I won't be a party to such a decision wherein I have not properly analyzed the while thing and come to my own conclusion that legally and contitutionally there is nothing going to be wrong. Then only we will try to take that decision and implement that decision. A clear indication I have given. Normally I would not have said this. I am saying that *prifa facie* I am convinced that they have violated the orders of the court, which does convey something which the hon. Member should try to understand. And do not force me to say anyting beyond what I have said.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: You should dismiss them.

SHRI S. B. CHAVAN: It is your wish. First of all I am getting all the pros and cons examined. Thereafter, if I were to plead with the Chief Minister and do not get a reply — don't call it "pathetic" as, I think, this is the only democratic method — if we do not come to any unanimous conclusion, there is the National Integration Council on which all the parties are represented, on which eminent people are also represented. We will go to them and request them to try to evolve some kind of a consensus on this, by which this holocaust should be avoided at any cost. Whether I do it or someone else does it, that is immaterial. I am merely interested in seeing that this very delicate issue is tackled in such a way that this communal atmosphere is put an end to and that the entire

atmosphere is defused of the kind of implications that I foresee. I will again request all the hon. Members: don't come to any hasty conclusions. We will have to apply our mind on this very delicate issue which should not result in a communal tension. But, at the same. we are duty-bound to see that the minorities also do not get a feeling of insecurity. We will have to marry these two concepts. I am sure, with the kind of co-operation that I am expecting from all the hon. Members, we will succeed in finding a solution to the problem.

Thank you.

श्री सिकन्दर बख्त : सदर साहब, मुझे एक गुजारिश, एक अर्ज करनी है। कुछ सवालात होम मिनिस्टर . . . **(व्यवधान)** एक मिनट लूंगा प्लीज। मैंने बड़ी बर्दाश्त से और जब्र से काम लिया है। होम मिनिस्टर साहब ने बहुत सारे सवालात ब्राहोरात्रा नाम लेकर, कुछ सवालों की मेरी तरफ उनकी नजरेकरम थी और कुछ सवालात भंडारी जी से किये थे। मुझे चाहिए तो यह था कि नार्मली उसी वक्त आपसे दरख्वास्त करता कि आप यील्ड करें और आपके सवालों का जवाब उसी वक्त दे देता। लेकिन मैं चाहता था कि आपको अपनी तकरीर खतम करने दूं। मैं सिर्फ दो-तीन बातें कहकर बैठूंगा।

†نیتا درودھی دل شری سکندر بخت: صدر صاحب۔ مجھے ایک گزارش ایک عرض کرنی ہے۔ کچھ سوالات ہوم منسٹر... مداخلت ایک منٹ لوں گا پلیز۔ میں نے بڑی برداشت سے اور ضبط سے کام لیا ہے ہوم منسٹر صاحب نے بہت سارے سوالات براہ راست نام لے کر کچھ سوالوں کی میری طرف ان کی

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

†نظر کرم تھی اور کچھ سوالات بھنڈاری جی سے کئے تھے۔ مجھے چاہیے تو یہ تھا کہ نارملی اسی وقت آپ سے درخواست کرتا کہ ییلڈ کردیں اور آپ کو سوالوں کا جواب اسی وقت دے دیتا لیکن میں چاہتا تھا کہ آپ کو اپنی تقریر ختم کرنے دوں۔ میں صرف دو تین باتیں کہہ کر بیٹھوں گا۔

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): In brief, within one minute, please.

श्री सिकन्दर बख्त : कोई झगड़े की बात नहीं है। बहुत सीधी सादी बात है। आप कोर्ट की बात कही है। अभी कोर्ट के किसी फैसले के एक हिस्से का आपने बयान किया। अगर कोर्ट का वाइलेशन है तो कोर्ट को ही उसका फैसला करने दीजिए। आपके व्यान में इतना-कहना भी कि प्राइमाफेसी मैं समझता हूं कि यह कोर्ट का वाइलेशन है। आप कोर्ट के मामलात में गैर-जरूरी तौर पर दखल दे रहे हैं।

†شری سکندر بخت: کوئی جھگڑے کی بات نہیں ہے۔ بہت سیدھی سادی بات ہے آپنے کورٹ کی بات کہی ہے۔ ابھی بھی کورٹ کے کسی فیصلے کے ایک حصّے کا آپ نے بیان کیا۔ اگر کورٹ کا وائلیشن ہے تو کورٹ کو ہی اس کا فیصلہ کرنے دیجئے۔ آپ کے بیان میں اتنا کہنا بھی کہ پرائمافیسی میں سمجھتا ہوں کہ یہ کورٹ کا وائلیشن ہے۔ آپ کورٹ کے معاملات میں غیر ضروری طور پر دخل دے رہے ہیں۔

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

श्री एस० बी० चव्हाण : हम दखल नहीं दे रहे हैं (व्यवधान)...

श्री सिकन्दर बख्त : होम मिनिस्टर साहब, मैंने आपको बहुत खामोशी से सुना ।

फिरकापरस्ती की जहां तक बात है, आप समझते हैं कि जो कुछ हम कर रहे हैं इससे फिरकापरस्ती का जहर बढ़ रहा है । लेकिन मैं समझता हूं कि फिरकापरस्ती का जहर आप बढ़ा रहे हैं । आप हम पर इल्जाम लगाते हैं कि हम वोटों की सियासत का खेल खेल रहे हैं यह इल्जाम हम आप पर लगाते हैं । मगर वाकयात और हकीकतों की जिस कहानी का तजकरा है आपके खतों के अंदर, इस पर गौर करने की जरूरत है । मैं नहीं जानता कि केरल में कौन था, मिजोरम में कौन था ? कौन है जो फिरकावाराना खेल खेल रहा है ? हम तो यह मानते हैं कि जो सूरतेहाल यहां पैदा की जाती है, जो इस रूख की बात की जाती है उससे कम्युनिटीज के दरम्यान दूरी पैदा होती है । यू० पी० में जहां से होकर आप आये हैं क्या वहां वाकई में कम्युनल टेंशन था ? कल्याणसिंह को जो सरकार विरसे में मिली थी, 33 जगहों पर वहां करफ्यू था, 33 प्लेसेजस । लेकिन अब दर-त्योहार हिन्दू और मुसलमान की खैरियत से गुजरती है । क्या यह कम्युनल टेंशन बढ़ाने की बात है ? चव्हाण साहब हैराश सवाल आप हमारी तरफ डाइरेक्ट न करें । आप अपनी बात कहें तो वह ज्यादा अच्छा है मुझे माफ करेंगे आप ।.....(व्यवधान)

† [1] Transliteration in Arabic Script.

شری سکندر بخت : ہوم منسٹر صاحب میں نے آپکو بہت خاموشی سے سنا۔ فرقہ پرستی کی جہاں تک بات ہے آپ سمجھتے ہیں کہ جو کچھ ہم کر رہے ہیں اس سے فرقہ پرستی کا زہر بڑھ رہا ہے۔ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ فرقہ پرستی کا زہر آپ بڑھا رہے ہیں۔ آپ ہم پر الزام لگاتے ہیں کہ ہم ووٹوں کی سیاست کا کھیل کھیل رہے ہیں۔ یہ الزام ہم آپ پر لگاتے ہیں مگر واقعات اور حقیقتوں کی جس کہانی کا تذکرہ آپ کے خطوں کے اندر اس پر غور کرنے کی ضرورت ہے۔ میں نہیں سمجھتا کہ کیرل میں کون تھا۔ میزورم میں کون تھا۔ کون ہے جو فرقہ وارانہ کھیل کھیل رہا ہے ہم تو یہ مانتے ہیں کہ جو صورت حال یہاں پیدا کی جاتی ہے۔ جو اس رخ کی بات کی جاتی ہے اس سے کمیونٹیز کے درمیان دوری پیدا ہوتی ہے۔ یو پی میں جہاں سے ہو کر آپ آئے ہیں کیا وہاں واقعی کمیونل ٹینشن تھا۔ کلیان سنگھ کو جو سرکار ورثے میں ملی تھی ۳۳ جگہ پر وہاں کرفیو تھا۔ ۳۳ پلیسز لیکن اب ہر تہوار ہندو اور مسلمان کا خیریت سے گزرتا ہے۔ کیا یہ کمیونل ٹینشن بڑھانے کی بات ہے۔ چوہان صاحب، میرا آپ سے سوالات آپ ہماری طرف ڈائریکٹ نہ کریں۔ آپ اپنی بات کہیں تو وہ زیادہ اچھا ہے۔ مجھے معاف کریں گے آپ ....."مداخلت"؟ . . .

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Except Shri Shankar Dayal Singh, nobody else. Ask pointed questions, if you want.

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार): उप-सभाध्यक्ष महोदय, माननीय गृह मंत्री महोदय ने जो बयान दिया वह मैंने ध्यानपूर्वक सुना । मैं केवल एक बात जानना चाहता हूं । आपने यह कहा कि कोर्ट ने किसी तरह के कंस्ट्रक्शन, परमानेंट कंस्ट्रक्शन की मनाही की है । यू० पी० सरकार का कहना है कि जमीन को पर्यटन विभाग ने लिया है जो उसे समतल कर रहा है । जो तथ्य हमारे सामने आए हैं अखबारों में और आपने भी वहां जाकर के देखा है कि 15 फुट की नींव डालकर उस पर चबूतरा बनाया जा रहा है । मैं आपसे एक बात जानना चाहता हूं जिस समय हम लोग यहां बहस कर रहे और आप जवाब दे रहे हैं वक्तव्य दे रहे हैं अगर आज या कल रात में उस चबूतरे पर कोई मन्दिर खड़ा हो गया कोई भगवान रख दिया गया तो मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि आप कौन-से कदम उठायेंगे, यू० पी० सरकार कौन सा कदम उठाएगी और कोर्ट का फैसला क्या होगा ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): You can respond, if you want to. No. O.K. Now we are going to...

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH: That is very important. I want to know from the hon. Minister....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): I cannot compel the Minister. I have asked him.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH: As a protest against the non-committal reply of the Home Minister, we are staging a walk-out.

(At this stage several hon. Members left the Chamber.)

SHORT DURATION DISCUSSION ON THE STATEMENT REG. IRREGULARITIES AND FRAUDULENT TRANSACTIONS IN BANKS AND OTHER FINANCIAL INSTITUTIONS—Contd.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): I would like to begin by just taking advantage of your good nature and make one correction. What the Home Minister has said is that the BJP is not pro-Hindu; it is anti-Muslim and all their programmes are oriented that way. Let me not say they are pro-Hindu. They have nothing to say about the Hindus.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI JAGESH DESAI): Go ahead with the subject matter. *(Interruptions)*.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: There is no doubt in the mind of any one of this House, whether it is the Minister or the Opposition or any other Member, that there has been a scandal of gigantic proportions in which forgery, misrepresentation and a whole lot of other things have taken place. In view of the fact that there is already a CBI inquiry, in view of the fact that there is already a special court and in view of the fact that there is a Joint Parliamentary Committee which has been announced to be set up, I would rather not go into these questions of criminality of a particular Director or a particular bank. That is not the issue. The issue clearly is whether there has been a moral lapse or an administrative lapse at the very top. And if there has been, that could have been prevented by our reaction. I know the Finance Minister and I know his reputation. I cannot believe that willingly he would be part of any of these scams. He has a responsibility to answer to this House by way of presentation of documents, if necessary, that indeed whatever could be done humanly was done. And what needs to be categorically brought out is that when the matter was brought to the notice of the banks by the Deputy Governor of the Reserve Bank of India, as early as July, 1991, why is it that